

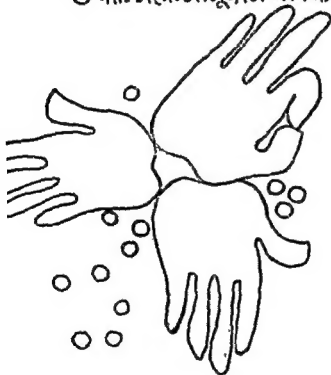
~~वात वेद (पौ)~~

(राजस्थानी महाणिया)

क कविता प्रकाशन, बीकानेर

वात वेदाणा

० सा. महो. जानूनाम भंक्कर्ता



© સાત્ત્વિક ગાનુસાન સંસ્કાર

સાત્ત્વિક ગાનુસાન સંસ્કાર

સંસ્કરણ, 1991

સંસ્કારક શ્રીમતી પ્રજ્ઞાન, ભેલગાદા, ધોળાપેર (ગાંધી)
સાપોતગાંધી વિજ્ઞાન ષાટ પ્રિન્સ સાહિત્ય, દિવસ 32

VAT VAIDANA (Short Stories)

By NANURAM SANSKARTA © R

निरख-परख

बड़ी खुशी की बात है कि राजस्थानी भाषा का स्याणा पुराणा बूढ़ा क्हाणीकार साहित्य महोपाध्याय श्री नानूराम सस्कर्ता की क़सो लिखी क्हाण्या की पोथी 'बात बदाणा' मिली। बाची बचाई, घणी घाछी दाय घाई। समाज बीवारी गुनाबी क्हाण्या का सरस-सुवादला, खट्ट मीठा सफ़ेद दाणा मन मुफीद रक्या-पक्या। भाषा साहित्य की बधोतरी दरसाव हरख उपज्यो। पोथी सरळ हेन मिमता साथै लोक भाषा रै ऊँठे महनब नै उजाले।

श्री सस्कर्ता जी सैइकडू क्हाण्या लिखी है। पण इण पोथी में पुराणा की, इतिहास की, राजनीति तथा मिनख समाज रै मुख दुख की क्हाण्या माडी ओपाई है। धम ईमान, सर्म बडो बलवान, भर भाघू ट, मजाबियो भाणस, मूळी की गूग सुहागरासो, गाव की तारली बात, गुरु-बैरागी, गांवावू इलाज, भल्ल मरले की चुघरे इत्याद क्हाण्यो-दाणा जोख लुभाणा भावै जचै, धरा पुराण भर कूड साव दो क्हाण्या सरगल सराबोर इधकै रग व्यग तण्यो है। श्री सस्कर्ता गाव में बसै, अणछूया सदम खोजै-लिखै। गावा की भीतरी समस्यावा का समाधान जालै-पिछार्यो। नीत-मुरजादा गीन प्रथावा तथा गाव मिनखार्यो रै मोलाकरण म पूरी आस्था प्रगटार्ये। वयू कै इणा रो लिखण्यो सदा मू गावावू रघो है, जको राजस्थानी लोक जीवण की सापडत सीबी उघाडण्यो चार्ये। शहरी

लोगा नै, बाहरी बखारण भावै नी भावै पण हीयै कमती समझ दूकै बैठै ।
 राजस्थान री निजू कहाणी परम्परा नै सस्कृती जी तो सागी ढब लिया
 बगै-ढोवै । गाँवा रा लू ठा हादसाँ हसै रीकै । वै कवै—“गाँवा नै जाण्या
 बिना शहरी लोगा री जीनवो कठै ?” इधै बात मे म्हारी जोख-परख
 सस्कृती जी नै घणैमान बधाई भरपै । बूढा रै लिखणै भोज् बरकत बधै-
 सयै, मालिक सू या ही चाबना करी जावै ।

(दिपावली-2043) जयपुर

सक्षमी कुमारी चूण्डावत

विगत

पञ्च परिच	9
मम वगै बलवान	13
लिछमी अर भूराजी	19
धरम इमान	23
गुरु जर बरागी	30
उट दाट	36
बूट माच	40
गाव री गारगी बात	45
मजाकियो दिनख	50
मदकमावू	57
भर भापूट	64
लक्कडबग्घो	70
सुहागरासो	76
भूळी री गूग	82
अग्नेजी अनुष्ठान	89
भल्ल भल्लै री चुघरै	94
धरा पुराण	101
गावाव इलाज	107

सारा विद्वाना बताया है कि लोक कदा रो ससू बड़ो उत्स भारतवर्ष है। कहानी रो मूळ तत्व विश्व साहित्य र पुराण ग्रंथ रिंगवेद री स्तुत्या र रूप म मिले। भाषा साहित्य र विन्यासिया, अग्नेजा अर दूजा-दूजा साहित्य किया इ याद लोग इयै कैगाट नै खरी करी मोहर छाप मानी है। बफो तो यो तय्य हो सिद्ध कर दियो कि ससार री लाक का'ण्या रो मूळ स्थान भारत है अर उबे काण्या बठै सूपछ सार चराचरत या खुलक मुलक म फैली है। उणा तो जावण रा सग रास्ना हो लिख बताया है।

इतिहास, रामायण, अथदान अर जातक कथाया रा अठै धेठ'र ढिग, ठळै गळै तथा खिड-प्यजे। गुणाघट री 'वृहत्कथा', पचतत्र एव हिनापदेग मे नीति शिक्षा आद मनोरंजन प्रधान का ण्या है, जका सू सार ससार मे कहानी मडार मरीज्या है। जूनी का'ण्या रो वेग-बहाव व्यजना प्रधान रूपका, रपात माण बारजा, चिलत चतराया तथा यानावरण री प्रधानता धरैर हवोळा मू उछळनी उफणतो बग्या है। भारत र साहित्य म कहानी रो अली (जीवत) उण्यारो भ्रम्वद रायमयभी जैडा असत्य लाक्षणिक सवादी, रिसि मुनिया, गुरु-विद्वाना र बलाण—ग्यास्यावा तथा गीता र प्रयचना म जोयो जा सक। पण यतमान कहानी रो रपातनायो हम्म उनीमवी दताणी सू सरु हुयो मानीज। उब म साध्य लिख्य समस्त पुराण साहित्य म अडी का ण्या मिली है, जिना म साहित्य री मोवळी मारी चाम बास'र चतराई रो अडूहो उजाग निर्वै चमक। इणी कहानी प्रका म राजस्थान रो योगदान स मू मिर रयो है, सो राजस्थानी भाषा र कहानीबारा अर पडणिवा प्रेमिया न भागरे प्रदेश री प्राचीन कथावा रा तागा-बाणा कदी भी मुनापा चाय। प्राचीन बातावरण र रूपा रा तार-नागा अर घटन री सपाई छिब तथा पाटा-पीठ नावमरी म गुणाय र कोई ना मजावा गमाया। दग बाठ म दग दीने, बाठ जार्ब। जुग प्रभाव चुड़ो। नूद कदा यमुवा वरना स्यायो, गुणा-मुनायो। पग बिना कदा परमारा अर बिना घण्णा री कहानी ना घमीटा मिसा।

अठ बग'नी कहानी अर मिमण री परमारा घनी जूनी है। कहानी मरु बरग रा बादग, अघूरी भी छाडग रा जामका तथा बरगन-बताग जग मबगन गगम घनी नुदया चार्ब। अंकुष बासर पाटन र मामन

वरण अर घटना र पग पौचो । हिन्दी कहाणी री पैल भलाई कोई, अगेजी अर बगला री गल्प सू मानो पण राजस्थानी कहाणी साहित्य तो आपरी मदीनी नै निजू गुरू सम्पदा है ।

कहाणी नै केई जणा आपणी नही, शॉट स्टोरी या गल्प माण लिखै गिणै । वै लिखार इणी दो ओपरा नावा रा लेखण व अनुवाद करता मावै नही पार्ट पोमावै अर पळे । कीरै सारै ? घर खीर साहित्य री कळी करै तो कर । भोडरी खुशी, साहित्य बघै, भलाई लिखो । दरसन जाग राजस्थानी रै कहाणी देवरै, सिध दवार दखै आग गल्प स्टोरी रै गळत बयण-काकरा डगळिया मे घूड फूस रळाय'र सदोनी कथावात कळी नै जडा मूळ सू जळा देवण रो भरम दम भरै । आज री मुडदी तालीम रै बोध मोयै जोर, आपनै साबित करणै खातर ठाळा बणाय'र सगलो जुग बोध ओढै । पुराणा प्रयोजना मायै गौजियै धात्यै ग्रामर ग्यान, रोमास भावना अर आगल भाषा-साहित्य सास्तर रै पग फेरै रेणका री रेत बणावता दीखै । एक मनोरंजन री प्रधानता रो प्राचीन चलणसार सिक्को काकड बघ, लडहर मद गद मध्यो खडयो है । संस्कृति माण, कारी-कुटको चेपा साधो करघा राखा । रयात जात, देश री घात, नीब नामून बण्यो रैव तो चोखो काम हवै । पग तो पूरा लागण दयै नही, कूड-कसर रो अमर हर बखत खिडावै बखेरै ।

धिग्यानी जाता, विरादरी रा नेम तथा बणावटी करम मरम रा बकाडिया जाय सै जणा समझै । धिगाडिया पच ना बणो, पळगोड तक-वाद री पढीक मायै ठाया मत फिरा । हाफेई नाई पूछ ससी । बघणबघो हरेक रो माण-साम, सै न टाबर ज्यू बपबपाई रीत ना टाळो । तीखा हो, निमळा नै बयू तडाछो ? अणमणिया पखेरया ज्यू उडणदघो सुख-सुख गिगण पय, पण या आप आणद सू मल्नाई रै मोटे रघ बंटा फूज निहारो उणा रो चढण गिनरय । पैलोढी पीढी आळा न गांदाबू इतिहासी रूप बणन रजै, कोई अणगढ टोळ मेसै, माटी गीत बजावै—सजाव तो सीमट बजरी र पडपच बयू रेत राग, गीत लगावो ? रैचणदघो सहरी वाजा अर सागा, गावणदघा गीत तथा भजन, साहित्या सुहणै सेता म तीखी गृहीत ।

णिया अगुवा नै लाघडा लघणदघो ! दुखी अर मन मरियोडा तथा कोरो
 मिनख नाव घरावणिया साथै बैठण-उठण रो मेल मिलाप करणदघो हम्मै
 तो ! भखावटै री कुदरती वेळा मे भरतै इमरत रा छेकडला दो च्यार
 गुटकिया लेवणा चावा । रोही रा महकता फूल पानडा, ज्होडा-सरावरा
 रै दूधियै जळ तथा दडाछट भाजत वेग वाय साथै म्हारी काय जिनडी नै
 बेयाग तिरती वगणदघो ! तिककडम, दरबजाळ तथा लूठाई जस नै जह
 भालेचालो, कुण खोस पालै ? पण कीरी फकीरी फाकामस्ती मौज नै
 प्रगतिवाद रै फरेव म क्यू कचोबो फमावो ? जावणदघो रसातळ मे कोई
 जावै तो थारो काई खावै ? क्यू 'हान चून राईमीरी लगावा ? बे तो
 ऊचा मठधारी हो—जठे लोक लाज, लोक धरम इत्याद पाप पुण्य ही नी
 पौंच सकै । कूड कथण, छळगारी नूत अर मदद सँजोग उच्छाव रा थोषा
 भरोसा रो भार म्हा मायै मत लावो । अनोखै चिमत्कार बिना काला
 भजणा अर सर खपाणो खारो आक लागै ।

पण लोक-चावणा ! मिनख री जलमजात सायण, आयण दिनगै
 नानी दादी अर दादी डोल्या सू सुणी गुणी आठू वाण एक स्यात नी छूटै ।
 फेर रै लाम लूटै टगग्या । 'चाह जठ राह, कलग्या उळकग्या । जकडि-
 योडा चढा-ऊतरा, हाफळा मारा । कोई वाचै ना बाचै, साचै विसवास
 तरळो करा । विद्वाना री तेज सुरसाई लखा तोखिया राखा । पण पाणा
 पध्या रा खोटा तुरा खुरा नी झाला । पोथी लेय र वणा सामै जास्या तो
 पतबो नी चास्या, अळगलै उर अरपण कर आस्या । चावै सो साख राख
 देखा—कहाणी खडियो सळियो वातो हू । सी, नैदै छपी अर घणी सारी
 लिखियोडी है । पर हम्मै हाथा जाडी री कार है, नूदै कहाणी म म्हारी
 सामी पढी हार है तथा मॅट भाव से दाडिम-अनार री आ 'वात वेदाणा'
 'मनवार है । इण मे गावा र सुख दुख री अनुमूल्या साहित्यामी चेस्टावा
 अर हेत मिमताळी सीख चेतणावा नै दिल खोल'र लिखी भाखी है ।
 जबान मीठापो कमती होसी, पण हिडद री ऊडी सवेदना सू सरगळ
 डम्बाडोळ है । प्यारा जी पाठक इण रै साचै मिनखायै रै दरसणा स प्रसण
 होमी तो निस्तै म्हारो कल्याण हो जासी ।

—लेखक

समै बडो बलवान

बटखाना कुल कीडा मकोडा ज्यू बघ्या अर अडभिडर आगीनै गया। पाप ऊपडया, झोड भपोड पसरघा अर मतवाला जादव दारू रै जोर आपसरी री राड मूं मरघा नोवडया। छेकड आत्म गिलाणी अर भरपूर उदासी रै सणक मणक सोपै अपवाद अबसाद री लाय भल्ला मे माटा मनवा ही तुरडीजग्या। राजा त्रिस्ण रया न कोई दाऊ 'द्वारिका डरी-मरी' अर जट्टजळाकार वणी-तणी खाऊं खाऊं करबा सागी। राण्या, कुल बटुवा समस्त लोनी अर आखी जीया जूण विसविला उठी। भाजता न्हासता कडूबा आप अपरा भेडा तग्या। सूर बीरा री सरणा सभाठी। सैसू लूठो उबारणिमो अर अलीकी मिनखपणो त्रिस्ण रा हा सो ही गया। हम्मै लाग़ा उणा र सागडद साथी अरजण नै बलायो अरबतायो के- 'दवा-राजमा री नया विदवै वन मिरी त्रिस्ण र रावळै री मिनखा बायरी विलखी अेकसी महिनावा छोळा रोळा सू नापती बिडावती कळप कुडै है।'

समदर रै पाणी रो हबोळो दूर सू फलता आवतो सुण्यो अर समरथ जन आप आपरो आवतो करणै डूक्या। उवै भोवै उदव रै बतावै मुजब घोर अरजण द्वारका आय र राजराण्या कुचराण्या नै सारो माल मत्ता समेत रथ बैल्या म बिठाय'र हथनापुर ले टुरघा। आग उवा नै सामी चोढी जातरा सारू बीहड वन भारगा म लुटेरा आभीर, जाट, माट इत्याद भोकळा तस्कर डाकुवा रा छोटा मोटा अणगिणत टोळा मिल्या। वै आखा, घोर-भादर अरजण रै जाडा बारकर फिरग्या अर उवैरे सरणारयो रथ-

घोड़ा तथा हाथ्या न घेरा परा ऊभ सड़ा हुआ । सगळा घन, आमूलण अर
 कुवराण्या वराण्या न हठ पैदल करणं खातर सोस ले जावण रो आपरो
 सदीनो कीतो बताया । अरजण न दकाल मारी अर दीवतं द्रिब क्या वे—
 “दळ रा सारा रथ घोडा हाथी, माल मत्ता साथी, अस्तर-सस्तर, गंगा-
 गा ना, होरा पना, वनक माणक, अमोलख सागवा-पीटा, गोडवा गलेचा,
 वचनभारी-लोटा, रेशमी तम्बू च-दीवा, मेवा मिष्ठान, तेल पलत वगैर
 यधका धन वभव आखो म्हाने मुळावो । पछ दीता तिणा घाल'र मुत्तिपा
 जणो हाथ जोड र म्हार सागें वगो आगे आघर म्हा आभोर जात मुनारें
 धुळपत सू प्राणदान मागताण, भाग जोग सू मिलजावें तो वा सासी आपरो
 प्यारोजी-जोर लिया तडी लगा जावो । नी तो अकड कर दयाला पाधरी,
 म्हारो यो सक्ड हकम हे ।” या बात सुणो, जद अरजण री जाम्यारा डारा
 लाल हुग्या । काळो खोखीनर साप सो सूमायो फुफाया । बोल्या—“अरे
 हुम्त नोगा आ काई जबान वाडो म्हारें सायें राज घराण री राण्या कुवराण्या
 है । पणथे मन जाणो बोनी दीसो ? आळखो तो सरी माडीव धारी अरजण
 हू , नठे इसी जबान काडी तो जीभ तालव ही नी नाडवें मू खीच'र वारें
 वाडइयूला । बोली दूजी बूक करी तो चौकाळा गिटा नाखूतो । हुम्में थारो
 जाण मूळियो आयोडा है । मूढा मीठा चावळा रें माफक धुळ्या गळमा
 लिया फिरोला ? जाणा कनी ? म्हारो ।” अरजण री बात वाटर बीचाल
 ही उवें सारा जणा हसीरा फुवारा सा छोटता बोल्या—“अरे ! तू अरजण
 है या थोपो घूल गरजण-जकारो हुम्में ठा लाग जासी । नही तो रथ तू हठे
 आघ र भटपट गऊ वणज्या अर साथ वाळी केसर वरणी, गज गहुणी,
 ऊजळदती मिजाजण दारावा, फूठरी फररी धीतालकी मुहागण्या सोन-
 घरगी डील धारणी, देवा री परीसी दीदारू रूप धारणी, चाद मुखडारी
 भलेरी जळे री चादणी फैलावणी, मुळक महक मानखा खेलावणी नख
 सगाया खून आवें अडी फूल जेडी कोमळ कायाळी मनोहारी माण माषवा
 पावणी अमी हलाहल रस सुजस लोमणा-नख सिख मिणगारा दव लदी,
 पुस्य वास सुगंध जिसडी घटकरी गुमानण मद भरी थारी कयी अत-
 पुरवासणी सुरमी कुळ बहुवा चवस मानेतण सोहणी राजकुवारिया
 इत्याद सग गौरवया म्हाने सटकैस सूप रजल्द मना जावा—नी दो ग्यारें,

नहीं ता खोपड़ी तोड़ दी जावैली तम्हारी तुरन्त ओपरी लाठया सू । ”

“अरे नालायक घाड़वी नरो ! म्हारें सामर्थं सू उलात्तर जाय'र वळो मरो । म्हारें सिर भळे क्यू पाप काळूठो चाढो ? हाय रे नीच बद-मासो ! जीवणं सू घापग्या लागो । जद ही तो अन सू आतरो घालो अर कने आयर म्हारें मू अढ'र चालो । मूढा खूडा रावण रा सा बणा देवूलो । मार्ये धारें कडालिया बाघ्योडा नी दीसैं, भळे ही सुल्ता खेलो हो ? मरो नाव पार्यं, हथनापुर रो अमीर-इन्द्रप्रस्थ रो घणी । आखी दुनिया साखी भरें । बापडा गेलें वगता विणजारा सार्या नैं ये सूट'र हिल्मोडा हवोला ? हरेक हथियार खसावण म ससार आधूतो ह । म्हारें गाढीव री गुण-गाथा सू ये ओजू अजाण हो, जक रा साण चढया तीखा वाण समस्त चराचर म अटाळ काळ-झाळ गिणी ज ! उर्वं सू तकडबध सूरवीर भूपत भादर लाया, जका रा धरण मार्यें सोटग्या बळी माथा । छाती ताई लोही भरौ सरिता मे झुलाया । दम रा हजारो भीष्म, करण, जैदरय सा करडा अडक अममानी नरेसा नैं म्हैं हराया सागी अरजण ह । हुकम था याही रो देवाळ लेवाळ, मप्रकारी जिनही नासणो कूर धनुरधर बाजू । अरे खरो कूकरो ! ये म्हारें सू परिघा आपरा'र डाको मारा । अरजण भले सताई—अघम माणसा । म्हारें सू क्यू कुबध कमावा ? अँ अत-पुर री गुणसोल ओरता जका रे सूरज दरसणा रो ही टोटो हो । सेग द्वारकाधीस क्रिमण रा धरम सख्या, बेटया तया वेटा-पोता अर कुटम्ब्या री बहुवा हँ । इणा रा सीळोत्र तवडा सभाव, देजोड ग्यान जान, दक्या-म्हा देव्या रो सरय पूज पुण्य नाव मासक सिरौ क्रिमण सरय घान-मुकान प्रचलित, जक न ये वन कुटिया कुजीव के जाणो ? कुरुक्षेत्र जुद्ध मे दण्ण साखी हाथा, जुग-जुग री रीत भुरजादावा भाग'र सत्रा री चतुरगणी-अट्टारं अखीणी पौत्र नैं परा पौडाई । म्हा पाण्डु पुत्रा रा आधमाप करमो अर गयो राज, पूठो दरायो । या सारो काम जगत पूज सिरौ क्रिमण रा ही पो । गळ्या रो रखाळो, करम जोग रो अवधू जोगी अख्यात्म आशीवाळ तया मरण आयोडां रो पर हिनकारी सालोणी अडो हँतो । उगी ग्यानी घ्यानी, स्याभिमागी सिरौ क्रिमण रो खडी घर लिहमी अर धरम बहता बटया, पाता अर बहु-बाधवा री बहुवा आद भेळो है । आज आखी भागहीणी

वणी पाँख कटी री भात अघ जग, सगवग नणा नीर बुबाव है। आपसरी
 री कटबड, राड भौड म दाहू पी पियर सारा जादव मरग्याजको सोक
 भूलगी, पण सिरी त्रिष्ण भगवान आणद घण, राजावा रो राजेस्वर, सता
 महता मन व्हालो, दव नरा रुखाता, आत्मग्यानी जीव, हम्मैं बैकुठवास
 रमण करण, घरण सू चरण चक अमरा सग ऊचो वा सिधा गयो। उवो
 दुख माड री धूणी ज्यू इया महिलावा रैं हिवडा म धुलैं सालैं है। क्यूके
 हण री रावती जगत जून रो अेक माटा मानखो विलीण हुग्यो। मरघट
 ज्यू मघरा, दाभती मी द्वारका, जिकोलडी मुजा पाय, मो भरघा परिजण
 अर बलदाऊ आष-यैं रो सो कठैई पत्तो बुडबुडो ही नीं चाल्यो। पण एक
 रात पूरैं कोप सू समदर वष आयो। परबत री चट्टाणा सी उर्वरी ऊची
 तरगा, उमडी अर पुरा-नगरा भड-नगरा रा गड कोट, महल भाळिषा,
 हाट-बाजर अर हर जीव जगम नैं मगम जोड सिपटाय'र अडड गडड
 भडड गाजती भाजती परळ मचावती परी वष रयी। 'गतस्य सोचन
 नास्ति धीती सो गई। पण म्हैं अरजण ओजू जीवू भसोक ? वै ही मुजा
 अर वो ही गाडीव, त्रिष्ण नी तो काई हवैं ? पाय तो सागी हूँ। अरे नीच
 तस्करो खरो ! म्हारै रास्तैं सू आपडा गिडो रिडो पिडो। म्हैं या जैडी
 छोटी जगळी जात-जून माष, हाथ उठाणो नी चावू। या नैं मारण री
 टक्कर नी, टीको लेणो है। जावो छोडू, खावो-नमावो, म्हार हाथ सू
 कुमौत क्यू मरी ?" घाडवी बाल्या—तू अरजण, खरजण कुई हवा-म्हानें
 काई मुतळब ? पण लाय रो पावणो क्या वण ? सिधा रैं घन किसो
 सनेसा भाळ ? अठैं आभीरजात सुता रो जनपद नेतर है। इंदर प्रस्य
 ह्यनापुर, द्वारका अर त्रिष्ण, मघरा री वरडी वाता अठैं जात्रक नी
 चालेली। गाडीव रैं रोव री जस्त नहीं। म्ह तो धारैं नसरी कैवा हाँ।
 रथ सू हठ आग्या म्हारै आगैं उबाण पगा होयर म्हारै साग, जको चाला
 अठैं रैं अघपत वनैं। उव ही घनै जीवणदान बबम सक। धार साम सारा
 रतन जवाहर, गणा गाभा, जुवान राण्या कुवराण्या कचन कामण्या, सा
 बी म्हान उव वस्तुवा समळादया। की मल बुर सार समरु है तो म्हारो
 गयो मान, नहीं तां अवार घडी आघ घडी म आभीर जातारा जत्पा,
 टाटिया रा छता सा चिमट चूय खाजावना। मोटा मोटा दुडगरा, टाड

तथा तक्कडबघ टाडूर, लटूर रा लेंटूर आवैला । बं आपरं घुतका, बरगा
 तडा खोटणा अर भाठा दगडा सू भोडका भान नाखैला । हाडका भिगर-
 भिगत कीचरडो काढ देवैला । पछ बात काई ताबै खावैली नही । धारै
 जीव री खैर चावै तो आखी माल मत्ता देयर हथनापुर द्वारिका जठे
 जवै, अठे सू सावत हाड गोडा लिया होळे सै कडज्या ।” अरजण रै
 भावगी वणगी करे ता सफा जोजरो काई करै ?

बोल्हो—“आ के आफन ! आफनाब मायै बादला रो घेरो ।
 आभीरा अर जात सुवना रा टिट्टी दळ उमडधा आ पौंच्या है । एको !
 एको ! गाढीव भलाओ । म्है अरजण कर्हें सगळा रा सिर छेदण ! पण
 ओह, भारी भो ! या काई बोतै ? हम्मैं ठा लागै, घामडी चरमरावै, चेतो
 वापरै है । गाढीव तो सभै ही नही ! पग घूज, हाथ कांपै ! इत्तो भार
 कया बघग्यो ? घनस भाण हैठ पडै । खैर ! नीच डाकुवो देखो—उवो
 रथ रणबास रो है, जव म घण मातण राण्या विराजै । राजवस री
 ऐन-कानून, उठी नै मत जावो । मारजा जावोला ! म्है छणा रो दस्तालो,
 नाई भालो ? या आखा न पोटा देवूसो । पण काळजै मे लाट जपडै ।
 मरीर छ महीणा रै तावलै रो सो सूनो, तिछाळा आवै । नास जुलगी
 साम बघग्यो जाणो रक्त रो पाणो वणग्या । डील निरजीव माटी रो
 ठिरडो जमग्यो । हूँणी रा पावडा है, चायै ऊँचला देव दाना सग, सस
 आख्या सू अरजण री निपुसकता निहारो । सिलाड मायै पसेवरा छाळिया
 खुलग्या, आया सू आसू चीमरा चालग्या । पाय आज जीवतो ही मरग्यो,
 लार ता ल्हास ऊबरी है, खामी खाड पडी है । हाथ रे ! अँ तो धक्का
 घूम करता तथा गळ गोता देंवता ले चाल्या बापडी अमीर लुगायड्या नै ।
 अरे नाई ! घोडी ता राजवस री आवरू राखा, मरद होय'र लुगाया मायै
 हाथ उठाया ! इया ओरता नै नही, मन गाळी घाल रले जावा । गुलामी
 री तरा धारा सारो हीडो टोकना जी सू जित्तै—जी सू बरता रै सू ।
 बदेई म्है दुरजोषण नै नौबर नी राट्यो, पण धारो सेवक वण र रेंवूला
 करणा वरो ! म्हारी नामवरी नै बन्नाम मत करो । आभीर इधकारया !
 पैसा मनै मार नावो, पछे म्हारे मितर सिरीजिस्ण री असाह-अभागी,
 मेवली ओरता रो घोसा-ठरडो पळा सकी । पण म्हारी आख्या फोडे बिना

धिगाने इया राण्या नै खच्या-नाण्या ले जावो, बाहु टूटग्या अर भाग फूटग्या म्हारा तो ! घरम-करम सग पियाळा जा घस्या पूग्या । बतावो तो कोई म्है हयनापुर जाय'र सिरी घमराज नै काई बता वूला ? बै पूछेला क्रिष्णरो रणवास कठ आवै ? जद म्है पाछो कंवूला ? भीम, नकुल, द्रौपदी, सुभद्रा, बंधु बाधव पुरवासी अर स्याणो लुगाया मेरी मैमा मान फूल वरसावण नै अडोवै है । हाय ! म्है हम्मै बठै कदमकाळ ही जावू नही ! जीवत जी म्हारो काळो मूढो कुण देखेला ? अभागो पाथ मरग्यो, पण मौत जोजू आतरै मूभी दीम । भीखम, द्रोण, अधिरथ सुवन से गया वैकुण्ठ वास, खाली म्है रयो पापी, या कुलखणो दिन देखण अर वस मायै कळक खादण खातर ! पर लाचारो म्हारी कान करो, जस भोम रा देवाळ सखा क्रिष्ण अर नमा खमा सिकारो ! यारी लाज आज म्हार मुरापै रळी गई गुजरी ! दुष्ट आभीरा रै इनाकै मे मेरो खत्रीपणो खतम हुग्यो । '

वन माहै लाय लागी हबड हसोळा म्हाळा उठी अर सारा जीव जठ, भो भरिया भाज छूटया । सूर विसूज्यो, परळ माची जर रावा-कूका होय ! हाय हुया ! क्या काय क्या—

दिन पळटया, दसा पळटी, पळटया हाय क बाण ।

काबा लूटी गापिका, बै अरजण बै बाण ॥

अेकर स लिछमी जी नें इयें पूजन ओसर माथें बाठ अर गरीबी रो देवी भूवाजी (भूख दावरी) जा टकरधा । उवा भूवाजी नें चिडावन रो साची । बोल्या “भूवाजी काई भुवाळी खावता डालो ? या सू तो दीन-दुबला का डरें नी । वै ता अया ही दिवाळी रा माल अूडावें । कीतू ही जुधारा पुधारा करो, भला ही भाव भडावो, पण धार वै कदाच सिर नी नवावें । म्हारा तो घनवत म्हा सू सागीडा राजी है—कोड करें गुण गावें । यें ता दूबळा माथें कोरो दळदर लिडावो ।”

भूवाजी डोळा काड र बडबया । नी नाहर वारें चीत्ता वण'र गडबया । बोल्या “म्हें तो कैया रा गोडा टिका दिया । धारला बडा बडा भाग्या, स्याणा अर दानवीरा न म्हें घणी धार भीख मगाय'र छोडी है । केइ जीव रामार्या मरग्या है ।”

लिछमी जी बोल्या—“तो काई भलो काज करघो ? आज रा लाग घामें रडकारी गाल्या ठाकें । थाडा म्हारा ही अुछव पूजन जोषो चाला आगलें नगर म चाला ।’ इत्तो कैय र दोनू जण्या आपी न वहीर हुई अर नगर सठ रें दूकी । सेठ लिछमी जी पधारण रो अडोक मे पाठ पूजा कर रया हा । दोनू दब्या न हवेली रो पेड्या चढता दख'र खुसी हुयो, साभेळें चात्या । अरोसा बघ्यो हाय जोडया अर दडवत प्रणाम करघो । पण धायर चरणामन ली'हो । लिछमीजी रो रूप जाणर कयो, “दोनू देया जाज नलाही म्हा धरा पधारिया । वारणा सेवू बारम्बार धोक देवू ।’

बाणियें न सटका करतो जोय'र लिछमी जी न डव ॥ अेक तमासो करण रो बात सूभी, अूबळी । पण भोळी भूवा कोतक नी समझी । लिछमी जी बाल्या —‘सेठ! म्हें दोनू देया धारी पूजा सू प्रसण होय र गनै बगती हवली आई हा । हम्मैं अठ जम'र रैस्या अर मोकळा साम फळ देन्या । पण सेठ पैसा म्हारळा राडो मिटा । ठीकसर सुणले, क्या नेंण जो म्हारे सामें आई है केव— वळ बुद्धि अर आवरू मे म्हें मोटी हू, तपा म्हें नूद ववू म्हें मोटी हू । पण म्हा दोनूवा म बडी कुणसी है ? जकी मही बात धनै बताणी पडसी ।

सेठ-जीव म जाण्यो के हमकें कुराणी हुई । पण अपुरला दात दिखाय'र बोल्या “कल्याणी! धारो यो भोड तो मिनटा म सलटा मिटा देसू, पण

आप म्हारें घरा ओपो ! येँ मला घरा री घीरा-देव्या दीखा । गैण गामे
 अर वेस वानेँ एक रग हो ! म्हारा ही भाग अूषडम्या । हम्मैँ एकर विराजोँ
 लिछमी जी बोल्या—“म्हारा यो फिसाँ या पैना निबटावो जणा
 बैठा ।” सेठ सुण र मन मन मे तो घणो धवडायो । पण अूपरता मना सू
 तुरत तयार होय'र अेक अुपाव काढयो ।

बोल्यो—“भगवत्या ! ये दोनू एक्'र म्हारें सू अळगा पाच च्यार
 पावडा चाल'र जावो अर बया ही बराबर चाल'र पाछा म्हार सामेँ
 जावो । म्हैँ घारी ज्ञान जोवूला अर छोटी बडी फूठरी चाल भेद री जाच
 सू साचेतो नतीजो दवूला ।” लिछमी जी अर भूवा जी (अणहूँत कगाली
 री अधिस्थानी) दोनू खन खन बराबर खडी हुई अर वणिक पूत सू चाल
 बहीर होण री इया न अडीकबा लागी । सेठ—‘अे अे अे ! जे ।।’ करर
 ज्ञान दुरण रो कैया । दोनू देव्या अेक बरोबर मोर रा सा पजा पगला
 मेलती सुहणी चाल, चाल दी । थोडी दूर अळग ताई पौच्या, तार सू सठ
 हैलो कियो ।

बोल्यो—“देव्या ! अैया ही सागी चाल दोनू पाछी मुड'र चालती
 जावो, म्हैँ देख रयो हूँ ।” सेठ रैँ हेल सागैँ लिछमी जी अर भूवाजी फूठरा
 पाळा-पाछा फुर'र चाल दिया । सेठ दोनार री चाल देखी अर मुळक्या ।
 लिछमी जी री पूजा लगन सू निर्णायक वणग्यो । भूवा न आगीवाल बालता
 गोल र ठीक तरा पिछाणा करग्यो । जाणग्यो—“अैँ तो अवस लिछमी जी
 है अर साथेँ इया रैँ विरोध भ भूवाजी होवणा चायें सा इणी भात सम्मान
 रो अुघळो देवणो पख मे पडसी ।”

लिछमी जी रैँ बालण सू पैली सागी सुर मेठ बोल पडयो अर बात नैँ
 मिठास री जुगती सू मठोर-गाटर क्यो—“दे-याजी ! बया तो या दोनुवा
 री चाल चोखी-अनोखी है अर उयें सारू ही ये दोनूग्यान गुणा बाजीदी
 हौ । पण, आप (लिछमी जी नैँ) भगवती जी घरा आवता आछा ओपो
 अर अैँ (भूवाजी नैँ) देवी जी घर सू पाछा जावता चोखा अूषड । बिया
 चाल-डाल, रूप रग या दोनुवा रो बरोबर है ।”

पण चालता वखत अेक घर मे वढता आछा लाग अर दूजा घर, सू
 मढता चोखा लागैँ । (लिछमी आई मली मूख गई मली) ओ अतरा

जल्द से है। बाकी ता दानू भय भवानी दिखाव ओप हो।" लिखमी
 जी सेठ री चतुराई नै समझेर मन मन मे हो गुण गुणाय "वाणियो वाण
 न बीसर, जे मुरगापत ताय। माहव स समो करे, (ना) टक्को पइसा
 पाय। दोना र भाळ डर भो म गरा गोता खाय'र आछा फैसलो सुणाय
 है।' सेठ री जवान-जुगती अर बूढी पूजा मू लिछमी जी तुष्ठभाण हूपा
 अर साहूबार भवै रा रुख बाज्या। ओजू हो भणी गुणी जात यही जे अर
 वाणिय री पीढी री माल नी आकीजै। पुरानी परम्परा मू महाजना री
 दला-दली आर्ग सौम म दिवाली री रात लिछमी जी पूजीजै। हे देवाळ
 माता। मुख भवन री धिराणी दाता। मीठी जवान जुगती बक्स'र सग
 लागी न साचा पूत बनावजो।

घरम ईमान

— १५ —

मुगलिमा बळी घबहत, देस राजधानी री बात, एक बादल्या री वेटी सहनाई नाई सुप्यार जवान सरबजाण, अणी गुणी अर नाच गाण कळा-शुसळ हुती। उवा दयावाण, दातार अर प्रेमी सुभाव री स्या जावी ही। आपरें बापर आत्म तूठ रगोल देस राज्य भार्य आछो सासण करती अर वडी बेगम रें नाच सू जाणीजती। बादल्या उवें राजकुमारी न दूजी भीलाद सू अलदा साही मोहर छापण राहो इघकार दे राख्यो।

नाच अर गाण आदमी री जलम जात जाण पिछाण, किन्नर-गंधर्वा री ईवत कळा, राग रंगरी बिरिया आवें सग देखणिया मुणनिया रा हिया डोल जावें। जद कदे मैफिल जमै, नसो छा जावें नाच गाण रें सभा मडपा रो सिणगार, सफाई छिडकाव, फूलमाळावा, इत्त-अगरवत्या, चास-प्रकास, गलेचा भीडवा सू खूबसूरत हव। जद इयें कौसळ रा रीभाळू जीव इत्ता उदात्त भातरा छूमन्तर चतर वण जाव के देखत फूटराप अर गाव-णिया बजावणियों नें मन घन हो नही, आपरी जिनडीसाई नें नोछावर कर देव।

बेगम दाखार दाखू भू त्रिपत रती। उवा आपरी जाणकारी भू वध-की सोमरम वणवामा करती। उव मं गुलाब, अगूर अर मेवा मिळान ही रळाया जाता। बेगम रात विरात राग रंग रें समै कदे वद विदकती आख्या इत्तो घणो रस चोस लेंवती, जक सू उवरी पीडपा धरक जाया करती। अडे मौन दासी-बादी, सख्या साथण्या निवता हाया बादा निर-दाल डोल नें पिलग नाख पोढावती घकी वो प्रेम-नसो पार धालती।

फडकती मुजाबा, गळबढे दोलढी तग तरवार सडकडू सिफाई सवार, नौकर चाकर, अनुचर अर मनो-मुमाहिब, समूह रूप उबै साथ हुता। दरवारी उमरावा सू इयै राजकुमार री शान शोक्त चढी रंगत लागतो ही। राजकुमार छतरसिध सहनाईरी सुवारी आवता जोई अर मारग सू सो पावडा उलात्तर घाढे सू उतर'र सडक रै एक पाखै खडगा हुमा। उबै धनियाणो री नई आई सुवारी नै झुकर मुजरो करजो। कासीद जै बोली तथा सचिव स्या जादी नै राजकुमार वगणरी सूचना सुणाई। वेगम आपरी सुवारी पाडी रोकी, पछ एक हीरा-पना जडी डबडी मे पान रो बीडो भेज्यो तथा राजकुमार नै कवाड्या के—“म्हारी सुवारी साथै चालै अर मोक्खो सोभता आणद वखेर वधारै।”

सुवारी—टुर चाली। शामखोर कुवर छतरसिध सामण मुड सनाम कियो, मोठ माण पान रो बीडो लियो अर अपूठो चाल'र धोडा अळगो खडो व्हियो। भिस्तीडा सुवारी सू भोत आग सडक माथै पाणीरो पूरसळ छिडकाव करता जावा। सईकडा वादी हाथा नागी तरवारा भळकावती, भीट भचीडा खावसीदबी वग ही। उणार काधी तीर कबाण कस्या हुता तथा सग छाती काड्या, सोस खीच्या, उमाव भरी चाल सू मूचाळवेग भाजी राजी जा रयी। पालकी रै बीगडदै चालता अगरोखै मूडाळा खोजा सानै चादी री मूठ पकड्या अकड्या चवर मोरछळ ढुंढावै हा। दास खाम हाथा मे सोनै चादीरा मुगदर डड लिया पर हटो। परै हटो। रा नारा लगावता आग चाल रया हा। अणीमीत री दासी वादी सान री प्याल्या म जळती मुगध लिया वग ही। वेगम म्हामगेज मे बावळी हुई सोचेढी साचो निसाणो मूलगी, जकोवापडो इसार आयो स्या जादो मिकार, मायो माडया साथो किर्या बिना बतळायो आपरी फोज सू सज्या सवरयो घोडे चढयो हकारै आस चालै हो। वो दूर देस रो अमीर ध्याहण रा मूखो नौकर हो, पण साही राज भरियादा कायदै सू सूको लूखा हो।

पौचर्ण री खबर महलायता र दरोगै न पौच चुकी। उयै आछी चळ-पळ सू बुहारा भाडो अर छिडकाव करा दियो। महलायत र जक भाग मे वेगम री ताक तसरीफ होणी, उवो भवन चोखीतरा सजियोडो हो। दीवारा म रगील पञ्चीकारी, पूरा लामा सीसा, कोरीज्योडी छन अर

वेगम दरबार जावनी आवती तद घण ठाट गट सू बार निमरती । बा आपर साथे मोक्का हाजरिया मिनस लेय'र टुरती । उफाला, सिफाही घुटसवार, खाजा अर बासीद आन् आन्म्या रै हनमाण सू हालती । निजी हीजडा 'जो उवे रै च्यारू मेरी टाळ वणाया रता हर किणी नै सामण आवती देख र धक्का दे नासता तथा दक्काळ रै अपमाण सू जेक पासै ऊभा बर निया करता । वै 'पर हटो । परहटा' रा तारा तगावता चासता इणो भान सहनाई आवती अर मारग बगनिया गैला छाड दिया करता ।

राज पय भीड लथपथ । कीडो नाळ, राज उमराय मिन्घारी जगत जावा हाट-वाजारी सैल सपाटा मार चाल्या । इणा अमीरा रा बणाव मिणगार ही सरावण जाग, हरेक साथे पाब इस, दम बीस हाळी बाळदो, भोगळिया अर भादर मिनस भाज्या बग हा । घोडा, बग्घी वैल्या साथे उवै मौकीत सिरदार पान विगळता चासता मटकरी नळी सू धूवा गिटा । चादी मडया चमडा हाका, बग्घ्या घोडा रै बरोबर दोहा मिनस हाथा लिमा घूट खेचावण खातर उणा नै लफा फफा । पानदान, इत्रदान, उगाल-दान, क्माल गमछा ही उणारा आपरा मारा मारा आदमी सार लिमा चाला । अस्तर सस्तर, गाजा बाजा अर खाजा माटा ही सागैहा, पण आज सग अमीरजाश मस्तीराह बगता अचाणचका ही चमक ऊछळ्या । ज्य ही स्या जादीरी पालकी जावती दीसी, तुरत सगळा उफाळा होयर निजू टोळा नू सडक र एक पसवाडै घणमाण न हाथ जोड जा ऊभा 'सामै मूढा उबा राब उमरावा सिर भुकायर तीन बिरिया सलाम करी, जकारी नामावळी निजू सचिव सहनाई न पालकी मे अरज रूप पेश कर दी'ही ।

वेगम आज किणी सिकार साथे अबूक निसाणा मारण बगी, बळी जारयी । पर उबरो निसाणा खाज्योडी सिकार सू परवारकर दूजी सिकार करण म चलायमान हुग्यो । वन बगीच रै महलायत मारग म आपरै राजरो तावदार, एक घुडसवार जोहददार तथा रिसालिया राजकुमार टकरग्यो । राजकुमार वडोनेक मिजाज, खानदानी घराणरो राजस्थानी रहीस हो । सो पालकीरा जवाहरात जडया पडदारी छोट सू जोयो । वरस तेईसा चोईसा नैडो, कवळ झील दूध गिल्लोडै दाई, गाळमाळ गामरू जुवान, मुरडीजती मूछा देखवा जोयो दीस्थो । घोळा गाभा वाळानण,

फडकती मुजावा, गळबडें दोलडी सेग तरवार सेंडकडू सिफाई सवार, नोवर-चाकर, अनुवर अर मजो-मुसाहिब, समूह रूप उब साथें हुता। दरवारी उमरावा सू इयें राजकुमार री शान शोबत चढी रेंगत लागती ही। राजकुमार छतरसिंघ सहनाइरी सुवारी आवता जोई अर मारग सू सो पावडा उलात्तर घोडें सू उतर र सडक रें एक पाख खट्या हुग्यो। उब घणिपाणी री नड आई सुवारी नें भुकर मुजरो करजो। वासोद जें वोली तथा सचिव स्या जादी न राजकुमार घमणरी सूचना सुणाई। वेगम आपरी सुवारी घोडी रोकी, पछ एव हीरा पना जडी डवडी म पान रो बीडो नेज्यो तथा राजकुमार नें कवाडयो के—“म्हारी सुवारी साथें चाल अर मोवळो सोभतो आणद वखेर-वघारें।”

सुवारी—टूर चाली। शामखोर कुवर छतरसिंघ सामणें मुड सलाम कियो, मोटें माण पान रो बीडो लियो अर अपूठो चाल'र घोडो अळगो खडो हिग्यो। भिस्तीडा सुवारी सू भोत आग मडक माथें पाणीरो पुरसळ छिडकाव करता जावा। सईकडा बादी हाथा नागी तरवारा भळकावती, भीट भक्तीडा खावसीदबी वग ही। उणार काधी तीर-कबाण कस्या हुता तथा सग छानी काड्या, सोस खीच्या, उमाव भरी चान सू भूवाळवेग भाजी राजी जा रयी। पालकी र चौगडद चालता अररोखें मूढाळा खोगा सान बादी री मूठ पकड्या अकड्या खवर-भोरछळ दुळ्यावें हा। दास खाम हाथा मे सोनै बादीरा मुगदर डड लिया पर हटो। परें हटो। रा नारा सगावता आग चाल रया हा। अणीमीत री दामी बादी सोनै री प्याल्या मे जळती सुगध लिया वग ही। वेगम म्हाभगेज मे बावळी हुई सोचेडी साचो निसाणो मूलगी, जकोवापडो इसारें आयो स्या जादो सिकार, मायो माड्या साचो क्रियां बिना बतळायो आपरी फोज मू सज्या सवरयो घोडें चढयो हकारें आस चालें हो। वो दूर देस रो अमीर व्पाहण रो भूखो नोकर हो पण साही राज भरियादा कायदें सू सूको सूखो हो।

पोचणें री खबर महलायता रें दरोगें न पोच चुको। उबें आछी चळ पंळ सू बुहारा म्हाडो अर छिडकाव करा दियो। महलायत रें जक भाग मे वेगम री ताक तसरीफ होणी, उबो भवन चोखीतरा सजियोडो हो। दीवारा मे रयील वच्चीकारी, पूरा सामा सीसा, कोरीज्योडी छन अर

सुहण भाठें रा फरस, ऊपर रेसमी गलेचा विछेडा हा। हाथो दात र काम सूणा पूरा ठाढो चढणियो पिलग, ऊ चो काटवा चन्नी तण्यो चढ्यो ओप हो तथा खरें मोल्या री भररिया मुरे—हीडें ही। पिलग भायें मत मनो गिदरो, नोसक तकिया अर मसनद ऊघा। चारू मेरी घोव्या सारू इन, पुस्वा अर सस भातरें सिणगार री मतबेली घोजा मेली पढी। वगम पूगी अर भीठी महक सुमोहीभूनी मसनद भाथ लिटती-सी गुडगी।

बिमूणी पाडी सेण रें वाद उवा आपर खास दास नें आदेस दियो के — 'वो राजपूत सिरदार जको सुवारी सावें म्हात्रलाया आयो है, म्हारें जठें ऊंरणें लाई आपरो सरबरा चौकीदारा राखें तथा अमीर खान पहर वास्त कान बाढ वो महलायत बारली घरमसाळा म आपारा सिपाइडा समेत जा जमे। जरेद इतजाम कराया जाव।"

सचिव बोल्या—'जो हुकम वेगम साहियान।"

स्या जादी री दातडो हुकम सारें अमलें मे फिरा दियो अर दोनुवा उमरावा नें आप री जगासर तबदील-तैनात कर दिया।

रात, चादणी घणघार दूधिया होवती जावें ही। सहनाइ छाकरिया-बाधिया रें हाथा दाखा री दाखू चास चाद रयो। उवें जोस राजकुमार छतरसिध री सूरत बी भायें मरु खळमळी मचावें ही। पण ब्याह जोग बात दारी अर माडी पडें ही। जेडा अेक मही, अनेक राजा स्या जादा, सनाई ताम बादस्या जाण जमीताई जुळर सलाम मुजरा कर तो बादस्या बद चावें के आप सू हेठ घराण स्या जादी ब्याह दी जाव। इसडें साख सू म्हात्र घराणे री आवरू तो घट। पण प्रीत रें घाव भायें भेद भाव री मनहम पाटीनी बंधी। स्या जादी जादा छतरसिध नें चावें जकी बात दसर मनसबदार सू छानी नी हें। उवो पाछो आवर सनाई न कवें—'हम्मैं तो बादो (बायदो) पूरो होवणो चायें'।

स्या जादी उषळो दवें—'अैं आखी वाता पुराणी व्हेगी। स्या जादी री ब्याह सादी जर्हापना जावक मना कर दी ही है।

मनसबदार सा—'पण वगम माहिवा। यौ तो सत्तनत हुकूमत घिराणी हो? बादस्या बात हरगज अटका नी सक।"

स्या जादी रीस रोस जबाब दियो—“जावो । जावो । हम्मै बाछो यो ही है—बोला बोला आप री तैनाती नौकरी बजावो ।” खा सून मन उठ चाल्यो ।

बोल्यो—“हजूर स्या जादी रो हुकम ।” सैनाई फूला रा गुच्छा ऊबा चछाळ चछाळ घोड़ी ताळ खेलती रयी । पछे दासी नै बने बलाणें खातर घाप सू गिदरोवजायो । उवा अगूरी सराब रें भीर्ण नस मे रगरळी ढळी, बलमस्त, मसनद मायें लिटती-मुडकती सी गिलरा करे ही । मौजियो खाजो अर बादी दोनू विसवासी माणस खिदमत मे खडा । ढळती रात, मैक्तीबात, चारा कानी देख'र बाली—“उवा राजकुवर पहरें मायें हुसियार खडो हवैला ? देसा-बुसावो ।”

“जी हुकम खुदाबद ।” मौजियो बोल्यो ।

स्या जादी कयो—“जरद हाजिर करा, म्हैं उवें माय म्हारी मैहरवानगी बरसावणी चावू ।” बेगम उठी, उवासी खाई । मौजियो बला रयायो, बादी नै डाट र काठी ।

छतरसिध भवन मे पग धरघो अर छुल्लतारू मुजरो बरघो । बेगम कही निजर सू मौजियें न तावयो, भोछाक्यो बो बापडो बार जापडयो थाक्यो । सफा एक्लवाणें सभे बेगम विलग कानें इसारा करती बोली—“मालिक री मैहर आराम करो ।”

मौजवान राजकुवार एक दम हाक्यो दाक्यो अर ठग्यो । सो रैग्या । बो बोल्यो “स्या जादी चोखो यो ही है, मन बेग म्हारी नौकरी पाळण री हुकम बकसाया जावै ।

उवा बोली—“म्हारें हिडद रा देवता । या काई बोल रया हो ? इयें उयळ स म्हारो जी दोरा पण घणोहवें ।” उवें मघरी मुळक मुल्लडो चठामो अर छतरसिध नै मीठें सुरा भळे परचायो ।

“आज आपा राजी रजा एक दिल हो जावा अर इयें सुहणी रग भरि रात रा आणद-मजा मनाव । म्हारें मन रा प्यारा बालम राजा, मन अवेळ री बिलकुल ना उम्मीद है, चारी हां, री पूरी हामल चावू ।”

छतरसिह ठीठ स् कुठोड नी हुयो । स्या जादी री दारू छकी हरामो आरूया ओज बाढी चढी, पण रोस मार'र बाली—“दिल भरिया

मालिक । म्हा ऊ चा बगल बैठ नै डील वधापै मदद बकसो ।”

दूर खड़े छतरसिंह कयो—“खुदारो खोफ राखू । खेद है म्हे जडो गवार कार कदी नी कर सकू । बाळक मत नी, लाक पाळक बाजू । राज काज परोटणिमो हू ।”

“राजान कानान आछा कुण कवै ?” उवा बोली ।

“एण म्हारै घरम ईमान मे भगवान र घरा जेडा काम ववरम अर बेईमान गिणीजै ।” राजकुवर कया ।

उवा बोली—“राजो रजा कोई काम अघरम अथवा कुकाम नही, म्हारै मत री सरजो है । काम सारणो बेईमानी नही, ईमानी अरजो है ।”

छतरसिंह बताया—“म्हैं एक जूजळ घरम रो राजपूत अर साधारण जमी जायदाद रो भोगतो । बेगम स्या जादी रै माटै चरित कायदै न कैया हाथ घाल सकू ? ठग डाकू नही प्रजा प्यारो रक्षक सिरदार हू ।”

उवा बोली—“तो हम पद हम ऊमर, ये म्हारी इग्यानै इकार कर रया हो ।”

छतरसिंह—“हाथ जोड नै माफी मागू, मन जठै सू पाछा जावण रा दूजो हीलो सभलवो ।”

उवा भळे बोली—“म्हारै नैणा रा बासी । आज री बहार सूनी जा रही है, थोडो सुणो गुणो । म्हैं मिनस जूण रै अंतस सू धानै अरपीजू । डर-भो, सो कूडो पड जासी, मन भरिया । मागोला बाही जिनस धारी हवैला, देस परगना तकात ।”

छतरसिंह कया—“देवण रो बादो इरादो हवै ।”

वा चट बोली—“मजूर है ।”

‘तो मनै जल्ती बार जावणै री इज्जत बकसी जाव, म्हारी चावना है । भळे इसो मूडो पाठ निराठ काठ पील, कस बस धारै दिल मे ही राखग्यो ।” कुवर कयो ।

उवा बोली—“या म्हारी जिद नही, उजडती प्रेम दुनिया है वसापो करो ।”

उवो बोल्या—“घार मजहब रै मनसबदार बुखारे बाळै खा नै सूपो ।”

उवा बोली—“अपेहा ! समझो वहम, पण म्हें तो ऊजळें दिल सू चावू प्यारा, खाली घारी मुहब्बत ! जद सू म्है यारो धोडें चडिचो रसील रूप रोशन दान दरार दे-यो है, उणी वखत सू या मोवणी सूरत म्हारें मनड आवसी है ! आपो भून्योडो बावळी वणी जा रचो हू । एक पिलग री रट्टी मिळी खुमी री गायक हू । सदीव बुलाया, चट्टो मिल्यो । सग भेंट उपहार पाछा मोडजा पण आज डाव आयो है । ओ एकांत वखतवास हाथ है, ऊपर आवा, पान चवावो, अग मिलाय र आग बुझावो । ’

कुवर बयो—“श्रीमती वेगम साहिबा, आपरा बावळवडा हम्मैं मनै सफा नी सुबावैं, अणसुण्या करतो जावणो पडैं ।” भूख भूजी सिघणी ज्यू सेनाई राज नाज जोर, गाज उठी ।

बोली—“अरे ! म्हलीण नौकर, यारी या हिम्मत ! म्हारी प्रेम बीण तीनै य के जाणी ? म्हार कोप री ज्वाळा सू कुण उबर सकैलो ?” पण राजपूत रैं धरम ईमान री प्रतग्या माथै वेगम री गादड बभकी रो कुई असर नी पडघो ! उथळा ही नी दियो ! उव तो स्या जादी नै सिर नवायर अभिवादन कियो अर छटाखट बार बड आयो । वेगम चिडियाडी बलपती कुडती बाघणी ज्यू पग पटकती दहाडती गुरावती जा गीडवै गुडी । गामरू कुवर फासी सू बडिघाडैं खरयासिय दाई मुकळतो कुळकतो कूदतो-उछळना देख्यो तनाती ओह्दैं तेतीमा, भळे मुड र पाछो ही नी झकयो ! नाजरिया ना ममझ की नी समझया ।

गुरु अर वैरागी

भारत रँ इतिहास मे प'दरवी सतान्नी रो समे पाप-पुण्य मिल्यो, मिस्सा धरम ग्यान बतावणे याळो वरतारो हो । मुसळमानी पारा, दारा सासन, कट्टर करडा इधकार चालता । सग रजवाडा एक दूर्जे सू वैर भाव पुरो पाळता अर आप आपरँ दुसमणा तथा दुरवल जणा वगरा देस रा लोणा माथे लूट मार, आगजळी जिसडा पीडित बोधार करपा करता हा । ऊपर सू धरम बदळणे रो बादसाही धमकी रँ भो सू छुडावणियो कोई नैडा नी दूकतो । तद देस रा मिनख मारकाट अर मदिरा पीवण मे घणखरा जण सध बघाया । धरम ग्यान तथा सिझ्या ब'दण जिमा सग नित-नेम बोधार, बमचार इरयाचार अर बलात्कार कानी मुडग्या । जँडे तूफान अघड रँ बखत मे सगत-ग्यान री वरसा-आसा हुई अर माघा सता तथा कव्या-शुण्या री सीख नसीहत आभ आई । धूणी धरम मारग माथे ग्यान उपदेस रा व्हाळा खाला खळक-रळक चाल बहीर हुया । साध धरम तथा मोटै मिनखापाळा सम्प्रदाय ठाला पण जागा जागा धरपीजणे लाग्या । साधारण लोकी नही, स्याणा पुखता, पढ्या लिख्या अर मालदार मिनख ही साधा-सता री अलोकी सीख रँ साध लुळ भुकग्या । उव टेम अंक ईश्वर उपा-सणा ही बा रो पैलडा अळवाडो उहेस्य हो ।

इयँ बखत आख देस मे नूवा नूवा धरम, सम्प्रदाय एव जात समाजा-री बीछाड वापरी ओसरी । कबीर पथी, दादू पथी, राम सनहो विसनोई जसनाथी अर सिक्ख इत्याद अनेकू सजीदवा समाज आग आया । सम साख भारत री भोम माथ सता महता, भोक्ळा लोणा न भगती र गैले

घाल्या तथा जात सम्प्रदाय वधारधा । अघरम सू घापेडी लोका सत-सूरमा
 नै जोवती-टोवती, धिरती गिरती पढती सी ऋट आ, भलै लामी तथा साचै
 गुरुवारै सरणै जोग आखी दुनिया जजमगी ।

सिक्ख घरम री नीव गुरु नानक नाव रै अेक अलोकी साध पुरख
 लगाई । सत जमारो, साहित सूरार्प री इमी भारो, मुछ्छा मना म जीवन
 री सचार हुय गयो । डील धार-धर, माब पधारधा, अध डूबत जग सता
 तारधा । त्याग-तप, राग-वराग अर लोक हितकारीभाव ना री अेक सबलो
 सगठण वणग्यो । गुरु औनारी, घरम प्राण, अतस रै अणभ ग्यान गिरय
 सा'ब री रक्षणा करी तथा भगत सिरोमणी बाज्या । ईस्वर रै अस्तित्व अर
 मीमारी गैहराई ताई पौंच'र आठू पहर गुण गाण, एका'त ध्यान म बिताई।
 उणा री आत्मा मे ओतार असो उजास प्रगटघो जको सीख उपदेसा सू
 साधारण जनता ताई जा पौंच्यो । देम विदेसा मे ग्यान गरिमा फँली अर
 गुरु नानक देव घूम फिर र बिना भेद भाव र साचोट री च्यानणो दिखामो
 पछ गुरु गादी परम्परा चाली अर सिक्ख समाज सूर-वीरता सून नाव
 कमायो ।

गुरुवा री पीढी मे दूजा गुरु अगद अर डोर सिखला सून अमरदास
 रामदास, अरजुणदेव, हरगोविंद, हरिराम, हरिकिसन, तेगभादर इत्याद
 गुरुगण, उपदेम भजना रै द्वार, ससारी सुखा सून अलग ईश्वर भगती मे
 लाग्या रघा । साथै पीडिता री सायता, गरीबा री मदद अर घरमी धान-
 मुकान वणाणा पढायो । पण मुगल बादसावा रै मना म इणा र ठास
 सुकारजा रा खबरी बाण सूठ ज्यू खुभता रया । उवा घणो विरिया गुरुवा
 तथा उणा रै सेवक सिक्खा नै जेळ म राख्या, अूभी चाकी पिसाई ? माथै
 तातो चेप्यो-नाख्यो तथा नस काट काट र घणा री जिनडी गमाई । छेकड
 बादस्या ओरगजेग, छेकडलै गुरुगोविंद सिंघ रै दो बाळका नै घरम न
 घदळनै वेगी जीता जी, गठ री भीता (दीवार) मे धिणवा दिया । जद
 गुरु गोविंद सिंघ, बेटा रै बलिदान, मुसलमाना रै इ'याब अर उवै वखत
 रै डील ढाल सिक्ख सम्प्रदाय सून घणा दुखी होय'र जमाने रै तपसी सत
 माधोदास रै साहरै जा डूक्या । क्यू नै उवै दिना देस मे माधोदास री
 चमत्कारी सबनी-भगती डाढी धढी वधी ही । वै वीरात्मा सत, गोदावरी

तट कुटिमा वास करा । उवा तीरथा वरता रै वाद अमाव, अत्याचार करणिया दुम्हा रा साटो ले गग्या । गुरु गोविंद सिध जा परा र कवाया—
'मना' इण वरत, या जड त्यागी तपसो ओपाळ री सिक्ख सम्प्रदाय न भारी जरून है । हम्मै आप पजाव पधारो ।"

माधोदास कयो—“पण म्है जगत तज'र आयोडो माध पुरस हू ।”

मळ गोविंद सिध—“मसार छोटर्ण रो समे ओजू कर्म, आप तो देस नै मुमठमाना री लगार्ई इयायी लाय मू उबारणै रा मुकाज भाता । धारै जास बळ रो योग भोग उपभाग वरान मे नौ, देस बचावण रो भोग उधाडा है ।”

माधोदास बोल्या—“अब साधु न अडो ससारी कार अजोग आप मोमळा अर सारली म्हारी सारी सेवा धूड घाणी, राख छाणी हा जावैला ।

गुरु कया—‘दम सेवा ता परमाच्च सेवा है । साधु हव चायै भादर, आप तो भठे सिद्ध पुरस हा । धरम रा रुखाळा बहीजो । देस सेवा ही ता सत वरदान हव, मद व्रथा रो अडा मत है ।’

माधोदास मूल समळ'र बैठधा, बिचार हिडदै चठधा अर काना म स कारा कडधा जद आसण छोट'र ऊमा हुया । उवा फट गुरु गोविंद सिध रो हास भात'र कयो—“म्है आपरो बंदो हू ।’

आपरै हिवडे चेप'र गुरु करमायो—“आप म्हारा राजनीत रा मुखिया मालिक हो । आवो लवो खड रो पाहुल म्है धान सिक्ख धरम म दीक्षित कियो बावू । आज धागे नाव गुरु बकम सिध राखीज्या है । मुसळ मान, सिक्खा मायै पजाव म घणा अत्याचार कर । म्हार दो बेटा न सर-हिंद स्थान मे नयाव बजीर खा जीवता न दीवार मे बिणवा दिया । धान पजाव जान'र काम करणा है । उणा आपरी तरवार, पाव तीर एक मगारा अर भडा तथा पच्चीस सेक सायै देयर ओजू कया—‘सिक्खा रो स्याव ह्याव बघावा वै आप रा सदीव दास रैसी ।

गुरु आदस पजाव गघा, लार वरानो जा पौच्यो । बठे हजारो सिक्खा मुवागत नरेपो अर वार भू नीच भेळा हुया । बठला स मुगल सूबेदार दरता थका उ नै युन सापडा-नडो गग्या । पैल पात कथल रो एक

दिल्ली जावतो मोटो साही खजाना लूटघो अर आपरा सिकाया में बाट दिया। कपूरी रँ रहीस रो खजाना ही खास'र बाट दिया। आग समाना नगर म जलालुद्दीन—'जक्के' गुरु तंग भादर रो तरवार सू मीम काटघो र घर नै बाळ जाळ दियो अर दस हजार नडा मुसलमाना नै मारघा। वीर सिक्ख जीत्या, लडवा अर बा माघादास नै बदा बैरागी री पदवी दी। ब्याह भी हुघो, पण सिक्खा रो मान तो आधूतो साधु रगो। फौज भेळी कर अर अम्बाला, सवारा, बैथल, दामला, कजपुर इत्याद गाव कस्बा, हाथवसू करवा। ओरगजेब दिखणादा जुद्धा में मच्चाडो हो, बंद रा कुडिया बचाडा सुणतो थको सूबदारा न हुकम भार्य हुकम उर्वे बंद नै मारण रा मल तोरियो। पण बंदो अयोग बल दवत वीर, सघीरा रँ घणी सम्मान खा जडै जालम सूबेदार नै जुद्ध जीत मार नाख्यो अर मुखलिसगड नै कब्जे लेय र लोहगड बना लिया। मरहिंद र नवाब, गुरु रँ दो बालका न दीवार म बिणाया, जका सारै उणा री दुखी हुयी दादी मरी तथा बठै रँ जगलारी रोडघट म लेमर गाबि द सिध नै भारी दुख दियो हो। वो आखो अणहूणो हु ब चेत्ये अर जुद्ध छिडघा बठ रा दो सूबदारा नै सिक्खा मार नाह्या।

अेकर में चालतै जुद्ध रँ सम वीर बैरागी जुद्ध भोम सू अळगै एकांत घास में जाय र मडली म भजन गावणा पळाय। ईस्वर भजना में सग लीन तल्लीन हो रया हा। अचानक एक सिक्ख दूत आय र हरजस मडली में बडघा अर जुद्ध री डरावणी हालत बतायी। कयो—“मुसलमाना री फौज तक्डो घणी है, सिक्खा न हला राख्या है।” बैरागी चट बाय घग घोई चढियो अर जुद्ध जगा आडूक्या। वान देवता ही मुसलमाना रा सेना नाज भीर हुई अर दर्जीर खा मारीज्यो। मुगळा री तापा, बडूका अर लडाई री माकली चीजा वस्ता तथा माल मत्ता खजानो घणा हाथ आयो। बंदै रँ सीखा वाणा सू भाजता घणा मुसलमान मारीज्या। सिक्ख जीत्या अर सरहिंद नगर म मुसलमान रो बीज नौ छडघो। सुन्धानद-जक्के' गुरु गोविंद सिध रँ टाबरा न पकडवाया, उर्वे में जेवटा सू जरू बाध'र सर म फेरयो अर खल्ला-खूसटा मार मार पूरो करघो।

पंजाब न आजाद करवाय बैरागी अमरतसर आया अर दरवार

साहब म सोने जैडो ढेरा घन चाढयो । उवै री ताकत तरकोब रै भाग
हजारा लोणा सिक्ख धरम अपणाय र सयवाद लियो । हम्मै ता तलवडी
राहकाट, मलवारा, मलारकोटला, जिगराव जिसडा गाव अरनगर वैरागी
रै सासण तल हुया । राव उमराव इत्याद नरेस उणा रा चेला वणग्या ।
दिल्ली सू लाहौर ताइ रै प्रदेश री राजधानी साहगढ राखी अर गुरु
नानक रै नाव सू सिक्को चलायो ।

औरगजेब रै खतम होणै रै बाद बहादुरसा (आलम पलो) दिल्ली
री गादी बैठयो । उवै फौज भेली करी अर पजाब लेणो चाया । पण बदा
वैरागी री तेज ताकत डर सू मुसलमाना रा पग नी लाग्या । सहारणपुर
रै राजा अली मुहम्मद इस्लाम र नाव आखा मुला न ऐका करया, पर
राइ म वो खुद खतम हुयो अर सहारणपुर वैरागी र हाथ आयो । पण
गुरुगोबिंद सिंघ री दीवडी औरता दिल्ली जावसी अर बठै फर्रुखासियर
बादमा वणग्यो । साठ गाठ काई इमी हुई के उवा दोनवा मिल र बदा
वैरागी ने राजी करणो चायो । गुरु री एक देवी सुदरी नाव री बदे न
कागज घाल्यो लिहया— 'गुरु रा सेवक हा, जुद्ध बंद करा, बादसा सू
जागीर मिलसी ।

व= जबाब दिथो— "कोरो गुरु सिक्ख नही वैरागी साधु हू । म्हे
म्हारै सठे पराकरम सू गुरु सुता रो बदलो घेरण जुद्ध लहू । जागीर तथा दया
री भीख हरगज नी मागू । " इय उषळै सू देवी सुदरी बडी नाराज हुई
अर उवै सिक्ख सिरदार नै कवाडयो क "बंद वरागी नै कोई 'साय' नी
देवै अर ना राख । 'सिक्खा अपमान सरु करयो, वैरागी हिंदुवा रो
सगठण बणायो । इयै वैर सू बादसा नै मजो हाथ आयो । उवै बदा
वैरागी साय जनेक भातग भगडा छेड दिया । वरागी जुद्ध सू लाहौर
लेणो चायो पण सिक्ख ता उलटा साधु रै सामण लडया । उदास बंदो
गुरदासपुर आवस्यो । बादसा उवै लारा भारी मोटी फौज भेजी अर
जयरदस्त जग माज्यो । बदे रा सात सौ चालीस स्यामी भगत सनिक
पकड लिया अर उवै न लोह री साकळा सू सठा जकड र बाध लियो तथा
मुखिध र पागी काजी र सामै मडो कियो । काजी कयो—

'अरे फकीर ! मुसलमान वण जावो जिंदगी बक्स दी जावगी ।'

पण सात सौ चालीस वीर हिन्दु सिफाया मे सू कण ही चघळा ना दियो
तया काजी सू मूढा फोर परा'र सूग करता थका अपूठा खडा हुग्या ।

काजी भळे कयो—“खामखा क्यू मरो म्हारी बात पण मानल्या,
नही तो हण राहण कुवाडा सू काट दिया जावोला ।” पणव ता टस सू
मस नी हुमा पीठ फोरे खडा रया । आखिर स री कतल करण री सजा
बोली जी । हर हमेस सगळा रें भेळ सू सौ सैनिका रा माया वाडणा सह
हुया तथा आठवे रोज बदा बैरागी री बारी आई । काजी पूछ्या—“तू
कँटी मोत चाब ?”

बद हुसतं पकै कयो—“जळीया रें मन भावै ।” उर्व रें च्यारू मेर
भाला री रोक रोप दीही, जका सेला कपर उण रें सात सौ चालीस
सिफाया रा सिर टग्योडा हा । सिर टग्या सेला रें उर्व घेरै म तरवार अर
बदा बैरागी रें छोट बाळक नै बठाय'र कयो । “तरवार सू धारै इयै टाबर
रा वेगामा टुकडा करनाख ।” बदा बैरागी धिरणा कग्गो हुया अपूठो
फुरग्यो । जद जल्तादई बाळक नै काट नाख्यो अर उर्व रा टुकडा बैरागी
माथै बाय दिया । पछ ताती लाल सौह री सीका बरागी र डील म
दबोसी अर खीरा सा लाल ताता बीपिया सू मास तोडयो । जक सू
हाट्या दीखण लागी । जल्तादई अवभ सू पूछ्या—“इत्ती पीडा मिसै
तो ही नाखुस नही ?”

बदा बरागी बोल्यो—“आत्म ग्यानी आखी तक्लीफा सू अळगो
हुवै ।” जल्तादई सुरत बदा रें पट म खासी सारी ताती सीका कुसा
ठडी चुभो दी । बैरागी निरास निरजीव हुग्यो जो जके पापी लोग खुत्ता
आयाचार करै, उव न मरघा कुण चेत राखै, पण जका भला माणस
हुस्टा र हाथा मार दिया जावै-वै बदा जगती रें मन सू कदे नी उनरै ।

ऊट दौड़

मडाण रो पाणी वारो खारो इनाको, खाखो ही बढळग्यो है। बठ दो-दा, तीन तीत काम री छेनी मेनी सू मुकलेरा, हसेरा, खीयेरा, दुलमेरा, कळ कलिया, साधेरा, ऊचाईडो, उदसिया, जेमा जिसा छोटा छटा एक जोड रा घणेरा गाव है। इया म सू केई उजडग्या, केई वस । कइ ता एक एक दो दो घरा रा रैवास रैया है जर कंया, ठाणी रै डब सू जीवण दु ख सैया है। पण लूणकरनसर री दिखणादी बाड सू ही मीठे पाणी री सरगळ भर साणी भोम री सदीनी सरुआत है। उठ स पाच छ कोस आधा प्रयात पाधो, विदवा कसवो काळू है।

सडकटू साल पल्या री वात है, गाव गौरव री खुल्याडी ह्यात है। उवे पार गाव गावतरै आण नाणै म उफालो चालणा या ऊटा चढ र जाणा दा ही साधन हा। आज कळैरी सी रेल भर गाडना री सेळ भेळ नी ही। एकरग एक बटाऊ गिणगीर रै तिवार माघ आपरी नूई परणेत न लावण वास्ते कळकळिया (मासर) जा रयो हो। मारग म काळू नाव रा एक माटो भर दढाव गाव आया।

कालू थापाट चढनोडा गाव, नाव नामून मे चौखळो चाधै भर कुरब कायदो दरावै। जक दिना आखे जिस रो घडयो जडयो जेवर जच। तहसील लूनकरणसर रा दा मो दम गाव, उवै रै पल्लै पूजीजै। राजा-महाराजा ही इय गाव नै पायर घणा राजी हुवै। उवै बखत इयै मायै कदे मूरतसिध जी स्याया कद मर्घसिध जी फूण्याना समाया जर कद ही

इय नै राज्य सरकार खालमै राखर पाभाया । छेकड काळू गाव नै श्री गगामिध जी महाराज आपरी छोटी राणी रैं बीर वैंताल, लाडकुवार, श्री विजयमिह जी रैं टिकाणै चढाय कर आपरै आदश नेह नै उजाळरा ।

काळू सदा सू वामण बाणिया रो गाव, तीन बावनी जमीन, जगा जगा ताल-तालाब अग्नाडा जहोटा सावण म मळा मगरिया सू भिन । गाव रैं बिचाले लामा चौरम टाडो, च्यारा कूटा माथै च्यार मीठे पाणी रा कूवा, दूर दूर रा भिनख मुख सोभा मुणै अर इयै गाव म आर वमै, हाळी दियाळी, वरम रो कोई भी निवार आवै जद गाव रो कण कण नाचण लग जावै । गिणगौर र तिवार पर तो तीन निना ताई हार जीत खातर रुटा री दौड हुनै । सग लोग आप आपरा करला मजार गाव रैं बिचाले भजणै । नडना गाना रा लाग दवण उड अर मनहर मेळा जुड । पल्लूरा डोल भूडवै अर चुटालै री पणगट तथा कालू रो गणगौरवामड बाजीदी है ।

बटाऊ नै इयै गाव बाला साधो साइना गिणगौर रैं मेळैरी आणदभरी बाना बतावणी पलाई अर पूछयो के— “भाईडा यू टेढी पाग बाधे अर टोड सजाये कठे जारियो है ?”

बटाऊ बोल्यो—“गाव कळकळिया म्हारो सासरो है । बठै म्है सारले साल परणीज्यो । हमे इय तिवार पर जोडायन नै लावण वेगी जारियो हूँ । म्हारै घरा म्हारो मा भैण आपरी बहू भावज नै आख्या फाडघा उडीकै । म्है उयै न हणै नही त्याऊ ता आग दुब्बरसो (दूसरो साल) लाग जावै, जकै मे नूई परण्याडी लुगाई पैलपोत घरा आवै नही । सो फूल गुलाबी पाघ बाधकर जाऊ ।” कळकळिया रो नाव मुणता ही उठै बैठघा सँग आदमी हस्या । कियो—“बावळा । कळकळिया म पूरी तीन टापरी है, इय निवार र दिन बठ काई देखैलो ? अठै रो गौर मगरियो देखनी । (कवत चाल-के देख कळकळिया सासरो, देखनी कालूरी गिणगौर) म्हारे गाव मे आप आपर बासरा ईमर गौर च्यारा कूवा ऊपर आसी, जद गीता रा गुटका दुलसी । समछडती बढका माथै मूमाड करता चूचाड चिपसी जद रुखा माथै मोरिया गरळा उठमी । टावर भीता माथै पटाका फोडसी अर मैदान मे झूठा ऊटा रा सजाई सेता टोळ दौडसी जद यू अचुको आणद

जोड़ लेसी। भाग पड़सी, जद धारें टोरहें रा भाग उघड़ जासी। आपो आप चाल पकड़ जासी।”

चौधरी नाथें कयो—“चाल म्हारें धरा वासी ले। ऊट जेबाणदे, लाठी मेल र काठी उतार दे। ऊट नीर परो, ढोक्लिया जीम लेई अर मळा देखेर दो दिन पछ सासरें चलथो जाई। बठें धारा आसडली, बूकडलें जिसा जुवाई रा गीत सुणोजे अर आतो लुगाई न लेंतो आइजें। लोट में लिप्पा है तो माल मसीदा ही मिल जासी। पण माफन हाथ लाग्योडो बालू रा मेळो चूक र ब्यू बरमहीण वण।”

बटाऊ आपरें घर सू जीम-जूठ कर चाल्या हा। पण बालू र गुवाड में बिलम पाणी पोवण खातर घोडो धमग्यो। कनै चोखो जेबेडो हा, कळकळिया किसा नाबरें बस हो? नो कोस हो, जको उण रें टोरहें री एक दा रो पडा हो। बिलम तम्बाखू करी अर बालू री चालती गिलरा गप्पा नें हिडदें म भरी।

बेताबूक हुग्यो। नसबें रो बोड अर धारलें गावडें रो गूगो मोड। जाबक धुसर, बककूर अर भ्यारियो। भव पूगे ऊट छेंचेर, एव वा साठो गुवाडी ल जा वठाण्यो अर खुद डोकलिया दूक र हाल हुयो।

आधण री तीन बजी, ईसर गीर गीर गाव रें गुवाड मळें पधारया। भवाभव बीजळो रा सा भवका सळाव। गाव री मळया मू पैगी आडी लुगाया रा भूतरा च्यारा वाती सू कडया अर गीता रा मोट ऊपडया। मिनखारी मराड अर टाबरा री जोड-ताड रा ताथ देखर बटाऊ बगनो सोवणगो। ऊटा घोडा री घुड दौड देखी जद तो भूलग्यो सासरें री सारी सेली। रात नें सूतथो, इयें त्यूहार रा निरवाला आया नीद घुळी अर कुपाल म रगीता जुआल छाया। दिनूग उठथो अर पाछो मेळ में जाव'र मुढा फाडलिमा। जी म आई, कारडा लियो अर भाजता ऊटा री बरोवरी म आपरा टोरडो ताहड कर लियो।

बालू म दो दिन रैयो अर मेळ रें कोच-बलोळ म बटाऊ मूनग्या जाबक माऊ रो बंया। हार-जीत रें आटे में कालें काट रा टाड नग्यो अर बाह बाही री मौज चोज म चित्त बहद उफणायो। घुडदोड र गुमान में गेता हूँ ग्या। बठें बळकळिया, बटे बालू? मेळो देखेर मरण नें

बिसरगयो रिझानू । पाछा पलाण माइयो, तग खैच्यो अर आप रै गावर सागी गैले ऊठ नै टिचकार दियो । बाळू री गौर री मगरियो देख'र भागी इसो मतवालो वण्यो, जकी सासरै जाणो भूलग्या । आयण आणद मगन आपरै घर पौचवर बासळ म ऊठ जकाण्यो । जद उवैगी मा अर बहिन, बीनणी रै बोह म भाजी हाफीजी वन आई । पण उवै नै अकलो आयो देख'र बँ दोनू सूनी सी हवैगी । होस हुयो जद उवै मायै सागीडी उबळ पडी । बोली—“बीनणी नै ट्यायो नही तो क्यू गयो ? परण्य नै एव साल तो पूरो हुग्यो अर हमै दुब्बरसा सक्र हुवै । जदही ता मैल्यो हो । पी'र रो के छेडो है ? अकेर थू अठै से आवतो तो आपा भळै पाछी भेज देंवता । मीण मास टाकर रह जिवती अर आवण जावण री अड-खना खुस जाती । बहू-बटघा आवती जावती चौखी लागै ।” दुब्बरसै रो नाव सुण्या अर सोकीन घटाऊडै रै सिर म चेतो आयो । हमै मौजीमन समझ्यो के म्है तो बाळू री गिणगौर देख'र ही पाछो मुड आयो हू । बीनणी ल्यावणी तो दूर रयी, म्है तो सासर जावणो ही बिसर बठयो । जद बीनणी कठै सू आवती ? मुळकसै बळपत यो साचो समचार उवै आपरी मा अर मण नैल्या दिया । मायड आप रै अँडै अलोल अलगर जी जामरी सुणी बाता, माथै आपरै भोह मे एव अडीड खालियो अर कियो—

‘फूटघा भाग फडोदा मामो, राही नै घूमा वँनाथा’ (काळू रै नाथ घटाऊ नै गुमायो ।)

कूड-साच

महाण खेतर खमला खानीना गपिया जपिया तपिया तथा पुलना बातपोस पुराती री आळ् चेत आवे जद सैत्रासर रै गोधूराम बिरामण रो चहैरो वतळ करना मिनखा रै मूढाग घेरा घालण लाग जावै । अबलेखा सा आव अर दाद गोधूराम रा कोकड टाटका बोलीज ।

सजराजर गाव म पैल्या सारसुत बिरामणा रो नमूनादार घडो हो । ठाकुर धनपत सिंध र इयै गाव दो बासा रो पटवारी गोधूराम—बडो बोलाक, मिष्ठ मजाकी अर कूडी बात न साच रै छव दुका जबाय र कबणियो करामाती तथा सामरथ हो । उवा री बान भाटपात गप्प जाणता घका ही मुणनिया लोग साच रो सो रस सेंवता मुणता जर हँसता हँसता लोट पोड हो जाया करता । पण कजे कोई बात कूडी नी बना सकतो । रकम लेणो, छूट मेल तथा याव नपास रा काम तो केई दिना गाव मे गोधू दान् रै हाथा सळटता हो हा, पण दूर दूर रा मिनग दरसन मेळा जम र उणा री बाता ही मुण्या करता । बा री बात, खुरापात नी, दिल खुस रजण रो हतबो बण जाया करती । इस तरा मूरा पूरा, सता महता अर जूझार जत्या सत्या री कीरत कथावा रा सजरासर गाव म सदीव हरिया छोगा हालता सैरावता रवता । कस्वै काळू रो काकड मोमाडी होण र कारण नखराळो गाव सैजरासर घण माद मुरजाद नाचतो वूद्रतो लारला वरसा ताई गप्पा गिल्लरा अर कलाळ करतो रवतो ।

दागो केवतो— 'जेकरसँ कुमम्मे, कमज्या फनी उडो । अठी मढी वरमाळ रो झडो म्है बगाल जा दूकयो । पचास री सास, आछा दरमावा

वाणिया रै बासे रसोइयो रैग्यो । पण मौमम मार भट्ट करधा । गिचपिच कादो, रात्यू पाणो पड़े, लार गळ तथा चीखलै चळा भर वोकरे । बीजळी रा सळाका जमी सचनण कर नासै अर लूठै दरिया रा दरसन करा दवै । छोनड पाणो नदधा म रळै, जुद की सूकवा वापरै । भत्तावटे मुभाखो हवै, म्है सभाव रै चाडै, माढ गमछो लेय'र घटा भर खातर घूमण नै नीसहै, पण छाटा छिडकी अर बीजळ पळाका ता करता लारो हो नी छोडै । अेक रोज तकटी कडकी, बास मिचा नाखी तथा बीजळ कवरो केळै रै पानकै मायै दे नीच आ पडो । म्है दह्यो—'अर बीजली ।" मृट्टी भर उठाखी । अंगरखै री मायली जेब म घाल'र आडी काठी घूडी जडली तथा जाबक मूलग्यो ।

लहरवणी भावना जागी, द आया दस न ठोका । मोधू की नै फलका खडारै हा । दो महीणा मोफत मे धुवा खै आग्या फाड'र आ सूत्या घर री लूठी बाखळ म उघाडो । सुल भर सोय र सागीडी सनकर नीद धुकाई । जाभरवै उठघो, आडणियो अडायो तो काख नीचलै गूमियै म बसवसिया फाटती बीजल कुवरा रा भवकारा पडधा । भट्ट बटण खाल'र आत र फरणाई, अकास चढती नीकटी सी दीसी । म्है बाळा पिछनाया । बापडी नै डाडी दबास राखी, सफा मूलग्या । कूड साच कू सूरज भगवान साखी है ।'

पछ ता दानो ठाकरा र गड म रोकड राजनामचै सू लेय र व्याह-साधै री मेहमाणदारी ताई र पातियै रा प्रवध अर नेगचार रा सानरा मुक्ताव दिया करतो । रैयत, रजवाडा अर वाणिका बोशारा म रैवणै रै जोग आछो अणम कुसळ मजाकियो कैइजता । पचा म पच अर चौधरना म चौधरा, पण स्याणो समझदार हावना थका गाडै मायै घड र मनोहारी घात बना दिया करतो । कँवणै रो डग इसो निराळो क मुणनिया मिनखा रै सामणै सिनेमा री सीबी सी उघाड देवता । बी अडो कळाकार हो अर जाणतो क, 'बात म्हारी मुणनिया बजचनी नी जाणसी । पण वान रा हँकारा तो फौज रा नगारा ज्यू मधरा—मीठा गूजता ही रै सी । लोगडा गडाछा रै बोल मगन होयर मुळकत मन हँसी रा फुवारा छोड बोकरसी अर म्हारै मन री हूस पूरीज जासो ।"

वरतारा बंदलया, राजनीत पसरी ! गोधूराम रा बाण डीला पड्या । ठाकर-ठरणा गया, मितगलिया भर खट्या अर गोधूराम मायें बुगपो धन बँठघो । हममें कुण गिणती म लेव ? चुणाव रा दिन आवैं, गाँव मे घाँी मोटरा बुवावैं पण नेता लाग गोधूराम नै नी, उणा रें बेटा-पाना नै बूझैं बतळावैं ।

एकरस पैलडैं चुडाव रें सम परचारी मिनखा सू नरियोडो एक द्रुक गोधूराम रें धारण आग आय र ठम्पो । नेतावा नै आया दख र गाव रो लोक डान्ते राजी हुयो । मोरना मिनखा न द्रुक सू हुठा उतरता देस्या जद गोधूराम रो ही मन हरघा हुयो । बुगपो भिटकयो, कौतुकी हाडका जूझ्यो तथा मजाकिया ठूढ ठिठोळी करणें बेगी अमूक उठघो । मिनखा रें उछाव मारच मे राळ रिमटाना रो छिया बड आई । जाण्या—“साग पैल्या मेरी बाता सू किता राजी हुता ? माण करता यका घडा चावता । व सग बात म्हैं मूल्या घाडो ही हू ? कोई वृभा भला ही न बूझो, दाद रें जी म आज आपरी बात कैवणें रो काळजें खुमी खुणस खडो हो रनी है । कळा, कळा रें वास्तैं हवैं । कुण इसा हवला जको दादरी (म्हारी) बात नै कान नी माडैंलो ? आपोडा रो आता नै उयल पुयल कर नाख सू । ’

बूढी जात्मा भ अलवाद भालरी । डोकरा घर म गयो अर छूछ चार रो खारियो भर परो र द्रुक रें आग ह्या मल्यो । भेला बैठा सग जणा चौकना हुया । जैहिद रा हाथ अर वैरा खिचया ? पण दादो तो खारिय म फरफरो नीरो रळकाव अर द्रुक र मूडागैं सरकावैं । बेटो गाव रो सरपच, बापू बापू’ कैय र घर म बुनाव । पण डोकरो ता खारिया भाल्या आयोडा नेतावा र बीचाळ रोडघाटी म पज्याडो खडा है ।

प्रधानजी पूछैं—‘ दादा जया काई करो ? ’

डण बतावैं—‘ बापडी मटर दूर सू यक्याडी चाली आई है । जाणू दो मु मार लव । च्यार गुवाळिया खा लेमी तो सारी चालसी । लाम पढ पडी उगाळी काडनी बगमी । घाटो फूम चर लेवण दया, ऊपर सू कुड रा मीठा पापी भले या दस्यू । आयोण आखा लोग हस्या ।

पछ प्रधान जी भले धाल्या—“दादा म्हारी सिरकार (राजरी)

मोटर है। पाणी बोनी, या ता तेल पीर्य ”

जद ओकरो कर्व—“पीय जको तो म्हू जाणू ! तेल नी, आ धी कित्ता बोनी पो लेवें ! पण हे कठे ? धरा रा बिलोयणा ही मूधा मारी-जग्या जर उणा रा सरजाम सफा खतम हुग्या। एकरग गगासिधजी म्हाराजा मटर चढ्या महाजन राजा हरिसिध खन जा रधा हा। खेत खनलें गेलें चढ्या चढ्या, म्हारे खेत म उर्वे साल छाणी ही। गाया-भस्या रा मोकळो घोणो हो, रोही म रोम विराज रिधा हा खेत, मोठ मनीरा सू भरियोडो देख्या, महाराजा री याक्योही मटर जावक ठमर-टमगी। भरी आगोन नी सरकी। टससू भस नी हुई। गगासिधजी घापेर म्हार खने आया, पालागण करधा। म्हें आसीरवाद दिवो अर खनला सगळा भिनखा खम्मा बासी।

बीकाननाथ बोल्या—“दादा तावडें बळा, मोटर रो तेल निवडग्या।’

म्हें क्यो—खम्मा अनदाता ! घरती रा घणी हो ! मतोर जीमो अर सिट्टा चाबा। तातो रोटियो करदया, दपारो करो।’ दरबार बोल्या—‘साथ एडीकम्प है, कँवर सा है। मोडो हवें, आथण पाछो आवणो है। भळ कदई घात।’

जद म्हें नम्मा अर बोल्हो—‘तो जणा पधारोसा बडो ! मटर बेगी तेल नी ता धी धालसू अर नावडणो ल्या रघो हू।’ म्हाराजा सा व जाय र मटर चढिया, म्हें झूपड सू धी रा मोटो मूण (बडो घडो) मोडें ऊच्यो अर लार मटर नडे जा पूग्यो। आग—देखी बापडी पडें रें तावडेसू याक्याडी दूवळी, छोटी सी क मटरही होठ तटकाया अर आग्या फाड्या टोटण सी खुरवनी पग पाया ऊभी खडी। म्हें जाता ही धी री घडा सुभो, रो मूमा मूडें भायें आज्या। डलेवरिये जाडी पकडी, म्हें फट उता दी हा। फटकारे हुस्तार होय र चाल पडी। भोपू बाज्या अर खल उडी। सरें मे चा जें वा ज हुई। भाजगी, दीखण सू रयगी, जणा, सगजणा खेत मे काम लाग्या।’ दाद घाई वाड वाड र अँडी घडी बाता सुणार्ई।

दाद री चालतो बात साथे बीकानेर रें गेल नानी सू जीय रा हॉरण सुणोज्यो। परचारी नेता आगलो पडा मूल्या बठा अर दाद री गत्ता-

सत्ता सामें मूढा तिडका टिडका राह्या । तुरत तारली पारटी भळें आ पौंची, जव मे जिलें रा एक एम० एल० ए० हा । जीप सू उतरता ही एम० एल० ए० सा'ब चिनाम सा वण्या बंठया प्रधानजी नें लिया लवठ घवकें ।

बोल्या—“पढ्यो पार । सीयाळो सूरज सिर चढ आयो, थ ओजू अठें ही बेंठा हो ?” प्रधानजी लजमना सा हुन्या अर आखा नतावा नें लेय'र ट्रक चढया । सरपच ने बेरो पढ्यो, तुरत ट्रक स पाछा उतार र आपरे घरा भोजन रो भाणो लगा दियो ।

दादे क्यो—“जीम्या बिना जावो पोल थोडी है । अया उतावळ करो जल् गोधू सारस्वें सू बच'र वगणो हो ।”

पैलडा जाया तमाम नेता सामें ही बोल्या—“दादा या म्हान आज तिरपत कर दी-हा, विलाली विदवी बाता स म्हे सारा मुग्ध हुग्या । भोजन री मन म ही—नी रयी, जावक भूलग्या । कणो पढसी—सैजरासर ऊनो-भूनो, मत सूनो गाव नी, यो तो बातेरी पडित पुरखा रो नमूनो वास है ।

जद दादें रो लाल, गोपाल सरपच बोल्यो—“म्हें या ही चावो के ये लोग अठें सू भूखा नीं जावो । बाकी म्हारे बापरी कथावा तो कणें र सहज सू ही मीठी लाग । साच रा उजाम नी, सफा कूडी घडी मढी चालें ।”

एम० एल० ए० सा'ब भण्या गुण्या भिनख चालतें प्रसंग न समझ र बतायो के दादें जेंडा लोक कथाकारा रें कथा सनसा सू ही इण प्रदेश रा नर-नारी आत्म बलिदान रें अनूठें आदरसा न थुथकारघा है तो चालो आपणा घोटा नें अठें नी है । दूजी आच । कूड नी साच । सैजरासर आपणी है ।

गाँव रो लारली बात

गल्लर गद बडनो गाव घाकड घडो, सार सुव सम्प' चौभीतै रसै धर्स एक बूढा बामण । आररै नेड-बडूवै माप यह कामा साथ नाक निवण मन करन कारजा घणो खसै खट । सवेदनशील, सरस मानवी भावना सू बरम साठ पैल्या री घूटी गल्ल सूटी चावना पाळ उजाळ । रीस रोस अलूणो, सुख स'तोखधारी, मिस्थ रंवास पण सत उपकारी । दैवत दुतिया रम, आसप्या सत्तर भू घोडी कम । पण सभाव चाक अणमै ग्याम नमै तमै । दाता दिन दिमा है—पार घाल । पण काठ राड भाठै सू काठी, भूवाजी रै भरमाव चालै है ।

गल्ल गल्ल सूणो घास खेत रो निनाणियो काढ । घान रो कोई सो छट-पटाइ ज्याडो टाटूडो नड । जेटा कुण कर ? साथ रो पडघो है । डील मे पसेव रा खाळा नीचै 'हासै, जनेऊ रा ईला लड सुहणा बास । बाळ रो फोइ भूल्या-चूबयो लरको लागे । तावडी घमकहे, माछर जूट । सामै ताती घूड, ईल रो भाव कूड पैलडी पडवा गाजी, दिन भोत्तरगी जाभली बाजी, घान अळ'र जाता रथो । मोटी आस घासडा कुचर, कदास नारायण सामो भाक ज्यावै तो लोक सर वसता रै ज्यावा, अडी धारणा कमिये री धार भूषाभूष गवारी बाळ सो उलाळ है । दरांगो डेण मरे पच ।

कारण खेत गाव सू कोस च्यार पडे । माखर 'करणी सर रा डाढा, डेर सहारै चिपे अडे । पाळ रै डिस्सै सुहणी भूपडी, वगता नै जाणा भाता देवै बलावै । मारम बवता तिस्सा बटावू घणै माण पाणी पीवै ।

छिकता जावे है। दो मटीगण मूण (मोटा घडा), पण कतोव पाणी राख? भैत बारा आडोसी पाडोसी लोटडो कूजिया टी भरणें जावें। डेणमुस्कळा गाव नू पाणी ल्याय'र मेलें, गेलें वगता सण, सो रो सटाक वगो मो पो चास ज्यावें।

डोकरी नोटा भर भण पावें, भूज वळें नी, लाव-सेवा जी सोरा राख सुधिया साडी दस रें टम घर सू आटा पीम आव, सायें घीणाळा स् छाछ रा खाटो कुल्हट ही भरा ल्यावें। घणी नै पाव म पाणी क्कनावें अर हुवें मो स्हार दरावें। तातें रोटियें दपारो अर सावण जगावण ल्यारणा राख। स्यामी नित सिनानी, घोती कुडतिया घो दरे, डेरें, रो बुहारो भाडा करे अर पछ वरतण माज घोयर मिम्या पाछी गाव जाहूयें। जया रानी नै चौमासियो घघो घिक्वावे। घरा एक खीखरी (दुबळो गज) उव री घार काण्णी, छ माल रें छोटियें छोरें न जीमा जुठाय'र साय ल परा सुयाणना अर लिछमी बोवारु घर खुचो राखणा हो यिना मुळाइ पाती मे है। पण वणी लुगाई दोनू गळगूगळ जीत वें मू मारो मुची समें गुजार।

पावली टोरडी खेत मू ही तडप पीटती चाल। अनाण ज्हाड री उत्तरादो घाट पक्को, ऊचा, पाणी रो तिखाळा तळ री बाब म नाव चिलकें पनकें। डोकरी माघा दा, दो न विरिया म हाफना सा भर'र वारें ल्यावें। गाडा देवणियें जोग डाडा दारा, वारें म घाल र दटिया अर कदी तूम्बा दवोगें तथा हेण वय र टोरडी नै टिचकार लडो कर। पछ म्हारी खीचन सूमतें अघारें पाछो खेत से दुर। एक जाग माडो सा भाको मबकारा पडें, दूजाडी याडो प्रीत पाळ। मारण काई उफाळो आदमी सागें हुज्यावें ता अरडावती टोरडी मायें चड्डा लवें।

मिम्या रें मम काई अकलियो राहो म रात बास वगी भाम्भराम रें डेर आज्यावें ता डेण उवें वेगी आप रें जाटें री राटी वने अर जीमाव। कमिमा जेइ चौसगी गटासी कस्मी इत्याद किरसाणी ओजार जें काई बटिया आदमी माणणें आवें तो डाकरा आप काम खाटा होय र भूता देवें। आटा गुण, लूण, मिरच जर होवें रापान खनना पडोसी माण-मूगर ल जाव। गाभा सत्ता नीरो फूम, आपरी राख'र आगलें री जळत

पूर देवें। कोई बंदो आपरें खेत म पाणी बगी कन्वी कुड बणावें तो भारू राम उबै रै साथै भीर हवै अर ऊरमा सारू खोदण मे घणो स्हारो देवें। लकड़ी लैडा, लनावण जावण, मिनखा वास्तै मग जोगती चीज बस्ता हर बखत हाजर राख। मिर सिखा, ठड ठारी री वळा, आधी गिणे न सापो, मोडो वेगो ठा लागै सटाक आगलै कनै जा पूर्ण अर कुटकी चिरा यत री उकाली हाथा बणाय र पा आव। गोळा उतरज्यै ता मसळ दयै, हाथ पग टूटयाड बाध दवै अर जात-पात रै भेदभाव बिना लाकहित करै। मयै मिनख न बाठ-पूळा, पीपळ नुनछी री लकड़ी अर नारळ खोपरें सू जुगती पोचावै। इस तरा, माण भेबा नै, भगवान री पूजा जाण'र सेवा करै। मिनखा री मोयाब दाब सू नही। पसुवारै हीडै प्रेम ही हाजर रैव। पान्या नै चुम्मा घरसावै, साप नै दूब रा बटारा सरकावै, कीडी नगरें आटा अर कुत्ता नै रोगी नाखणी बंदी नी भूलै। अकग ट'नाये आवै जद हिरणा रै पाणो खातर गौरव ठीगळा, कारा तगरा माडै अर माडै घणा ऊबर उवा न भर आवै।

मभाव क्या जाव ? अभाव हीण जमार पळया है। भगवान रो दिया दुख ही ता सुख री तरिया सवणा जाण, धीर बाण पुरख कहीज। सै दिन के सा नी बीध। सुन-दुख रा जोडा है। भारूराम साब—“काई हवै छोटी है तो दूजा बटो ही है अर एक पोनाली लट ही रामजी दे राखी है। जी ता टिकाणा ही पडै। कालें माटमार हुज्यामी अर पूरें रा भोळा भान नाटसी। के कोनी हो ? मा की हा ना। हजारो री ता बाकी सिटी पडी है। ‘का आर्य आस हू अर का आवै तास हू।’ हादहाळा मालडो ही काई पुताई करणी पड्या। उधारो पुधारा ही नाटजा रडा है। बप भाई का की सू लेया ? धेरसी उबैगी भनाई, नी दसी बा री भलाई। माईता री जी जडी, घर रो सालीणा बेटा ही गयो ता चौजा री किसी चिकारी है। रिपिया रै फोडै रा किमा मरपा है। मालक म' ही घर री काढ़नी जणा ही घुरिया जगन टड काटै।”

भारूराम ग मोटा बेटो बडा बापारी गाय रा हर बामा म बलावता तैडा आवता। परसनिवै रूप पूरा राम नाय, बरस बार्म ही रो हा नही इय साल चेखव आइ, साल नै लैवती गई। बापडै डण न रटायो। समळे

वास नै चेता चुक करगो । बूढ़ा हरदम चेतै त्मावनी करल भरल कर
 परणायै नै पाच बरस हुग्या, पण हम्मै जाय'र घरा नू वा कान बापरयो ।
 नानेरै म जलम्या महीनै रा हुया । बटा घरा बाया जित्त नै बाप लाधो
 ही नहीं पार पड्यो । ' ' ओकरी राव—' बाप री तो ऊगत री मा मरगा,
 म्है धारया ही नहीं । लाग ब्या—'भारुराम ब्याह कर ले, इ लेत न
 कु' पाठमी ? माटयारसू टावरा रा फाहा देख्या नी जावै । गुवाहा री
 खाग मट ला मूधा भारी जगी । ' ' बात मागो, आखर बरम जावता के बार
 लाग ? बटा हुया जुशानी उठा-बठी करी । गुवाणी न पाछी सूई कन्ती ।
 गुवाहा छात्राटा बणम्या । पण हम्मठ परठ हुगी । छारा छाटा साल छ ब
 रा, मावसी पूर री भाळो डाळी अर सूरी । ऊधो हव ता ही लुगाई रा
 जात काई कर सकै ? मेरा घोळा मडम्या, माथ भारी आपदा आ पडी ।
 पूरै री बहू रा सामा दीखता दुख रात निन, साम-मकार काळ ज लुन,
 जद घर बत, छाती भाठो मेल'र मभाळणा ही तो पड । माळा मिणिया
 गया सारसी गळी । सो नयू ही चाही जमी । की डाळ रा ही दीम , काकी
 भतीजा काल न बटा हुग्यासी ।

भारू ईसरगा वाम मम चमता ही अकली मुरजादी मितल बाजै ।
 बा मिनखा र वास्त सज बतलता बरतण बाळो अलीकी आन्त ओप
 साम । अहा मूष भाव हरदम उर्वै रै हिडद वम । पण वा नी जाणै क म्है
 की रै ही बाडा ऊभो आ रयो हू । भारुराम बदमकाठ यो पपाळ जाळ
 नी पाठ के म्है लोगा रा काज मारू । उर्वै र हिडद म आ बात ही नी
 आवै क म्है कीनै ही की देवू साजू हू । भारू आप रै भाग मारू हरेक न
 तन मन धन सू मँजाग दबाळ बणया रव । पाछा लवणा अर जसाण
 जतावणो हरगज नी जाणै ।

पण आज र बरतार सोक हिडदै घेखी अर टगी जाम । मन मला
 मणचूम धरे माय पुरख नै पाणी नी घामै । गला अर छिनोर नर, बकार
 होनै डबक । दूजार कूडा आपरा बणै, नडा लाग मगा-सवधी मेग
 हरामखार खायाडा डकारण खातर ऊधो मोख पाव तथा एक रा दो घर
 करा दव । दुनिया परायें मुख दूबळी, भल बुर मार काइ जोण ? मरघोडा
 नै मार । आप रा मुबारथ सार्जै । गुनामी मजूर-गूमा नर, लुक छिग

चर उगाळें ! छेलकी बलकी लगावें, चप्पर की च्हाळें हासैं चालें । भोळा
 स्याणा न मूवाय नाखैं अर बरजैं रो पइसो पचा जयावें । चेला हा, पण
 गुरू कुहावें बोहरा घुरिया भाग वर्ग । छाटा-भाटा रो मानखा अँका कर
 दय । जगती रो सीख पूर रा ववा, आपरें सुमरें सू लछ लेव, घन रा
 ठोकाक बता नाखें । नाव-नामून माथें धूड फेर दी । परवार म पाच ही
 प्राणी हा, हरामडा, दो अर तीन रें जदापण मू दा वडा घरा वसा दिया ।
 भारुराम बाळक पोतें नैं गोदी लेवणो चाव खेलावें, येट पूरें नैं भूरें
 बाकें ! पण पूर रो बहू छार नैं खास ल जयावें, गाळा ठाव । कुण रोकै-
 टोक ? जगती तमासा देखें ! गात्र रो चात नगरा न मात दन ।

મજાકિયો મિનલ્લ

સઠ રાઠી કસ્વેં રો માની નતા મિનલ્લ હો પાસ । પઢોસરા ગાવડિયા માણસ
હી રાઠી સૂ પૂરી મુલાકાત માનતા । જદ કદે મઢો મ મિલ જાવતા, હરપા
હો જાયા કરતા, વેઠ ર મેઢા જીમતા । વાં આપરં હાણહાર નગર રો તા
વાલ ઘન સરૂપ વાજીદા બંદો હો ।

ઘયા તો લોક-વલ્લભ, મિલતારુ-માણેત ચોલો મન-મેઢૂ અર અનોલો
મિલનસાર મૂરત હતો । જકો ગલો કડનો, તારેં હંલા હેન મલ જાયા
કરતી । છાત્રારી કોવલ્લ કીઢી નગરં જ્યુ જુલ્લુલર નાલ્લ કાલ્લ લેવતી । વો
હી વાષો જી મ્હારેં । વાકો જી મ્હારેં ઘરા રેં વાર મ યારેં મ્હારેં રા
ભેદભાવ મૂલ'ર આપરી માવુક્તા વસ કનરેં હી ગુવાઈ મ પલા જા વડતો ।
આગ "વાલ્લાજી", વાલ્લોજી" રી ચેતના મ પુઢી પરાઠા છોડ ર વાય રો
ગુટકિયો ગલેં ઉતાર પરો પૂઠો મુઢ જાયા કરતો । પલ્લ સેં સૂ કડતો જૈં જ
જમુના મયા રી કૈવળો રાઠી કદે ની મૂલતા ।

સરસ માવુક અર સાહસસીઠ માનવ । વટવા વાલ્લા ગુચ્છેદાર વાલ્લા
સૂલટારાસા મવરિજા પડના વુગલા છાટેઢી સીસ સોમા સદીવ પવતો
રતો । પચેતેર વાર કર માઈત મરગ્યા જદ દૂજા સાથેં વગલેં ગયો, જકા
જુવાન વળ ર વ્યાહ કરણેં હી પાછો ગાવ મ વડગો, સગાઈ સરદારાનહર વઠેં
રી વઠેં હી હુઈ પરણીજ'ર વાયા અર ઘર લોલ્યો । તેણવ ધોળવ દસ
ખારયો । જદ પંત્યાપોત, ગાવગોત રેં લોગા ઇયેં નૈં જુગત સૂ જોયો । કાના
મે વાલ્લા, માથેં મમદ મોલિયા અર સવેં રા અઠલઢા જમાયઢા આઢા પલ,
સ્વેચ નાવ રી સીવીરાસલ્લ ઉઘડતા । ગુટગુટિયો નારેલિયા સો છોટો લૂલો

सूको मूढो, फोफळिया वेगी बनारेडी दोढस्या री खपरीवाळो वारा ज्यू ओठा री वणगट, वधती हरी कचन बेलारें नाळा सी मुरटीजती मूछा, सफाचट माडी चाटी उतारडी टोपसी सी ठाणी, चूपचडी बत्तीसी रा आणद दिया करती ।

लाम्बी वाया री कमीज, सियाळें री ऊपरावर अढायेडी काठा सूती सुइटर, पागडी ने त्यागर टोपी धारणवाळें जमाने मे आटा घालेडा काटा सू लडाळ्म अेक मफचरणी मायें लपट लिया करना । ओ स्यामगड रा रामनेमी अर सही विणन करीणयो सेठ श्री हरखचंद गठी नही, हद-वरज रो मजाकियो तथा हमाड जीव, समाज रो गुणी गिणी जणो माड जमनादास राठी हुता । रास रम्मत, नाटक चटक अर मैममेजिम जादू गरी म आपर भद्र भावा सू देखती जनता री आतडया उचल पुयन कर देया करतो । इयें री रंग रंग म तान पग पग पर नचको तथा आख होठा, लाट अर लिलाड, सारा अग उपाग अभिनय रें मम माज बाज रें सुरमे रळ र चरभर री काकरी बायल उयू चाल पकड लिय करता । अँडा अवसरा इयेंरा मोली सामडद गावडिया बाजावाणिया अभिनता अर आत्मा आदमी हस हसर लाट पोटा हा जाया करता । क्या रा पट दुलबा लागतो, क्या रें पैमाब री हानत उफण पडगी लोगा रा माम उरक चड जाया करता ।

देखणिया टूट पडता ? पण जमनादास री नवल गे असल दतबा बंद ना रकतो ।

‘मरस्वती नाट्य परिषद स्यामगड’ मडळी रा राठी अकनित चेत आवणिया चिन चार चिनत हा । परिषद मे इमा जोमीला चटक चनर अरवेस बंदळू दनू दूजो काई नी हुता । राठी री तीस माल पुराणी बाता चेत आता ही आजू लोगा रें दिन रा बीत्तो वचपण दबक्या कून लाग जातो सराड उपड ज्यार अर हुसगडी चट लडी हुयें ।

राठी माहेस्त्री म्हाजन हुता, पण हरेव जात विरात्री र काम म आपर सेवा भाव सू सैं जाग रा हाथ बनावण न आधी माप ताड त्यार रवती । वडा जिदास्मि, हममुख अर हिम्मतयान हा । हाडा र न्तिा आसैं गाव नें स्वाग दिताळ्म भूव भाग राळ देंवना । पररें न्ति पला ही

राठी राठ, पठाण, सेठ, कूजडा, साधू अर वनाठ रा साग नरया करता साथ पटी, ढोलक बाळा साथी, बाजा बजावता वगता । राठी आप र घूघरा री घमक घालतो चालतो । सेठ रो साग आछो ओपतो । बाजा री तान में पट इसा कूदावतो जका दखणिया टाढो अचूभो करता । साग बाज - साथ तान मिलवतो थको चसती बीटी में होठा सू ही जडो घालतो अर मड मू बार काटतो, चटाचट चक्का दिखालता नाचतो ।

जका दिना नाटक खेलण रो जार रा चाळा चालतो । १० राधेश्याम कथावाचक रा लिहयोडा वीर अभिम यु श्रवणकुमार, दानवीर, कणभक्त अम्बरीश अर उवा रै नेडें सरदारसाहर रा वामी सेठ शाभाचंद जी जम्मड रा बाल विवाह वड विवाह विदुसक जंडा सामाजिक नाटक वठे री मडळी म घणीवार खेलिज्या । राठी उवा म आछा टाटका मेलतो । उब न रिहमल री कणे जहरत ना पडती । उबे रा डोल ही पूरी रिहसल हुतो वी बधस म राम रो ढाई सरा, रम्मत रो चाचक बोहरो अर सिनमा रो कुदरती जोकर हुतो । नाच गाण अर हाव भावा री तिरधा कळा उब न मा री कूळ मू ही मिल्योटी ही । स्टेज पर आय'र अूभतो जद चुप्पा छा जावती ।

चिड्या म भाठो पड जाया करता । दरनक दडादड गोवर रा टिंगला सा दसर पसर फैल जाया करता । कावुली रै बेस म हींगरो प्रचार करता थका काई नी जाणता क यो अभिनय हा रथो है । वो चौक चडतो ही बोलतो — 'यारमारो कोसना मोळाना । हिंग सो हिंग । चौली सूधी हिंग ?'

'है' वड विवाह विदुसक नाटक रो लाभी सठ धिक्कारचंद वणतो, लीगा रै हाथा मू पाप वधाय र माकळे माण स करटावण करतो अडवानी रगमच मार्भे अूमता । पण राठी हाफेही का जग टीकी कर परा र कीरी दूरा सायता दिना सेठ वण जाया करतो । बाणी को सजे लुट्नाह भावा नू जनना री शोशे वा वाहो सूट लेंवना । मूढे हडपा अर माय सुरकी टांगी जाछी ओपी रती । मूछा री मरोड कणणी रो हथाव अर जुझ्या च'पाडी मी जुवानो जनना री हमी रो बारण वण जाया करती । डोल पर रामरज अर मू पर पाज्जर पोत'र बिना वाले भाटखणी म नी

आवतो ! हरस रै बहाळ म म्है ही वें जाया करतो अर उवै माथ सवाद करतो हस पडता । राठी स्टज छाड'र ओठा नेपथ्य म धुसता जद पसेव सू हठाडोव, गाभा गीला लिया वडता, पण नाच गाणा म बंद गावो नी राखता ? धणो खासी भीड देयर पखडा तोडण लाग जाया करतो जानता ही जमनादाम ! जमनादास ! री रट नगाया राखती !

अेक वार कस्बे रा धणी राजाजी पधारया । वडै अदब म आखे गाव रा नजराणा हुणो । जमनादास ही म्हाराजा री भेंट चटायण हाजर हुणो सग लाग टप् फल् हुधाडा नजराणा भेंट करा अर धूजता उगता अपूठा पा धरा । सेठ राठी आपरा इन्कीस रिपिया म्हाराजा र बबळा हाथा माथ घर परा'र हसर मजाक म दूजा र नजराणाळा दियोडा रिपिया फट उठा लिया ! आपरै सिर पर फेर'र नाचत से धूम'र, म बणाय'र इनो चिलत पटका रब्यो, जका म्हाराजा री मारी गम्भीरता गइ सारती गळी ! रिपिया पाछा आया, उवै राठी र मामणो खुद हमण लागया । राजाजी हुधा हरधा, लाग डरधा, उवा रा सग हाकम मुसदी हस पडधा । म्हाराजा सेठ रो नाव गाव पूछयो अर माकळा मैमनान बण र रीमरी बजाय राजी हुधा, कायदा वकम्या ।

राठी रा घर जोराराम गोनधन धूत रै बरोजरी म हा । उव रै ठार मूया री तिभजली हवेली, हरदम भागती र बती । मूया रो परवार डाडा ठाठो, जको जमनादाम सू सीख अर स्थाणप रो हर बखत लेण देण राखता । रिपिये-पीसिये र काम म मूया जाबक माडा अर मडचूस, सफा किनी काट जाया करता । टावर सू लेय'र वडा तार्णी हम - दान दिखाळना यका चटता उतरता हमस जमनादास री राळ रिगटानी सू मूया पण हरधा भरघो विगसाव लिया वसता । मूया रै हन राठी र हाथ री माला छुट जाया करती । राठी जिसो ही भगवान भगन, विसो ही मूया रो पडोसी सगत ! सर्दी गर्मी तथा ब्याह बेमारी मे उवो र कस्बे जमनादास री पूरा धणो धिक्तो । कातीसर र सग जमनादास री खेडी माथ मूया रै टावरा री अंडी भीट लागती जका दूजा पाडोम्या सू जाखे नी देखी जानी । मूया अभमान रा घर, राठी इमो रो सर !

जुग बीत गयो, पण खेती दाव नी दियो ! दा दस आमा आग ही

रमा । राठ मू जेवडा घडो ही घस्यो पण बाणिय रेंवटे रा खाती खेती मू किसा पूरा पडता ? ऊट मरग्या, तागा टूटग्या अर काला रिपड खूटग्या । तीन जण मिल'र साभे म काठ कपाडें री भळे वाडा दुकान खाली । रवाडो भाटो अर खाती-सुधार घटणें बठा । पीजरा, आलमारी, चौखट किराड पाटा पीढा रा घाट लगा दिया । गाहक लाग्या, भाव साव घण्या, जमनादास ता जापर नावुक सभाव सारू जाणकार मिनता न उधार ही खलवा दीना । सोभ लालच तो हा नही, करडा मगाग ही नी कर जे धिगाण कुण साय र नगदी बकसाव ?

सिनना बापरचा, राठी न बुढापें रें दुखा मा पश घेरयो । नाटका रा रंग फीका पड्या अर राठी रा कळा म अकाल बड्या । आजाद पीढी कुण जाणें के जमनादास अंक जि'दादिल मिनस है ।

मेसमारेजम म राठी रा साथी साभाच'द हाटो घण्यो । विद्यालय में काई जायाजण एकाकी तथा परब मनाइजतो, राठी नें जरूर याद करवा जावतो । केई लोग व्या-साव रें मोके ही खेल करवा लिया करता । राठी आपरें जादू रें जार टाबरा ने अधारी काठही मे काळें पडदें मायें भूत री छिया दिखावता अर छन ऊपर मू हाडी उतार नाखतो । काच रा टुकडा उगाळ खावणा, पाती न चाग जावणी अर साबती चादर रा दस्तो गिट र पट मू रगील फूल काढणा इत्याद तमासा राठी रें डावें हाथरा खेल हुता । इया रें खेला रा गाव म सुगायी टावर घणा बोड करता । 'मोड बटें रा व्याह ता माट्या, पण राठी रा हाथ सफा अटकग्या । उवें आपर माथ घोडी मुलमुल रा साको (डुम्माला) बाभ्यो । लाग इकराया टोकरो क्या 'घटे रें व्याह म केसरिया कसूमल ता स बाव, राठीहा यजब करपा त घाटा पगडा धुकाया लढकाया है ।' राठी रा रिभालू मन हस्या, जाभ्या—'काठ अर तगी म हू ।

पम्पा । म्हारी ताक एक चौघरी नें धरम भाइ वणाण री लूठी नाव है । अवार जावू, नाज काटा अर नाको भास बोड आवू ।

उवा धर मू बड्या, नाव रें ऊच धर चड्या । चौघरी आसाजी रें धरा जाय'र माफा उवार मिर मल दी'हा अर पातिया वारा जाप मायें आन लो'हा । चौघरी डालो राजी हुया । धन घडी धन भाग । मजाकियो

सेठ घर आय'र घरम भाई बग्या । घापना फाटतो जाट, हरख काड सू बोल्या—“सेठ घरम भाई तो हुजो जका चोखो, पण रिपिया सारा ब्याह म म्हारा घरनणा पडसी ! इया ही घरम भाई रो के ठा पडै । ‘भापातणी नीड भयेला भाजै नही । भायप पण पूरी पाळणी हव ता खाली हाथा नी, रिपिया रा पावरो एक चहरैमाही निक्क दीपता हाथू हाथ सेजावणा पडमी । आदमी म्हारो पुगा आमी ।” राठी घट्या रिपिया लिया घरा बडघो, दग्निया मुणनिया अबभो करघा ।

आज र बचत सुख री सीळी घाय अर ठडा लखा कठै ? चारमेर, काठरी तातो लाय बाजै । अफड इयाव फळ ग्यान गुण गळ अर कव्वा-सायकारी साजत बीगडै । सेठ राठी र ही राळी लागग्या पैदा हटगी, अडा माय आ जम्या जद सागी जागा जावणो पडघो । पण हम्मै यो दस बगालो नी अगूणो पाकीस्तान बाज । राठी अठै ही छोटै स्पू माटा होयो दूजी जागा कठै जावै ? पासपागट बणाय'र पाछो सालमणी'र पारबती-पुर नेडै जा जम्यो । पण सन् पसठ बार कर हिन्दू अर मुसलमाना री लडाई सारै देश म ओजू चाल पडी । अक दिन आखा भारतबास्या नै पकडणै रा परबाणा आग्या । पाकिस्तान सरकार उवा सगळा नै चुग चुग र जेळ मे जडणै लागमी । तबडी नडाकडी लगाय दी अर रस्ता घाटा माथे आपरी पुलिम तैनात कर दी । डारा न जतर, समाचार न पतर, काई ठा कठै ले जा बाडसी ? बासण ही नी देव । मारा कूटै अर घरम भ्रिष्ट करण रै बँधै पाकिस्तान मे सारा भारतीया नै सीधा लगवरगा वणा लिया ।

राठी मोच्यो डबग्या काळीघार, तुर त चमार रै माग रो गरनाम करघो तयार । भागी गपी, सूई डारा अर दो च्यार फाट्या टूट्या खल्ला खुसडा, चप्पल अर बूटडा अक भोळै म भर लीना । काळी-भूरी पालस री डब्या बुरम-रग अर मेख कीला, टायर रा टुकडा तथा दो च्यार चमडै रा बडछा ऊपरी पास सजा लिया । लोव रो जमुरियो हाथ म लेय र जूना ठोक्ण रो स्टड अर लाडो भोळै मे दीखता अडा दिया । भोलो हाथ म भाल परो'र रुळतो फिर तो राठी देस काकड र नैडै आ पूच्यो ।

सूरजजी घरा जावता आर्घ मूढे अपूठा देखा, पग्गेर आप रै आळा

वैठ'र अटा मेका, ड्यूटी मू लौटना निफाही डेरें माथें विसराम लेता गहस्य सुख ओका मेका हा । “हाथी बादो ' पाकीस्तान अर ' चगटाबादो” हिंदूस्तान गाया घदा दुरती सामी दीवें ही । राठी झोळो मेल'र आपर तैमन री गाठ काठी कमी अर काकड गी पुलिस चौकी कने बगतो गयो । फौजी मिफाया री आस्था चढ्या अर जोर मू बतलायो—एक सिफाही—
‘कायाय जाव ?’ (कहा जाते हो ?)

राठी—‘आमी कायाय जावा ना ।’ (मैं कही नहीं जाता)

मिफाही—“तुमी के आछे ? (तुम कौन हो)

राठी—“आमी मोची आछी” (मैं मोर्चा हू)

मिफाही— तुमी रें खान की काजे आस छो? (तुम यहा कैस जाय?)

माची—“आमी आपनार जूतार पानीस कारीते चाई ।” (मैं आपके जूता की पॉलीस करना चाहता हू)

मिफाई—“जैइ काज तुमी मोचाले कारीया दीव” (यह काम तुम सवेरे कर देता)

पाकीस्तान बणन रे राठें म बिहार मू जाय र बस्याडो मुसलमान ह्यासदार दूर खडा ही हिंदी म गरज्यो— ‘अरे । डेट कोई गडबड मन करना । अगर म रोटी खाकर रात का पडे रहना और सुबह सबने बूट टीक कर देना । खजाची स पूरे पम दितवा देंगे ।’

माची— ‘हजूर, माई बाप । दो नम्बर क कैम्प पर बुलाया हुआ हू, अत अब वहा जाकर हाजिर हाना हू । उनका काय करक सुबह तुरन्त आ जाऊंगा ।’

हवलदार—‘ अच्छा जाभा, सुबह आ जाना ।

उब जमीन पर भाषा टेर पग सलाम करण रा इमा नाग बणाया जपा हुरतार हस दियो । गठी चट टुकम कैय र अघारी पडत पोर लेना साटा मू मुक्त छित दिया सापटा जका “धगडावाग आता ही दीस्या गी म झोटों नाख र बगनैय कै टामराट रें रेड टुक मू मोषो मिनी गुनी पौचग्या । टिकट बटाय र रन मू दीना ठोका सा चोप दिन म आ बडया ।

राठी आपरी बट्या कुमलता रें पाग जीयो त्रिते पन आपनाग मू त्रियो अर भरता करता कम्ब म मोटा नामून नावा छोज्यो ।

मदकमाऊ

वारलो गाव । कूम रा टापर। टाळवा टोड चवडा खेता खडा है । गाय-
मस्या रा धोणा । अँवड रा छेड अर बाछडा रा वगेला चर । कूमटार-
वँर खेजडा रोहिडा रँ विचालँ छाकोटा अँक ढाणी वसँ । तळ मे कूइमा,
पळ म पाणी । डबी सी तळाई भरी हितोरा खावं । बरसाळो बभक लोक-
परलोक री छिया पळकँ । आपरी गंगीली दुनिया म टबकतो फिर, मन
छाकँ नही, पण आज वो उ नँ घुनँ भाकँ नही । दिल रा दरियाव छाला
चनँ । मनडो गहर रा गिरथ पढ रया है । नूव गाणा रा गायबी तथा
राग रागणी रो रायबी है ।

घान सू भरिया खेत, मतीरा रा मावा, साग-सरकारी री क्यारी
जीमणवारा सू मरीर सिब । रागळी करँ अर ताना छड । आपर कठ री
किलकारी मे तरासू भरँ । डील टूटँ अर गरब फूटँ । गगद बण्यो बैठा है ।
मुळक मावँ नही । रूप रो म्हँदरो बरम । वो सदीव सोच के कोई तरस ।
पण आज जी जजमै नही । सुधिया सासरिय सिधावँलो ।

खेन मे सारँ सोना चमकँ, उवँ रो गात घणो गमकँ । चालतो छिया
दल, जकी सिनेमा रील री सीबी-सी मरक । मोवण छारँ मूवँ, घर चाल
सूधार तथा आपरँ ऊपर सागीडो रीझँ । जाण—“म्हँनँ घडगी, बा वाड
म बडगी ।” जागळू धोरा मजेकलँ वगतँ रँ जी मे नँ जाण कठँ सू फूठरापँ
रो घमड घेरा घाल ? ऊगती जुवानी रा साचेलो घणी है । इमो ऊगळी
मडूड आभा कुदरत कया कारी ? वो धोरी सग जगती न आप सू फारी
जाण । मन मन म ही हसँ—“म्हँ ता म्हँ ही हू ।”

बीच रास्ते खेत में खड़े साँझ, जोजाजी बँध'र बनें बुलायो ।
 बोल्या—“ओ खेत आपणो है, या जाणो नी ? घरा सध्या चालत्या ।
 तावडो टाळत्या अर जीमा-जूठो वरल्यो । दफारो हुम्मा, आड-टड लगाय
 ल्यो । पाटोसी हमश अडोवै, चारे गावण रा कोड करे । हण काम छोड'र
 आ दूकसी ।”

कनले बेता सू सध-साईना आया अर कोई पनजी, जोजोजी, काई
 बहनाईजी बबता घणा हरल्लायी । कैण ही गूजरी भाग राखी, कैण
 गोपीनन्द आया । काई आरसी अर इडुणी री फरमायस ल्यायो । पण
 पनजी मगळा नै बडे गरब सू पाछा अँक ही चपळा दिया के—“आपण
 घरा चाल र साज बाज सू सग भजन यान सुणाय'र सागीडा छका दस्या ।
 रोही में काई फोही दाई चोक'र बाका फाडा ।”

साळी माळेली अडोवती रयी । रामी रुसर जा मूती । बाधी बळगी,
 पण पनजी कीनै ही बाता नै पाती नो आयो । बेसी अनजी आपरा सग
 भजनी भायला बुला ल्यायो । डालक अर जीम्मा री जाडजा भण भणायगी,
 पनजी पारवा बोलै । ऊभा होय र गावै । अँक हाथ में खडताल है अर
 धूजै में गमछा । पसेव नै गमछो सू पूछै अर हवा लेवै । बीडया रा मडल
 सना रै सामणै घडी-घडा फक अर खापरा री चिटकया बसावै । गावतो ही
 हुक्म करै तथा सामा फरणावै । जोकी भाषे मिनखा री चळ पैळ लाग
 रयी है । घर में लुगाया री गैमट्टमाचरी है । पण पनजी रै सामरियो
 सोखी अनजी ससू आघूती है ।

तीन दिन रास्या, जका गावण में बीत्या । चौथ दिन सागी मारण
 चाल भीर हुया । पण फुटरापै री बडाई सारी पनजी नहीं, प्यारी रामी
 भळ करती वग । वः इयँ गानरु रूप रा वारणा लेवै अर वारी जाव गळ
 री भरावणा में तो डाढी बँसी बणगी है । पारवी भजना री पोठ थाप ।

दूजी दूनिया में आवसी उजा । जठे काई सागी अर सधा मेंघो ही
 नहीं लाघ । खेत आपरा मा लागै । जका में आवती वखत आला पडोसी
 भान सुणनै आया । उव ने आपर घणी रा गुण चतै आया अर हिडद में
 ग्यान री पारस लुकायो । अतरपट खुल्या, दे धूजी । पूरी रीभी ही नहीं
 के बालम री बोनी आई—

“काई जावा ? फूटरापा या गारो बणाव । इसी कळा अर बोवार चठ पड्यो हे ? म्ह जित्तो रूप जर गुणा रा डळो ह । पारै वाप मा री सुभ्र जका म्हन परणाई । टाबरा रो माईन बाजू , पण ओजू ही सुरग री अपमराया मी घणी हला भारती फिर । रीम अर दाव ही म्हारी माकळी हे । स लेवण सू घर काज वण ता बणै , नही तो चाल घाडी पावलो ही सही । नित नूवा माख जुडै सापजै । चुडलाळो नै घर घर नूतो हे ।”

बाल्या'र बोया । रामीजाण्यो पल्लै वधगी । बमाता काई ठा, काई लिख भाजी ? सारलो मय्यो, आगला जम्या नही । आज रो वरतारो नूडो हे तथा आजखो उळ्ळ्योडो ऊडो लखावै हे । आपरै गाव रा भुरावा आया । पण हम्मै पीरै पाछी कैया जावै ? कवळा दस्तूर मुट्या, छेकड खूटे सू आय'र जुडग्या । मोकळा वरसा सू माईता री ओळू आई । उवा फटरोपै म फस नै लाडेसर वटी नै अठै परणाई । भाई अनू री रीम ही चेत आई । पण कन घंठै पन्नजी पैल्या ही कै नाख्यो कै “थारे तो भगवान रा बेटा-बेटी हे, म्हारै भरासै किसी पार पडे ? म्है तो फक्कड हा, घर बेगी सूका लक्कड हा ”

काळा रा पीरा, कुसम्मा बग्या । पाच वरसा सू घरा दाणो नीप-ज्योडो आखे नी देत्या । 'जळो ही जया'-टाबरा रो जजाल वारकर फिरग्यो । अेक दिन सुक'र आज भीर हुयो । रामी नावडी अर गाव सू परिया कढतै राजा पण पक्कड्या “पाच वरस पीरै रयी, पारो काई घरायो ? आपरी रीत गडका काटता । पदसो तो जागै सुवाडही अेक दियो नही ।”

बोली— “हाना टाबर, सुगारै रो जमारो । सूनै गाव म अेली रा वसवो कैया हासी ? गाव रा आखा लोग आप आपरा बच्चा-खुच्चा धन-पसु अर टावर टीवर साथ लेयर खावण बमावण नै मऊ गया । ये ही म्हान साथ ले जावो । दो दिना सू टाबर पाणी माथे परखा राग्या हे । अेल्या मूना आख बाढ़ै । अन तो बाळवा जागा ही नी जूटै । हाचळ मासठै री वारी वण रघा हे । म्हारो कुप घणी हे ? पण पन्नजी घालो घालो पाछो मुड'र घरा आ मोवै । साल भर रो बाळक वनै आ ऊम अर सून बाप रा बोवा पपोळै । महगी अर मुसकल इसी ये धान रा तो दरमज

ही दारा हो रखा है। मिलगत टक्कै री नही, बाठ तो भाठ सू ही
कण्डो वग। पन जी सोचै—‘जीवडा रात रें पल्ल मही, जाणा ता
है ही।’

सातवो साल है अर पाळणा हुवै। इसी कबत साची है—“जक
मामने म बाप की हिम्मत नो कर सकै मा उवै न आछी तरा पार
पाने।’ नागा उघाडा भाजता-फिरता भरबट वण रखा है। दा बटा अर
खेक बटो। जका वास्ते मावडी, रात तिन फफवी फिरै। जीवण र नाव
डील नी मरी लहाम डारै। धणी विरिया घर रा धणी चेत आवै। पण
आज ताणी किन हो बताया नही। आज भीय नहि नै कंयण बाळी बाठ
ऊनसी है। सुणी है जिसी बता दमी। बटो नै साथै लेय र दाद रें परा
पौच। बटो पूछे “दाता” मा कंव हिम्मतमर बाळा ताममर जी लताटिया
आमाम सू आया है। वैं बठे टाकरा रें बाप न बनार्य। ये आमाम
जाय र पता लगावो। बाळरा रें हिया हाट जा ग्यो है म्हारै सू दया
ना जाय।’

नीया दाता बिरादरी रा चौधरी, गंव रा सिरपक। मावडा परबाडू
पण माना रा ठाकाबड। पद्ममा बिना पाला घर नहा, माटा ताण्ड,
फिरतड भांसी। डाडा भा-भटा मिटाव अर माग सवप कराव।
सरचं पाणी रा टक्को ही घर मू लगावै नही पैता घगय लेव। पनत्री
रें कलूम म मागी बाव। माग। बाप्या—“छारा तरी मा नै पय द-नाग
पन्ना पडी उडाव। हमरै पना कठे? हुव ता जकर परा आव। हिया
पछाही मेल्पा बग। बाणा तिन भट्टे पाको पिकावा अर भीता मुट्ठावा।
टाकर माग हुण्गागी, आमा काड़ा भाग लमी।

मा गोड, माग मार बगबगट कानी छारी करळावग। माग म मू
दाद रो आन्ना नीज ग्यो। गटो मा न, नीं आ। भूसा पया
पनाज,। पन् हुम तिन पुगता मगवार पुठ र दा-कन न नू भयल।
छ गी बाणी—‘ताना मा हिम्मतमर बाण र मदबन पुठ आ। बावन
ऊनपी आमाम म बनाव। दा बरमी पन्ना मिन्ना अर मय बग
दिग। प जाव र मयवगा नद ही पग बनी। उहा ता उरी नय बगट

राग्यो है। बेगा जावो भछे कटे ही रम जामी।" मा-बेटी दानू बोलती-
 यानती फीस पडो, दाद री छाती नी रगी कडो बाप बारा टाबरा रो
 दुख दारो नी गया। बोल्या—“बेटा कैयदे तेरी मा नै, आजकाल म
 कोई चोखो दार दख'र पूजा जासू 'न'सट न बूड प्यारो।' लाघणो तो
 म्हार सार है नही, पण बीस-तीस दिन गोता तथा गवका तो माकळा
 ला आमू। काल सौ पचास रिपिया रा ब श्रोवस्त करू, थारै आषा दिमा
 पाछा जाव घन, जद दे दिया। नही तो बिस्ता वैमर्न पडू? अक दाद रा
 पाना हा।”

दानो मुहाटी गयो अर पूछणो सन् करयो—“अक विरामण, नाव
 पन्तागम, पतीम चाछोम रै माय माय। गाव रिटो सूरलता नीकळ्यो।
 पाच मात मानू सामाम म बाल, साधू हुयोडा बताव। कैणा ही
 देया मुण्यो हुब ता बतावो।’ दादा डाबा टावा डोल अर छैनाती
 विरादरी र लागू स घणो पूछताछ करता फफ। पण टीगरा रा भाग
 जाग नही, पन्त रा पत्ता नाग नही। छेकड जेकदिन सुरास लागी। प नजी
 र अनाणा सिबसागर म अक साधू उघटयो है। दादा गतोरात जा पूग्यो।
 हट गडो म सुगई करणै सूसिवजो र मिदर म ठिवाणा पाया। दा
 जाय र मठ रा बिवाड खडखटाया। अणी अवधूत माय बटा मस्त माळा
 फेर। जटाजूट, बालजूट बिवाटा री भचाभच बाजै। पण माटा भागळ
 खात नही। बठयो ही बूझ—‘कुण है? मरी भगती मे भिजाक पडता
 है। मरि सुलेगा नही।’

दादो—‘म्हाराज जरूरी नारज है अकर सै खालदपो।’

साधू—“बच्चा अब मन्दिर नहीं सुलेगा बल आणा।

दादा—“बाबा, मैं हा मिवजी री भगत हू, साधु म्हाराज री त्रिपा
 हा जावै ता दरसन करत्यू। यथा है।’

साधू—“अरे बाबा। तुम घरबारी लोग कैसे होत हा? पक्कडा के
 भजन म बापा जलत फिरत हा। तुम तो कुछ करत घरत नही, हमारी
 बम-बा को उजाड़ण जान हा।’

दादा—‘साधू महाराजजी सही परमाणी है। पण मैं घन दूर स
 चत्ताय'र जाओ हू। दरसन दिरावा बाप सा।’

माधू— 'अच्छा बाबा ! फक्त पाच मिनट क लिय मन्त्रि खाव देता हूँ । मैं हारा तुम जीते । '

' भरदभट्ट ! ' भागल खिची खट । "

माटा घाळो हुग्यो, दादो भाळो बणग्यो । चपा चुपी बात चौडे आयगो जद दादा बाल्यो— "पन्ना ओ के साग है ? तुगाई रो राय र डिया फोड लिया । टावर अडोकता झीकता आधा हुग्या । बेटी रा बाप साधू ही जे होवणो हो तो ब्याह क्यू करजो ! दम चाल अर अब तेरी गुत्राडी सभाळ । '

नफा नटग्यो । बोल्यो— "भेल नै बट्टो लगावू नही । तपस्या न घूवा चढावू कंया ? थे जाणा पारा टावर जाण । पन्नै रो तो मसारा नातो जावक जातो रया । '

दादो बोल्यो— ' भेल ता माधू रो चोखो पण साधू कीनै ही दुख देवै, आ बात कठै लिखी है ? भेल भगवो राख, पण नातेसा रो जमारो ही पारं दरसणा सू सुधार । भरघरी ता सातू पीढया सारी । मा भैन अर तुगाई नै बराबर बतलाय र भिरया मागी । जेक, दो पीढी रो उधार तो आज रँ साधु म्हारज रो ही फरज है । घर रा ही नही, आख गाव रा माणस सेवा करसी । जागिया डड-कमडल उठावो अर गाव चाल र घूणो घुलावो म्हारज । देस मे पूजी जो परदेस अर परभौम म अठ कुण जाण ? '

बाबै उठायो चिमठो अर भीळो, चढग्यो रेल, दादा रच त्याया गाव रिही म खेल । छेकट तो परचाय'र प नाराम कवा देणो है । घर म बाड लियो तेज काठ दियो, दरसणा वेगी भीड साग रयी है । बाबो फोका, मोयो मूयो बँठो है दादो इमानका कामा म सदा सू सठो है । सतबाई पाछो बतलाय के ' पनिया गाभा बदल र भीटा उतरायले । की मिनखा र टोळ हुग्या । बैरीडा म्हान भाई परमग्या म हेठा मत दिखाळ । घणा ही ठिठ कर दिया । मिनख अर मिनखा रा जायोडो है तो मिनख बणग्या । मिनखा री कंयो मान अर ओ भेल (भगवो) अळगा बाळ । ' पवकड रा आखी छिया अक्कड उतरगी अर घरवारी बणग्या ।

सरजाम जुटाया सत मगत राखी । रामी रँ जी री कमोदणी खिली

गाण बजाणै रे कोढ़ मे पग नी टिकै । पनजी रा गाला कालजै मडघा है ।
 चोराणै सू पाछो आयोढो सौ धन सभाळण-सुणन री घुखण घुलै । आसोज
 री सुवायसी बरमा म् सूकी खेती पागरी । जमानै री पूरी भास बघी ।
 समै री टूटी लडी पाछी सघी । आप अलायदे सूता है, वारी आया सू
 गावैला । पैली कनला गावडा म् आयोडा सतसगी लोग बाणी बालै ।
 अनजी, पनजी सू मिलणो चाव । पण बठै तो भजनपूगै ना बाणी, हसलै
 न घोड़ी ले उड़ी अलाणी । अलख नावो सत है ।

रान भर जायण अर दिनूगै द'रा पालागण । घण भजन-कीरतण रे
 उछाव मे अरयी उठाई अर भजनीक जुलस टुरघो । टाबरा रै फरज अदा
 हूयो । पण रामी रै लामो डकबाल आगी । समो, कुसमो हुग्या ।

बात चाली । बेमाता रो लेख विसरायो । केया भेख सरायो तथा केई
 भिनल मदकमावूणै री खुसर फुमर करता पाणी वारै जा आया । लेख
 मे भेख नी लागै ।

माधू—“अच्छा बाबा ! फकत पाच मिनट के लिये मंदिर खान देता हूँ। मैं हारा तुम जीते।”

‘भरडभट्ट’ ।। भागल खिची खट ।।”

मादा घाला हुग्यो, दादो भालो बणग्यो । चपा चुपी बात चौड़े आयगो जद दादा बोल्यो—“पना ओ के साम है ? लुगाई रो राय र डिया फोड लिया । टावर अडीकता भीकता आधा हुग्या । बटी रा बाप साध ही जे होवणो हो तो ब्याह क्यू करजो । देस चाल अर अब तेरी गुवाडी मभाउ ।

मफा नटग्यो । बोल्यो—“भेख नै बट्टो लगावू नही । तपस्या न घूवो चडावू कैया ? भे जाणा थारा टावर जाण । पनै रो तो ससारी नातो जावक जातो रयो ।’

दादो बोल्यो—“भेख ता माधू रो घोखो पण साधू कीनै ही दुख देवै, आ बात कठ लिखी है ? भेख भगवो राख, पण नातेसा रो जमारो ही थारै दरसणा सू सुधार । भरघरो ता सातू पीढ्या तारी । मा भैण अर लुगाई नै बरोबर बतलाय’र भिरया मागी । जेक, दो पीढी रो उद्धार ता आज रै साधु म्हाराज रो ही परज है । घर रा ही नही आख गाव रा माणस मेवा करसी । जागिया डह-कमडल उठावो अर गाव चाल र भूणा घुखावो म्हाराज । देस मे पूजी ओ परदेस अर परभोम मे अठ कुण जाजै ?

बाबै उठायो धिमठा अर भोळो, चढग्यो रल, दादो रच ल्यायो गाव रिडी म खेल । छेकड तो परचाम’र पनाराम कवा देणो है । घर म बाड लियो तेज काठ दियो, दरसणा बगी भीड लाग रयी है । बाबा फीका, मोया भूयो बँठी है दादो इयानका कामा म सदा सू सठा है । सतबाई पाछा बतलायै के ‘पनिया मामा बढल र भीटा उतरायल । का मिनता रै खोल हुग्या । बरीडा भहाने भाइ परनग्या म हेठा मत लिखाळ । पणा ही ठिठ कर दिया । मिनख अर मिनखा रा जायोडो है तो मिनख बणग्या । मिनखा रो कयो मान अर ओ भेख (भगवो) अळमा बाळ ।” पक्कड रो आखी छिया-अक्कड उतरगी अर घरवारी बणग्या ।

सरजाम जुटाया सत मगत राखी । रामी रै जी रो कमोदणी मिली

गणै बजाणै रै कोड मे पग नी टिकै । पनजी रा गान्वा काळजै मडया है ।
 चोराणै सू पाछो आयोडो सौ घन सभाळण-सुणन री घुखण घुख । आसोज
 री सुवायली बरमा म् सूकी खेती पागरी । जमानै री पूरी आस बधी ।
 समै री टूटी लडी पाछी सघी । आप अलायद सूता है, बारी आया सू
 गावैला । गैली कनला गावडा म् आयाडा सतसगी लोग बाणी बानै ।
 अनजी, पनजी मू मिलणो चाव । पण बठै तो भजनपूगै ना बाणी, हसतै
 नै घोडी ले उटी अलाणी । अलख नावा सत है ।

रात भर जागण अर दिनूगै दे'रा पालागण । घण भजन-कीरतण रै
 उछाव मे अरघी उठाई अर भजनीक जुलस टुरयो । टाबरा रै फरज अदा
 हुयो । पण रामी रै लामी ढकवाळ आणी । समो, कुसमो हुग्या ।

ब्रत चाली । बेमाता री लेख विसरायो । केया भेख सरायो तथा केई
 मिनख मदकमादूपणै री खुसर फुसर करता' पाणी वारै जा आया । लेख
 मे मेख नी लागै ।

झेर झाघूट

घुट्टिया डेबा, बरयक बुवार! बचत बादहो, सगलाणा रो लाडा। मा-
आप रा प्यारो दूज लम्बर छारो। बतल छागटा, टम्बरका करतो
फिरै धिरै। घर गुवाड रा दखै राखी हवै। उसाड पणो सबै। उबो
रागली कर, मरा रु रु रिभा नाख। ठोलकही बूट जद तो गली बगता
रक न्यर भाक। काई रामलीला करै बलावै, भात भातीला साग
घुट्टिया नरै। दरसकारी आतट्या उधल पुषल कर दवै। हसाय मारै।
मजाबिया मर पाट म सली रिगटोला करता मा बाप सू ही नी धूक।
पण लुलनार कीडो साग पुषकारो घान, बाहवाही दवै। बवै—'ई रो
ही नाव तिलधार है।'

घुन्पी अंडा भेला मगरिया अर खेल तमासा र भोका रयात राख।
चीचड मा चड, होठ हाल, आगलघा फरफरावै। गुण गुणावता रैब भाड
भुषाव। दरमका नै जोवै, तुरता फुरत कीं मडचूसिय भिनख रो हसीलो
टोटका फटाफट वनाय र कोकड मस देव भुजनिया बदा हसता हुया 'हाल
हुज्याव। नीद काडण रो नफो लैवता धिल तिसाता आप-आपरै घरा
जावै।

इयै रा बाप इसी नावडयो छार्टे धक न ही नरड नारयो। गोडा देदिया।
सर्व आडू आपर इयै लाडेमर स्याडू, टीगर न मस बकरियै रो जुडत जरू
जबड नै ब्याह दियो। डावडी सटाण डावडी सू परणा सरकयो। घुट्टिये रै
गल्लै एव ओबधू उबागल, भबरक भूटणाळी भीटल बीनणो त्याड कोई।
ओमय्या म बरोबर पण उवा अकूरही रो धन दिन दणो बघी-सघी। चाना,

चवदस वरम मे सासरै आई । धूमडोसी अलग थळरु, अडक मोथी भाळी ।
उण रा मोगरी सा माडा अर माट वरगा पग, दग दग करना धूजरैया
हा । मूढा ओवरा मो जडघो खटघा । उण रै सुमरै घणै बाड फुरमाया-
"वीनसी घारी सामू रामजी रो जीव अर मीटी वाली बाळी दा नणदाली है ।
बास म घनवाळ जाटा रा छाकाटा गुवाडा, उवा रै घरा हजारजिनावरा
रा जेउड जूछर । छाछ ल्यावा चाय दूध, खालो हाथ नी माड । आपा तो
नळ गवैया, पूरी दस्ती सू पर वस्ता अर सामणै नरसती कळा धाक है ।
राजी राजी गायणा बजावणो सीखावटा । तीखो बानणो चानणी
पिछाणा ।" पछै डेंण आपरी आसीस माए दस रो नोट भलाया ।

घर प्रिय, घाटा फासी, घुट्टिय री जबाघ मस्त फजीरी मायै लूण
मिरच लकडी री तकडी गरद चित्या चडगा । भट्ठा भोळ राड उन
फागडा उल्लाड, मस्त मनारी न मार मध करी । पण छार हिम्मत नी
हारी । उवा आलमगिरी जा'म विस्वास सू पहलवारी मे जा दूक्या ।
खेल्या कूदयो अर अखाड दोड बड्या । आप स दूण न उछाळ बाया ।
मिनखा मूठै म आगळी घाली, अचूभो करया । क्या— अरे ! कत्यक
छाळो च भरिया गजब गुदारै । माटा माटा तोगड लडधा न उनाळ
उलटाव । साचो कर दी मोटा देख र डरिये ना, छाटो देख र अडिये ना ।'
जिता मू बिसी वात्ता । काई बात्या—“भो विगाड दिया । बान्धिय
खा दिया छोरै री मलाई रा जार जमारो । मण पक्का पटरगळ म लटका
दिया । गाणो बजाणा मयो ज्यू ही कुस्ती अर अखाडा माल छ महीणा म
गयो ही जाणो । मोटचार रा दत्त जलमस्त चित्त हुबै, जका ही नाम काम
उजाळ । लुगाई टाबरा री काम सू कालजा खजज्य । छारो तो माथाळा
हो, पण माथाळो ढगळ इण न ऊचो हरगज बघण दवै नही ।

दूजा बात्या—“क्यू भूडो भिगत करा, दूजा रा कय्य छडण म क
सार है ? आप-आपरी निवेडो फाडो सीडो ना । पैत्या तो कोई बुरक्या ही
नही, कवतारघा बापणी पारकी सीख के कारकी है । हम्मै बोरा थूक
बिलोवणा है ।' बड बकबोही सुणो वाम जाळा पूरो जोदोरो करया । ब
घुट्टिय न एक बधियै कळाकार रा समाण देंवता । आडोमी पाडोमी उण
सू भारी सनेव राखता । उवै खेतर मे खाली उवो ही नाच गाण रा कळा-

कार हो। सय ताल रो चाखा इम्याम, गूघरा री धमक सू हर किस्म रा बाल काढ'र लोका रो मन प्रसण कर देंवतो। देखणिया सुणनिया सग अचूभो करता। गणेश वदणा रो नमूनो निहारता ही यामला सा चरण धरता सा-यात गणेशजी सामा दीख जायता।

विहद विनायक धिरक धिरक थैई
ताता थैया, थो थो द्रें द्रें
थवाग थुन थुन, दिग दिग दिग थैई

लोग भाठें री मूरती वण जावता। घुड्डो रयाली, मोटराळा सू सध-मैघ जाण ची ह घाली। सुरताल जाणें, जागण जम्मा मे खुस करदयें गाण। तातो तबलची, च्हेरा सा चालें। रग रग हालती रेंवें। ताबड धिन ताबड धिन तिडड धिना तिडड धिना री जवान हरवखत टेर टिर। आर्या फुरें डोल कामडी ज्यू लुळें, नसडी हलाळा खावें। उलेवर लाग तडें खडें खडा ताकें, कदास घुड्डियो सामणें भाक। पज्यो रज्यो। हमामा, गाणा सुणाया, खलासी रो खोरसी सयो अर झट स्टेयरिंग झाल लियो। पण पग वडी गाडी र ब्रेक ताई पुरा नी पाचें।

अरे बाह घुड्डिया। घुड्डियो जा लाग्यो जपर म एक मिनिस्टर री कार सेवा। सिचाई मंत्री री कोठी उणा री कार गाडी रो उलेवर रेंग्यो। घालती रो नाव गाडी। माटा बुम्बोई जा आयो। हम्मै यो कीरें सारें? पाछा आय'र मात भाम रें सेतराय मुक्यालय नैवण लाग्यो। जनना रा हतुला तथा मददगार, धाणें तैमील ताई रा काम सारें। अस्पताळ रा हवो आयें, उपज मडो रा भला पचायत समिति मुळावो, भलाई कोई निजामत, घुड्डियो लाग रा साथे जाव अर लटवारी लुळतारू जवान सू काम पूरा करावें। लापटी सो मूडो चिरफाड मी आर्या तथा लापडी सो तलतूळियो गिगदो डोल सोह दिल राखें। मोटा माटा हावमा सू हाथ मिलाव साथ उठें-वैठें, खावें पीव। चसको हाथ आग्या, ह्याय खलग्यो। डेड दो बरस भ समचें त्रेंसीत खेनर मे खातीलो नेतो वणग्यो। कमाई रो चेनो उघडग्यो। निम्नळा रो जमी खोसी, किणारें चप्पड जमाई, कंया न राव सू ठग्या जर आख दिखाय न डाट पिलाई। सेत घर घिणाय कम्झा, आछा उसटड फला दियो।

हाथ म चीमटो, गळें म रुद्राक्ष री घणी मोटी मही माळा एक दिन राख घाल र आपरें गाव आया । गात्र आळा देख्यो मिंदर म एक फकीर धोक देवण चोक मार्थ पसरघा पडथो है । मिनयां तकाय'र जोया—अरे मुट्टियो ! सागडा कने गया जवा सू पैल्या ही हाथ उठाय'र बाल दिया—“सुग रहा बच्चा ! मालक री खेर है । म्हारें वेगी उण रें घर रा इसा ही लेख हा । खुद हाथ पकड'र खडथो कर दियो ।

कबीर सोता क्या करे, जागन की कर चाव ।

यह दम हीरा साल है, गिन गिन गुरु का साव ॥

कबीर मन तो एक है, चाहे जहा भगाव ।

चाहे हरि की भक्ति कर, चाहे विषय नमाव ॥

उब पाटक दो ब्यार कबीर री साखी बोल दी, बोल्यो मन परतख परचो हुग्यो ।” कनला लोगा हाथ जोड लिया, लुगाया परसाद से आई अर टावर पगे पडग्या । धुट्टियो घेवरनाथ नाव सू पूजीजण लाग्यो । मोटर आळा पूरी साख भरी कयो—“पाच साला सू बराबर बाणी गावें, जत-सत स चालें । कुण रोकें, माघा-सतारी सगत कर । हुकम हुग्या पट खुलग्या तथा भवन बुहारें । म्हारें स्टाफ तो इयें फकीर री चाखी नाक निवण भाल राखी है । साख सळीटा सटघोडा तो सड्कडा रोबता आया अर हसता चलता गया है । म्ह ता इयें रें सरण ही बया । स्टेरियग हाथ भरता ही नावो लेना ।”

एक टराइवर वाल्यो—“राजा-जागी, अगन जळ है भाई । अं घणी प्रीत ही नी पाळ । एक दिन म्हे उतावळ म 2856 नबर वाळी गाडी नें बिना धोक पाधरी स्टाट कर टोर दी-ही । धूर्ण रें रस्तें सू सो पावडा ही सरवया हुवाला, इत्तें नें तो भड भच्च भचीड बोलग्यो । टायर पिचर हुग्यो । धिक्काय'र पाछी ल्याया, परमादी बोली, जद सागी बक्क, चैयें मार्थे चाल'र जातरा पूरी करी ।” खने खडे खतासी कयो—“अबकें एक लूलें पागळ नें म्ह रुट री बस मे नाख'र बावें र सरणें ल्याया । धूर्ण पोचर धोक दिव्वाई पट पग ले लिया । दवकी बूदतो पाछा मुडथो, सागळा सग साच परच राजीखुशी पाछा ठिकाण पाँच्या ।”

बाप आसू भारघा, मा करळाई । वेटा साधू वणग्यो, जी म नी रयी-

सोराई। खन गया घोळा री गरम वेगी खोळा म ले लियो। कयो—
 “वेटा आपणै घर चाल। छोरी कूकै मू दाज, म्हारा बोदो जमारा डाढो
 लाजै वगा सा भेख नाख।” धैवरनाथ मार कान मे मारी फूक, बोल्थो—
 “राजरी दणदारी चनो चाढा लाखा री नहरी सहरी जमीन भेख मे हाथ
 लाग। कडू कूडम्ब रो तकदीर ऊघडै जागै। रोवता कूकता पाछा गिड
 ज्यावा। माल उटावू चिलमा पक्की चोसू। फाज म भरती थोडो ही
 हूयो हू ? मौज मस्ती बैठो गल्ता मारू दफै हवो अठ सू। सटकै र डणनी
 डेणियो खुरडा घमता घरा आवटया। मिरच रोटी खाय र सूता जक
 दिनगैताइ सत्या ही नही।

गाव रै भोत बार रोड जोड री जागा, राज कुम्माणो वास वसाव
 है। बठ ही स्कून अर घटैई अस्पताल, गावा नै खाली करावण वेगी पाळ
 काटया है। कूमटा काट जर बारटया वाढ, पण मटो बानला सूबो
 चौगान पामा, माडिया दाजै बैठा है।

अगवा गाभा जट कट काळा दुमाल घाटो, तूम्बी अर तासळी।
 हिरणिय री गोनी ऊपर हवै जिया ठोडी माथै मूडूमो री वूजी सा थोडा
 साक बाळ तथा एक कच्ची डटा री साळ म मिर घसाया गाळमाळ गट्टो
 सा एक पटल पट्टा साधुडा उचो नीचा हव अर मामली सडक न घडी
 घडा दख जोव। आर सी पी री जमीन, मीला रा वाडा बाकी घाळा
 रूप बडी वत्ती वषकी जमीन माथ लपचेनुवा रा सालची बबजा डाढा
 करी ज्योडा है। निवजी, हडमानजी गागाजी रामदवजी, जाम्भोजी,
 जमनाथजी, हरिराम जी सत्तापी माता करणीजी रर काळका माई
 जैडा मकड दवी देवनावारा धार्मिक बबजा नै देख र भेख घारी माथू ही
 अंडा बाज करण न जमघट सू आ धमक्या। पाच पाच पट्टा जित्ती जागा
 घेरली और घर बोला वणा बैठा। राज रा नोटिंग मामला चाल्या अर
 हर आदमी न बबजा उठावण रा करण ओडर बन्धा। अफमर आया
 पण माडिया नी उठधा, साव नटग्या। धैवरनाथ अगडी स सू आग आयो
 अर चोमटा बजावा। बोल्थो—“अख निरजण निरावार, जमीन निमकी
 ससारी बावार। बदो कुछ तो खुदा का खाफ रखा। फकीरा को भी
 वमन दो।”

स्कूल रो भवन वणग्या, कमठाणो चाले । मजूर चेजारा लीपे-पोते, सिमलो सुताई करे । जाळणा चढे, कब्जा लागे । आखा कारीगर खावा-पीवो तथा सोवा उठो, उठ ही करे । जाग-सजोग, एक रात छात माथ सुता बीमा मिनळा म सू च्यार जणा ने काळ भगवान आप र काम छाट बुलाया । सापा किमा मनेस । मणक मणक आधी री कोमळी सख-चूड आई जर च्यारा जुवाना रे गजव जहरीला चपकिया सा चेपगी । गहळ म उडक उड्या, जी दारा हुवतो बतायो । भागूड आग्या, बठ हक्या । दुवा दारू रो भाजा हासड धणी करी, अळी गई । लवर लागग्यो उव मोहल्ल सकडा अन् चाळो छाग्यो । कदेई कोई पटवारी, कणाई कोई सनार, आज्याव घबकै, वैरणती द ज्याव धार । जाडखो हवै जका ऊरै । साचा ओखद लाग ज्यावै, नही ता ऊभी चोटी ऊम ग्वाड जा पौचै भगवान र मोट दरवार ?

“माडा कर मलार घरा परघा ऊपरा ।” एन दिन सिङ्ग्यारी, उवै वास र सग माधुवा सैल सतसगत करी जर नोजा पिस्ता बादाम घाल'र दूधिया भाग घुटाइ । माय न जूना ताम्बाळा गोटिया पइसा घस्या, धतूने रा बीज रगड्या मटका भर'र छाणी अर गडवो गडवो चोसी । रात सू भखावटें ताई गाई री बिलमारा नाट सा चाढ दिया । धूवै रा कुरळिया उपाड नाह्या । नग मे धुत्त, धेवरनाथ वावळी बुत्त वणग्यो । माडोसो बोल्हो—
“अरे पीगी । वेगा मा घरे पुगावो मावडी सू तो मिल तू फीटळी पीगी । डव्या आवै, बठ हकै, धूक सूक । जीप ल्यावो, जीभ खव । उतारघो भव, सनाळो कबजो, कदास प्राण बचे । गाव ले जाय'र डाक्टर न बलावो ।”

मूरज री उगाळी, जीप आई । गोरीघण चप्पड चूधी आट्या सू चमकी उठी । पेट बुझाँट माग्या, भगवा पूरिया खात वगाया । चादा बरवाडी बोली, गाळा र भूकण सुणाया । कयो—“भर जाणा कमाह्यावो घम नीप जालिया बीघ म बीस मण गहू ? गिरणी खाव, किमी धामळी पीगी ? भाग पियोडी लागी । ढागी ।”

डाक्टर कया—“ह्रस्वणो परेव करे, ढोली आळा सखण-नमरा दिखाले । इ र तो सखचूड नेड कर ही बन्धोडी बोतो ।”

कोरो झुठा पडघो, दखा देखी मरघो ।

ਲਕੜਵਰਧੋ

ਸਾਵਲਮਰ ਵਾਸ, ਐਕ ਲੂਣੀ ਸੂਕੀ ਭਾਸ ਤਧਾ ਫੋਟੇ ਨੋਏਂ ਰੋ ਰੇਵਾਸ
 ਮਾਧੋ ਜਾਵੇਂ । ਕੋ ਕੀਕਾਣ ਪ੍ਰਦੇਸ ਮੇ ਬਿਗਸਾਵ ਰੀ ਦੀਠ ਜੋਤ ਸੂ ਓਜੂ ਅਲਗੋ
 ਅਰ ਅਜੂਕਾ ਇਲਾਕਾ ਵਾਜੇਂ । ਥੋਛਾ ਚਮਰਾਦੇਂ ਪਾਸੇਂ ਪਛਾਲਾ ਛੇਨ ਅਰ ਨਹੀਰੀ
 ਖਾਣਾ ਪੂਰੁ ਖਾ ਕੀਕਰਿਆਲੀ ਓਦੀ ਪਤਲੀ ਹੁਰਿਆਲੀ ਆਪਾ ਮ ਐਮਡ ਆਵੇਂ
 ਪਣ ਅਠੇਂ ਮੁ ਦਿਲਖਾਦੇਂ ਏਏਂ ਇਲਾਕੇਂ ਮ ਪਜਾਬੀ ਪਣ ਰੀ ਪਛਤ ਜਾਵਕ ਨਡ ਨੀ
 ਲਘਾਵੇਂ । ਇਧੇਂ ਰੀ ਤੈਂ ਸੀਲੀ ਤਾਲਿਕਾ ਮੇ ਧਾਰਾਣਾ ਓਟਾ ਓਟਾ ਗਾਵਣਾ ਬਸੇਂ ।
 ਲਾਗ ਮੀਧਾ ਮਰਲ ਅਰ ਨਿਸ਼ਕਪਟ, ਓਕਾ ਅਣਮਧਿਆ ਸਾਦਾ ਗਾਵਾ ਰੇਂ ਕੀਚਾਲੇਂ
 ਆਜਕਲੇਂ ਕਦੇਂ ਕਦੇਂ ਫਾਲਤੂ, ਫਰੇਬਧਾਰੀ, ਸਾਧੇਂਗਾਰਾ ਧੂਤ ਲੋਗ ਹੀ ਆ ਧਮਕੇਂ ।
 ਅਠੇਂ ਰਾ ਲੋਗ ਨੀ ਜਾਣ ਸਕੇਂ ਕੇਂ ਕੇਂ ਓਟਾ ਰਦਲਲ ਖੀਲਾ ਹੈਂ ਅਰ ਕੇਂ ਆਪਰੀ
 ਕੋਦੀ ਕੂ ਅਰ ਗਦੀ ਬਾਣ ਸੂ ਜਨਤਾ ਸਾਧੇਂ ਪੈਸ ਆਵਤਾ ਬਕਾ ਨਲਾ ਮਿਨਲਾ ਨੇਂ
 ਸਾਗੀਡਾ ਫਿਡਾਵੇਂ । ਪਣ ਓਧਾ ਰੀ ਸਾਸਰਬਤਿ ਨ ਬਧਵਸ਼ਥਾ ਅਰ ਅਧਿਕਾਰੀ
 ਸਕਾਸ਼ ਨੀ ਸਮਝ ਸਕੇਂ । ਕਾਰਣ ਗਾਬਡਿਆ ਮਾਧਸ ਓਕਾ ਰੇਂ ਧਾਲੇਂ ਰੀ ਪੂਰੀ ਪੋਲ
 ਹੀ ਨੀ ਲਾਲ ਸਕੇਂਕ ਕਿਆ ਏਕ ਪਲਮੋਡਪਲੀਨ ਆਪ ਰੇਂ ਕਰੀਦੇਏਂ ਮਾਲੀ ਪਾਨ
 (ਓਪਾਧਿਪਨ) ਰੇਂ ਪਾਣ ਕੂਡ ਰਾ ਕਾਮਣ ਰਬ ਰ ਭੋਲਾ ਮਿਨਲਾ ਨੇਂ ਫਾਕਮੀ
 ਰਿਸ਼ਵਨ ਸੂ ਰਲਾਵੇਂ ।

ਸਾ ਕੇਂ ਜਿਲੇਂ ਰੋ ਨਾਮੀ ਜੂਨੋ ਗਜਿਟੇਡ ਹੈਡਮਾਸਟਰ, ਭਾਗ ਜਾਗ ਸੂ ਕਸ਼ਤਰ
 ਰੀ ਹਾਪਰ ਸੈਂਕੜਰੀ ਮ ਆ ਪੂਚਧੋ । ਨਾਕ ਤੋਂ ਮਕਡਦਤ ਪਣ ਲਾਗ ਬਾਗ
 ਕੀਕਲ ਕੋਲਿਪਾਲਾ ਦਸ਼ਤਲਤ ਦਸ਼ ਰ ਲਾਰ ਸੂ ਲਕੜਵਦਤ ਕਵ । ਕਧੂ ਕ ਅਧਿ
 ਕਾਰ ਮੂ ਸਡਧਾਡੀ ਆਕਰ ਮਾਧੇਂ ਹਾਕਮ ਰੀ ਧਾਕ ਮੀਠੀ ਓਕ ਯਧੂ ਮਾਧ ਮਲਪਾ
 ਅਠੇਂ ਆਧਾ ਕਡਧਾ । ਆਪਰੇਂ ਲਾਰਲ ਕੀਲਾ ਕਰਸਾ ਮ ਇਧੇਂ ਮੂਮਲ ਰਾ ਮਾਰਕੇਂਦਾਰ

कबाड़ा बिघोड़ा हा। शीकानेर जिल मे ही नही, श्रीगगानगर अर चूरु ताई री स्कूला य बापछा मास्टरा अर चपरास्या री जिनडी बरबाद करी बताइ जावै। भणनिया असख चतर अर स्याणा टाबरा न घूस मिले बिना फैल करचा है अर गिजा गूगिया लाबरा न टक्का अठ'र आगली किलास मे टरकाया चढाया है। ठाली बैठ्या इसा कबाड़ा री कथा आपरै दोस्त मितरा न सदीव स्वय सुणावो कर। गप्पीबाज कदेई खाती, कदेई सुनार पण कणाही आपनै गुजर गौड बामण बता नाखै। अर दूज र पसाब पढता ही मामळ नी राखै। पाठसाला मे आवतै ही उव चौथी खेणी रै कमचारचा माथै रोव गाठणो पळा दियो। बारला मास्टरा रा अेकू अेक बडर इसा घणा घूसखोर घाघ दखणोडा, हाँ मे हाँ मिलावणी पळा लीनी। सा'व' सा'व' केवना आग सग आखा आछी माडी पी जाया करता। सारै रू लक्कडदत्त कवता रता।

लोग बात कर—

“दत्त कुलछणो जीव, इसा मिनख सस्या मे नी राखणो चाय। स्कूल मे धूवा काढै अर टाबर बिगाड।” साची है—बारै रिपिया री बीडी अेक रात मे बाळन्यै, दारू मीट यारो। भार मे हमस इग्यारै बज्या भुठ। उव रै भुठण सृपली चपडासी बीडचा रा बडल अर इडा रो कटर बन ल्या भेलै। दो बडल अर धाणी रा डोल पाखानै मे राख देव। सा ब साप सो सूसावतो फूफावतो हाथ मे सूत्या री डबडी लिया बड अर फारिंग होय'र आवै, जस नै फटकार बीसो बीडचा फूक गेर। पेट हलावतो पाडा सो अेक बज्या दुपारै, रोज रो साळा पोचै। विद्यालै रै बारड री दोरी सोरी अेक फेरी गडको मार'र दो बजा देवै। चपडासी रो ल्यायोडो खानो खावै अर बीडी सिलगाय'र घूस रा हुकम काढै। चार बज्या घरा चाल पडै। दूजा रै भरोस स्कूल चलावै। दिया वत्ती र टेम आपरी जूव'बाज मडळो घरा बुलावै। भजलिस जमै। भाल री चिलमा चाल। चादी बण जावै जद सुलफिया यार बिसन पडै। जार अर जुवारी जमै तास रा पत्ता खीच। रात रा दो चपडासी फुरवा लगाघोडा हाजर रैव। ठडी नी हुवै, धुवै रा गोट भूपडै, रात काळी हुवै। कदे बदे काई

घपडासी भाळी भाळी नूई आयोडी अध्यापिका बाई न ही परचा ठगाल्या बाई । जेडो चडो बिलिया तोड, नीला तो लक्कडदत्त री घणी करेडी है । मैणा री बात, आखी साखी समेत जीवती माखी मिट'र रैवणो पड । घणी काई कवा ? पीचोडो हुवै जद घर री वैन वेटी तथा वेट री बहू न ही जा भाल । बापडो जोयड घांवा घूड नाम्बती खल्ला मार'र आवरु अवार पण अटल मँफिल लीला इणा री अंक दा वज्या घखास्त हुवै अर वो बागदो खानो लेवै । या ही हाकमी हर रोजानी चर्या है ।

बुरे मिनख री मतळव राखमी रगटा भगडा करणिया कुमाणस । जेडा राखसी कदाडा क जका नै दख र दूजा मिनख डरता यका दरसणा सू ही मूढा लकोवै । राखसी जीवण बुराई अर आगण अपणाण सू वण । बैया तो आगणा री काई गिणती नी, बुराई री कोई सीमा नही, दुनिया म अँक सू जँक बघर बुरा माणस हुया है अर ओनू लार्थ । पण केई बुरामा इसी है जका माय आचरण कर'र वो कुजीव राखस सू ही वत्तो बुरो वण जावै अर नरक नडाल्यै ।

जनाव दत्त समँसर नी किं नमचारी न भुगताण दरावै अर नी साची तरक्की री सिफारस कर । हक री छुट्टी मसाण दवै कोनी । अनुसासण राखणो जाणै नही, कोरो चमचा मू काम काडै । छात्र बँफिकर खुल्ला घूमै फिर अर आचाय री अनुकरण पकडै । प्यासा भरै अर बडळ काड, पास हावण रा लावा लूटै । आपसी बाता कर—'पढाई म काई घरपा है ? अक्कल तो गुह री नकल छूट म है—जका हैडमास्टर ने दाम नाम दिया मिलसी ।'

एक छात्र बोत्यो—“अरे भाई ! काल रात रा अँक ट्रक बीकानेर र पो हैडमास्टर जी उव म स्कूल री माकळा छटवा समान घणखरो आपनै घरा भेज्यो । मनै बलाय'र क्यो—‘पाम होवणो है तो प्रयागसाळा सू सामान ल्याय र ट्रक मार्च ला ।’ म्है उलातर मेल्याडी दो बडो जाजमा तबला री जोडी, बिटरी कमरा, गस, ताम्ब री माटो बळमा, बत री थुरस्या, चार बडो बाळटपा इत्याद चीजा आधी दलया ताह डोय र सादी ।

दूज छात्र क्यो—“साळा ! तू भ्रिस्ट अर चोर है । साळा री सारो

सामान रातू रात लदा दियो।”

पैलडै उयळा दियो—“थे किसा सचला हो ? हैडमास्टर रै सुगलै पखाडा रात्यू हाडता-रोवता फिरो।”

परिधा खटा आखा छात्र अकै माथै ही बोल्या—“आपा नै तो पास होवणो है भाया ! फोल मत उघाडो। परीक्षा नैडी है, दोना दीना सू जावाला। घरवाळा बेता रै कामा लेजा दुकावैला। चालै जित्तै चालण दयो फोल पटी।”

पोथी पढनो आतरै अूमो अेक छात्र हसर वाल्यो—“भाइडा ! धा जाणता हवोना भेडियरी जात रो अेक जगली जिनावर हवै। जका कदे बढ रात रो गावा म जाण्डे अर घरा सूता साल छ मीणा रा छोटक्या टावरा नै उठा ले जावै। हिंदी वाळा उवै जिनावर न काई कव ? वो ही आपरळो तकडो साव है। हा ! जनता हयै रा नाव राख्यो है लक्कड-दत्त, जको दत्त री जग्या बग्घो लग्या साल आना साच है, क वो विना कारण ही आपरै मातहता नै मारै वर कर। ‘आप कबोला कतरोक वर ? म्है बतावुला बेहद ! आप भळे तूमोला पण बेहद कतराक ? म्है कवुला—आप काई तूमो, लावा म या वानकी अेक ही है। ममलन अेक-अपसर अडा हव—जको आप रो काज छोड र दूज मिनख रो काम बणावै—वो दवना वाजै। दूजो—अडो हवै जको आप रो काज ही बणावै अर आगलै माणस रो ही सुधार देव—जगती उण न मिनख कव ! सीना—जडा हयै जका निजू फायदा करण खातर दूसरै दुरवळ रा काम नस्ट करैर मुकसाण पीछावै—जगती उण रो रागम नारो काई। चौथा—अडो हवै जको आपरो तो कई लाभ नी कर सके पण बढळै पारवो तो बुफायना कर ही नारै—धा बाचणिमा मिरदार बनावाला क उवै लटै न काई कयो जाव ?”

लक्कडदत्त री दुसमणी अेक कुदरती कळा है, जका म भूडापा, मूर-खापो अर जरीनो जोस-नसो भळक। कुवाण है—मरीज मर जावो, “हावा री लुगदी वण जावै। पण दत्त बदा आपरी बाण सू हगगिज वाज नो आव। निलाबित करावण म, बाज सोट दिरावण म जर दिनमिम रै आदसा सारू आपरा अधीनस्थ लोगा वेगी रात दिन बागजिया कळा

कर अर पितिया हौ थासितलियानो रेव, मरे पचे ।

पूरी सीत्री नो आवै, सागण वारता मुणो । छ साल पत्या लारल गाव रा कारनामा मिर निया त्त मावळमर आघोउव रेनावै भ्रिष्टाचार वभचार ग छप्याडा पैम्फलेट पाय वठ रा छात्र से ठूक्या अर अठ छात्रावाम रा टावरा नै वचाय र भडका निया । छात्रा हडताल कर दी । पण तिनमान र फर मू एव भला मास्टर दत्त री गिडगिडाहट र चक्कर म आग्या अर स्टाफ मिटिंग कायम कराय र छात्रा ने मदरसे घाड निया । दत्त अर आग्या मास्टरा स्थानीय जाण र उवै जून मास्टर नै हो स्टाफ सचिव चुन लिया । कलासा सागगी अर भणाई सरु हुगी, दत्त रै लोही धिर आया ।

काजळिया काज चाल्या । कुम्हारा सू माटक्या रो कूडो मोल बूकण गी रमीद वणाई । दपनर रै स्टेशनरो मामान री कीमत सू दसगुणी भर पाई कग्वाई । फरनीचर अर भवन मरम्मत रा बिल दवाई पाणो तथा जात्रा भत्ता री रकम मजूरी नी । आपरा इया कामा मे स्टाफ री सलेरी रो ध्यान समेसर कदे नो धारयो । आपरा वेतन बिल जुदो वणाय'र पास करा मगावै पण लारना पडो कूब म । सचिव आप रै पद रो त्याग पत्र पेम करयो । दत्त मफा इ कार कग्गा दियो । पण स्टाफ री वेतन कूक चालती रयी ।

मिगरठ, सराख अर जुगारया म जमयो । उवै छात्रावास उठा दिया । डर भा, सराधिया बादल सा खिडग्या । मणबसि बगग्या । सचिव देख्यो लक्कड रंग वळवा लाग्या । जार रा अत्याचार अर परपीडण वो सचिव अपना नी मक्यो । मौनवण र मफा मास खीच लियो । मेज माय मुक्को बाजतो मुण्या "रगड दूगा । रगड दूगा । सबको मजा चला दूगा ।" एव हरिजन लिखार बाबू नै सार्ग रळाय'र कवाडा पळा दिया । यो जद लारल कमवै सू सिवायतो तवादल रै दाब मजायोडो आयो, बूडै गडक ज्यू दातरी नेवना । हम्म घारको

खडका धमका मुण र सचिव दफतर म जा बढयो । दत्त बरस पढयो अर बोल्यो— 'सबको देख लूगा । मैं ।

साठा सो सूमावतो बोल्यो— "मेरा बोई क्या बिगाड लेगा ?" दारु

री तेज गिघ सू सचिव रो माथा फूट पड़या। देख्यो उवै री आख्या खच रयी है। दत्त बोल्या—“मैं प्राथमिक क्या पाठशाला का माइना करुंगा, निरीक्षक जी नै हमारे नाम ऑडर भिजवाया है।

सोपो ही नी पड़या। धार। खोर। हाकी हाग्यो। सचिव ही लागा र भेना भाज नीर हुया। जागै जायर भीड़ मड़गी। हैड वहनजी रै क्वाटर मे रोवणै री मुवाज आई। माथलो नूटो, दा जुवाना कूद'र जोयो।” “लकड़बग्घा है।” बारै खडो भीड़ नै बताया। अेक जण आपरी रिवाल-वर ताण र पूठो उयलो दियो। क्या—“किवाड खोल र काठो-आवणदयो खनम करा। गाव मे क्या हिलग्या। भले कीरा ही टावर ले जासी।” गुनी झालर मायनै सू दिखलाया के—“यो तो टावर लेजावणो मासर नी, लुगाया पकड़णै वाला बुमाणस लकड़बग्घो है।” सा'ब री सूरत जायर आयोडा सर लोग उवै रै मूठै थूक्ता थका आप आपरै घरा टरया।

सुहागरासो

सगळ्या रें मन मावें सदा सूनू उवरी भाळप अर नामरदी री कूडी साचीं माख छायोडी ही। घर घुसिया डरपोक, वविस्वासी अर जोल वठर खावण-वोणें बिस सभाया री उवें री बाता गाव मे ही नही, दूजा गावा मे ही जा पोंची। उवें रो मन सफा कारपाण, हरजगा कुढनो कापतो रेंवता। एक अलवेली बाण बणघट रो डील हा उव रो। डरू फळ, अकेली कुवारी छोरी री तरिया हरेक आदमी ने दखना अर पछ उवें वन पोच्या दान् हाया री आगळ्या गूबर भट पाछो नीचें नाखतो यको पणाम क देंवता। जद आगला मिनख ही कुमल समाचार पूछ लेंवता।

गर्ल मे माता जो मँरुजी री छालो एव मूरता अर देवता चारा फूनडा पंग्या घर री पाळ अर आगण बीचाळें जावा-जावो करतो रवता। गळी म कोई ओपरो अपरोला मिनख दीख जावतो जद खिडकी री चारी पाठी जद लेंवतो या भाज'र मोडी रा निवाड बद कर लिया करता। फळमें मे बड'र कोई नूत पाताळो हेनो मारता तद उवें मिनख नें आळव'र ही-ही ही हसता हुया हकारो भरतो। छेकड जापरी रटो रटाई बात बालतो अर मोटें सरवजाण आदमी री भात उवें नें चनर समभावणी री चेस्टा बनावतो जानो—' भाई म्हारें चार जावणियो पुण है ? माजी ने मोगन है अर मन पलेट भीठो गावण री डाव घर री सागीडी मनाही है ' वेगीसी बात बनाव र मुद भागें टुगता। आपाड नें पाछा टोर रेवता अर पोळ री चारी ममडक बग्ना यको माडो जडपें री घर लालमा म आसतो आशता भाज'र माजी नें आखी कथा रता दिया करतो।

वो पोपलमाटी, लघडा, अर ढीलो ढगळ सो थूळ मथूळ ढीलाळ घनवनो घणो ढीकरो , ऊन अर बौछरडो नी लाडेसर ढोल हो । लीवर रै मरीज री टानिक दवा गोतल रै ठकसी ऊडी-सूडी , इनलप रै तकियै ज्यू लघ पथ भिचनो-उभरतो पेट तथा थूमडे याग माग भुक्क्यो फिरता-घिरतो । गोळ बोरियै री गुठली सो गुदली आख्या, कीडी नाळसा छीदा पतळा दाढी मूछ रा माळ, जवा रै मरदानगी नसै माथै घरा आयाडा लुगाई टाबरा मू मुळक मुळकर बगनी बाता किया करता । नाड उवैरी जलम धूटी सावै थोळ र पायोडो हो । घणोसारो खिलानै पिलानै बगी खेव री मा-दादी अर बाप इत्ता घणा नारा करता, जके आप भूखा मरता आख दिन र जाया करता । पण अई लाड रै पाण ही वो घणा घणा माथै धरतो । प्यार पुचकारणा र वखत उवो छेकड रोवणै तकात रा ताणा-बाणा बुण नैवतो । उव सग 'लाडी-लाडी' करता, जद वा माया सूजाय र मा दादी नै हरामजादी अर गड तार्द रा सबद बक देंवतो । बँ मूडे मे कवा दावता जद वो उवा रै धूसा मारनो जातो । छेकड कोई उडलो पाडोसी उवै न डरा घमकाय'र जीमावता तथा घर परवार मै घोडी ठड चापरतो ।

घोडो बडो हुया—माईता, काज्या कुम्हारा री एक दो बहू बटया न उवैरी धरम सैण बणा दी ही ? लघडै रै बावळवडा मे की कमी नी आई । माईता मदरम तो नी मेल्यो, पण विद्या देवण न गोमती हूड-धाम्दणी नै घरा ही बला ती-ही । मा घणो घणो जीमावती-दावती रयनी । लघडो आया काढतो मीचतो बिना मन गासिया गिटतो जावतो । मा न मरज्या तू मरज्या बवतो हुयो वणावटी विस धोलतो, गाळा ठोकतो पर मा बिना इयै र घडी मरतो नही । सग मनावणा भूतावणा मा कन चटी करावती । मा मिनट एक ही अँवलो छोडती नही । बो विलडो सू ही डर, अँवला बारै पग धरै ही नही । मा री मजबूरी, एक आख रो के उघाडै धर के मीच ? च्यार घरा बीचै आख्या देखण जाग एक ही तो औलात है । बुलियारा मार्त जद ही दबोम्या राखता । उवो नित हमेम खेलण री जीम करता । वाम रा टाबर ही बाळ सुनम हेत मू उलळ पुलळ आवता । पर लघडा डफोल लुक लुक'र बिवाडा रै बिजोवला माखर देम्पा करता ।

दादी आर्या री सेन मू कूडो सुवाणन रा साग भरती । मा वारणै आया बाळका न 'जावो जावो' कैय'र पाछा तण्ड काढती । बाप अँडी लुकावणी बाता स डाढो राजी होवतो अर खम्बारा करता बीडी सिलगाय'र नचीतो सो जावता । इस तरा लघडे माथै घर वाळा री पूरी देख-भाळ निगंदास्ती चालती ।

कमलो वैद्य घघे सू ऊघो, टावरा मे बैठे उठे नावडो रुधा । लवडे रँ माईता नै बतायो—“टावर नै ये खेल प्रवति म राखो, घराडियो मत घणावा । मदरस मेलो भणावो-गुणावो आपणै इयँ कुवर रँ डर भोरी प्रथो व'र रयी है । डाढा फोडा घालैनी । म्हारा मनाविग्यान है, बाळक नै लुकाया राखणँ सू डरोक हुज्यावँ जको सुभाव जीवण रँ अदरुणी स्वास्थ्य रो भयावणो वैरी हुव ।”

दादी बोली—‘घणा भणा गुणार म्हा न नौकरी कोनी करानी । माठर थोडो ही बणाणो है । यो तो सेठ वणसी अर माठर जिसा मिनख हयँ रँ लार फिरसी ।”

कदे कदी लघडो माल घावण वेगी खुदत्यार हो जावतो अर हाया जीम लँवतो । कवतो—“हम्मँ जुवान वणना है नो ? दिसावर री दुकाता म्हारँ ही जामनै ऊभी चाल । बापूजी तो माचा पकडग्या, पण म्हँ खा पीयर मोटो हो जावू अर वेगो सो बठे जाय र धूवा उपाड दस्यू । मुनीमडा गुमास्तिमा री रटका कडा गाख सू ।” इयँ बात सू घर वाळा घणा रानी हुया करता । दादी खोळ मे बैठवती थकी थुषकारा नासती-सूण गठडी बाधती तथा सिरमाथै हाथ फेरती । एक बार जडा खगदा हुयो क लघडा एक भाजतँ छार लार घर सू बार कटग्यो । मा दादी नारँ भाज भोर हुई । बाप हाफना सकडी र ठेगँ लाघडा दे जाल्यो । वो मुनिया लपाड आगली गळी मे छारा री खेल देखतो लाघ्या । मादा रँ जी म जी आयो । वो ही तो घणो राजी हुयो । उवो गूग साड लाटेसर पाछा अँकला घरा नी जा सक्यो । उवो पाळोवड गग्य हाट नटकाय र आर्या पाड लक्या । भळे ता वो बारली बाता घरा बैठे ही गुण दग लिया करता पण धूजता डरता बार कद नी कदतो । दूजा रा टावर तरमना, पण उवँ सदर्थ रँ अग्गाण पग्गाण भया मिस्टान पग्गा रळता-रळता क वाप र

लाखा रो लेखो ? दूसरा टावरा नै माटी रा ही नी मिलता पण उवै वगा सोनै चादी रा रश्मतिया पगा म बडता गडता जद मा दादी मेला करती मेलती । वो लाहेसर उलाडो उवा रै हाथ सू खोम'र वगा दिया करतो । सूवै मैना रो पीजरा ना हाथा उठाया फिंगता । वो ऊन नही, घण लाड काड सू वोछरडो बग्घू वणग्या । होळी दिवाळी उवैरी घरम बहुणा मिलण आवती, नौ-नौ ताळ कूदण लाग जावना । उवा नै बूरी रो घली खोल'र धिगाणै खुलावतो । मा देवारी नाक निवाण हाथ जाडती, गैणा सिराणै मेलती अर एक आगळी टाळ र ओट राखती जीमती । गुवाड में लोटी ढाळती कुन्ना रै रोटी राळती अर घरा जायाडें मिनख रा पग चुग'र लूण मिलाती थकी चूल म बाळती ही । मडै म राख री चिमटी, सिलाड ऊपर बमूती रो टीका, पितर रै नाडें घाक दिराय'र लघडै रै मगरा रोजी नै थापी दिया करती ही । उवा आखा दिखालणना, रात जगावणी अर भोग मतपाई जैडा टूणा टसमण तथा माकळा टटपज पूरा करती । दादी पोस माथै हर हमस टक्को पइसो फेर'र बारा रै छारा नै घाटती । इस तरा लघटै री खैर मनाईजती ।

एक दिन लाहेसर लघडै चादी री ढणी एक थोथी चिटकाली चुपकै स आपरी कुम्हारी भेण न सूप दी ही अर कै दिया—“बताव नही ।” बात रो ठा लाग्यो जन् घर रा सग मडचूसिया डाठा राजी हुया । बहनडी बापडी उवा चिडी पाछी दवण लागी घर वाळा सफा नाटग्या । लघडै हसत मुळकत भाटै माथै पटकर टुकडा कर दिया अर बार करणा दिया । पर घरवाळा उवै नै जावक नी हुटकार सक्या । वा दादी रै घणा हज, उव नै बा रोज रिप्पड देवती अर घर म सोनै चादी री बूरेडी सिलावा रो बेरी बतावती रवती ।

चादी मरगी, ढाल ढलगी । बाप घटता पूरा कर हो । उवै रै ब्याह रो जमैवार पुराणियै मनीम रो बेटो वण्या । नदी कराडै रुख ज्यू बाप लामा हुया अर लघडै रै ब्याह रा तेटो आया । उवो पळगाड नाव सुगता हो उछळ पडयो । लोमा री घोडी अर हवणी गाईजती आपरै वारणै आग नर फडती उवै घणी विरिया सुणी मुणी । उवो मा रा घणो लाडेसर अलील सुवारो वहडसो टोघड ब्याह रै कोड म सागीडो ल्हाड वणग्यो । पर बनडो

देवै । उवा देवी खफसेड कुशल लीपे-पोप, कारी कुटकी कराव अर देवता
रम जिसडो घर उघाड देवै ।

‘सुहाग रास’ मरदानी महिला, थूळ मथूळ घम्माघोडो कागज हाथ
बसू करे अर सामा वाल्या घणी रै थप्पड घरका देवै । नाजर नाव रै रज-
नाच, घर रो आखो जटवर पीवर ले बडै । लघडा नार आपरै सागी घर
अकलो रवै मूखो भटव फिरै क्यारी ल्याव अर काई वस्त्र वणारै ? हाथ
कटा बैठो । घराडियो, की जाण न वूझै, डरू फरू हुयाडो डबकै-टाल ।
काईकर ? टावर पणाळी लाडवाळी आदत्त दुसमण वण र फाडा घालै भाळ
रै “यीली कुण छोडै ? छेकड बैक री जमा पूजी रक्म रा हिसाब अर
परदस री दुकाना रो काम, सासराळा साळा तथा साढू मिल र साम ।
सूत सार, चूनो चाडै, केठा कीरा पग वाडै ? किण रा बाधै ? सरब
तैराताळा, भण र नाव आखा लुगो तुगो ले लग । घर पकड लेवै, सासरै
रैवणो चावै, पण पीवरियाळा सारा छाडै नही । लोगा म लघडै रा भाळा-
पणो, डील अर मूल चौडै आ ज्यारै । सुहाग रासै उलझा पडग्यो ।

मूळी री गूग

मही ! मल्ल री भीड ! भात मतीली दुकाना लाग रयो । चौवटे मे बा ओपरी छिया जिया ऊभी । यणी अचपल्ली हस खिलै, डोळा काड, आतरै कभा माणसा सू छाटा लेख । पूछै जकान लटकै सू डकरावै । कव—
जा रे । रस्तो नाप ! धारै जिसी केई पाबूटी पढी देखी है ।'

फीकी लाली, तीखो सुरमा तथा पालम प्या'र मूढे टीकी-गळिया चेम्पाटा हा । उजास सू तिलाट आपता टघाड खाव हा । पला र लायाडै वधिया पाउडर सू थोवडा थथड र चाखा रूप सजा आई । सादी साडी ओडी मोठा नकली बाळ राळवा भर हरियै 'लाउज री मराड म गूजरी घण बढी । मोटै चौकाल सोन री चूप चढायली, जके बढई मूढा दिखाळी री सामू सू मिलियोडी ही । मात्मा जडो इदूणी माथे चौकणी नागळघोडी घडकली भर हुवा हालती उवा सामी लटछ लुगाई भरिय बाजारा हाट-माठ जा जमी । गैल वगता चौक'ना हुया, टावर गुघाया तथा मही रा मिनख उवक'र खडा हुग्या । डोकरघा डरी छाकरघा चिमकी भर पलदार खडा ही तिडकी जग्या । लोग लपया, हाका हुया, तुळ माचग्या भर कोट पारम ताई खबर जा लघी । बाना रा गडाछा गूजरी री गप्पा, लाग बाग रीभग्या, नितक नी कर सक्या । बतळावण करै दूध रा भाव बापी । उवा कव—'दानुवा वखता रो टमाटेम पुगा देमू भर सतवाडै रे हिसाव मारु पइसा लैसू । 'दुरगल री दाभ,' घन पसवा समत केनाळ री कराड घास पाणी सारु चौडै चौगान बँठा हा । काळ जाळ सू भुलसी-ज्योडा काद रोटी राजी हा । सात दिना सू बेसी री उधार पासावा

नहीं।' पण लोकी लबार, उनें खुनै पडताळ पूरी करणी चाव। काई के मूनणी वडघोडो है, काई कवै भाड अर कोई रह्यो बतावै है।'

सैनून सारनो होटल मू कड र हाफोज्यो हेमो बाजो आयो रर आख मुचाय र गूजरी नै तकाई। ओळवी, वोनती सुणी बकारो कडघा। "अरे बा तो देवै भायाळी बीचेटडी छारी मूळकी गै ली मर।' कठ सू चाल'र आई बजो है? सुगा, माया सराव हुग्यो, जका पुन वग्याडी वावळवडा करती फिरै। परणार्ई पत्ताई दो टाबरा री मा, कीरै सार? कमाइ म्ठी, सात भारा लाग। पण सासराळा सै मरग्या के? है ही मर्दवाळ। बार क्यू कडण दवै? आपणा फरज घरा ले चाला। बचारी र बग री बात थोथी है। जुवाईडै नै बला र समझा देस्या। परणीज्यो है ता इरा बदाबस्त राख। म्हानै भळे हेठा क्यू न्हिलळ? बाजुगरी छोट? परण्याडी लुगाई ती गावा गाव, ठिट करती फिरै। का माईता नै बजा'र सूप दस्या।" डोकरै हाथ भाज न मायें सू मघली उतारी अर बाल्या— 'मूळकी घरा चान। त नै तरी चाची बुलावै।" गूजरी संधरी बघरी ऊभी रयी। बचपण रो नाजो सुण्या, अमली चेत आई। टाकै र काक रै साग हायली। ठीक ठिकाण जा बठी।

गूगा हुमो मिनख खराब भायाळा बाजै साफ मनरो जर भातमा ग्यानी। बा जेडी साची दिखनी जर शोभती वाता रिगला खलकाब जका सू सुणनिया लागारी रग रग राजी हो ज्यावै। भोळो गूगा ब्रह्मग्यानी आपरै अपराधा रा हकारा टाबरा नै दरावै। पण उव नै काई फोटी मांडी बात री उलटो सीख देवै तो मानै नहीं तथा खुलजा व सो आप बीती सुणा बोकरै।

मूळकी मन मन मुळकी, पण काकी आग कूक पडी। उवा कैयणै लागी "काकी मरळा जानी तीन गावा मतडा खाय'र आयाजददेवारा म नाव सू एक कोम कस्व मे अस्पताळ रै कम्पाउंडर री रोटी सकतो। सफाई र आखें खोरमै माफन दम रो महीणो पावता। जूनै वखत री जाण बावळिय र जाळ सरकारी अस्पताल रै पाण राज री नोकरी वगगी। घुरप-नायद ठाटियो ठटग्यो। म्है म्हार बाप नै भाडै बुहार तथा टाव-ठीकर, वासण भाटा घावण-माजण म पूरो स्टारो देंवती। पण ठाली ऊभी

गळी वगणिया सून आळ अठवा ही तर नेवनी । मदर्म जावणिमा टावरा
 री वून वटा दया करनी । भगणिया छारा वून चूचना ? उव मन दाननी
 दाननी करता चना चिहावता राज जावता । म्हारा दान माटा माटाना
 दूजा नै हाटा रें पमवाढ लटकता दीमता । पण माटा निरळज मिगन
 ह्यहा हा व आपन एक मा ब री स्याहजादी समझता । नाग बाग, भूटकी
 नाव म वनटावना, जोर नी चालता । बारल गावा रा लाग बेमार बमार
 नै मफासाने लायता वा मून मन घिना माग टुकडा टुंग मित जना ।
 घटावडी जवान हुगी, वूडें राय वगनी फिरनी त्या खेवती । पें रण वगी
 वगा पूर पल्लो ही माग-नाग नावनी । म्हारी मा ता बाप मून अलेई गावडे
 रवती । आपरें व्याह रें आठ वरम पछ उरें किनी वून उडे रें मून सुगनिया
 व ' मूटकी रो बाग दागी अर होण ओलाद, आपरें बाप दादें रें गाव म
 हाडा मून वूटोज रें मडघोणे हे छोट छिटकाया । वा मान वरम री टांगरी
 न मन मघाळ घटाम र जिल न वाळें पाणी, मर जावहया । ह्यकारणा
 मून उपा नाग्या मूवा पन्था अर चाम वाम जमायनी । म्हें आवरें कमत्रगी
 हाडे गाड डिनाळ पण घटिया अक्कल जुवानी आई । वया धिगडावता
 वया बन्माना म्हार डोल टाळा गटाया । जिगी वमीणी हरकता मून म्हें
 उबळ आई । मरदानी बाछरडी बाग, घपावू गाटा ठोकती । घण मून
 राटा भगडा लाट्यावरउव बारण एक दा मन मेलुवा मून मुलाकात नणा
 घणी पटी । पण नारी पण री ह्याळी, जाण नी मकी व ' लुगाई जानरी
 सुभावी भान मरदा मून जुरा हव । वा उपा री बरोयरी म हरगज नी आ
 मकना । माटियार बतरा ही उलाडपणा वगा, वाइ वध घट कुण वव ?
 पण सुधा लुगाई वापडी अक्कली खडी किणी आपन रें समे की वदे मून बाल
 लेवें ता देखणिया चट मखोल करणी मर वर देव तथा तुरत छत रो
 पनवा कस भनाव' मन अेडी घणी नाव जादी उपाधी वकमीज्याडी हे ।
 म्हें पानर ववत ही कहीजी— राडनी रा छारा विगडे अर राटिय री
 छोरी ।' वाह रे म्हारा आध विमवान आळा, भेळ भरिया दस लखदाद
 भूटमूठ लुगाई जात न वद वतावणिया मिनस ही अठें चाखा गिणीज अर
 थारी उतळी वूस मून उपजोडी मा मंणा न मूड तारवखानें ज्यू जोदन ।'
 काकी साचें— हणें मळकी मन री साफ हे । लुगावो छिपावो जावक

नी राखें। उवा बीती बाता माची माची बतावें।

“क बाण जोगडो म्हारा सुभाव ही टाबरपणें मे सळ्या नी रयो। सागी बापरो ही वेंणो ता कदी मा यो नही। तादिस्ट उठावू विसन घणालियो। कम्पाठ-डर रें घर सू चारी रो टक्को पड्मो पच्यो भर माटा डादा ताणी हाथ बध्यो खच्या। पी एम आ सा बसफाखानें री निगराणी बापा, रात नें सूता री हाथ सू घडी खोल उचका लाई। ब्रं अठीनं उठीनें दख हारचा, माटा अफसर की रो नाव लेंवता। ठानी डटा सा घडा सुनो हाथ लिया रेल चढ्या। तार सू म्है फटकार घडी रा फार घडा कर नारया।

एक दिन ह-चाज रें कुवाटर मू टाबरा रा कपडा काढ लाई। कपा उडर सा'ब मनोरलाल सि ही लवडघक्क। कया—‘मूळकी एक घर ता डावण ही छोट्या करै। प्यारा चारी भर पीरा दगा देणा कद सू माच्या? और ता हुई सो सग गई करी, पण पी एम ओ सा'ब री घडी उडा जेव म धरी। तू छारी म्हारी निजरा सू सफा गई परी। बेटो रो जमारो घणा लाजै। उवें नें लाणत लाग बाबळी। म्ह तो थार बाप तार टाळो कराजा, उव रो उछाव बधावा। पण हीणपण री बाता पुखता चौडै आवै। उव नें कं दिया—‘देवा धारो काई उलातर घर सोघवै, राज रो कुवाटर खाली कर दे माया।’

बाप, बापडो म्हार परवाडा रें नित सवा ओळपा सू मागीडा आखतीज्यो। मनै फेरा देवण री फिराव म फिरणै लाग्या। उणा री भाजा ‘हामड देख न मनोरलाल थोडा मोळा पड्या, घमग्या। पण म्हारी सुगली बाता रो जिकरो काफो बघ्यो।

एक दिन जात विरादरी आळो एक वनलो आदमी मनै दखण न इस्पताळ आ दव्या। ठा लाग्यो के बाबलियो म्हारे व्याह रो बात करै।

दोनू धणी एक धधै, सगा वणनिया रा पशा रळ मिळ्या। घरा आयोडा रो नाव रामूजी, उवा म्हरे हाथ सामो र्छप्या छापरा झलाया चायो। म्है फट खास'र खट मानरें जा ऊभी। बचारै देवणिय री जाडा चिपगी। बाप बताया—‘थोडी वोछरडी है।’ रामूजी बयो—“थोडा दात ही मोटा है?”

उरतो सो बाप बोल्या—“चोकाळें रा च्यार ऊपरला दात, थोडा'र थोडा बढा है।’

उवा कया—‘किमा गाव यास बर्न ? रूप तो वेमाता रो दियोडो है।’

बाप गिटगिछायो— ब्याह ता इयें आवतो पीपळ पुसू रो ही राखा, अपूछ मावो है। टावर मोटा है, म्हार चौकीदारी आळा सासा घत।’

रामूजी बोल्या—“पारी वाई रो काई नाव है ?’

बापू बत्तायो— ‘मूळकी ? म्हें सुण्यो, सिर म डाग रो सी लागी।

रामूजी कयो— ‘म्हारें डावडें रा नाव डेडरियो है।’ दानुवा रो वरनी वरडी वाली मिनाण खाया, म्हारें जी मे जी आयो।

नंदा मावा घर रो साफ सफाई पळाई। बाप मन वतलाड। “मूळी।

म्हें काढाई वाली—“हा बापू।”

‘अर छोरी। आज तेरी मा आवेली। सार्थ भाई बहून ही हासी। ब्याह रो खुसी चौगणी वध ज्यासी रीत नय बत्तावण रा फाडा नी रैवै।

“मा’ म्ह घण अचूमै सू बोली—‘ बापू थाने ही दरया जाण्या न मरे बापू मनै पाळ पोस'र मोटी करी अर थोडा आकडा ही सिखा दिया है।’

नही बट्टी काल तेरी मा र आवण रा सागू समाचार आया है। उवें नै तरै ब्याह रा ठा पड्या अर भेद भावी रीस रास न छोड र चानगी है। दपारें रो रल माथे साम आवण का लिख्यो है। म्हें छुट्टी माथ हू। मनारलालजी रै जरिये जास्या अर ब्याह रा समान ही उवा र भरास भेल्लो करस्या। दिन कठ ?

ब्याह हुवा, सासरें जाइ। लाड काड रा पाथा घेड, गाट उपाड चाड दिया। सुसरें ही नही, दाद सुमर ताई रा पग पकडार्ई हुई। निक्का सू छल्पाडी कापळी म हाथ धनाया। ताम्बाळा पडमा गोठिया रै सवाप रुपिय रो हानो नी हो। बाही बाय आळी जजमानी चाकरी घूमनी निजर चढो। वे आपर बाप दाद रा गाव छोड र गुवाहवा रो काम करण वास्त उत्तरादन आयाहा हा। पण मोटघार च्यार आकडा सीस्याहयो दिल्यो जको गुमास्तागिरी नै पग फावो। म्हें चारा रो चाटी माल'गनी अंकरण

में ही जाणगी के ई घर में तो आ इती जीवती जड है, पकड़'र जरू भान लेणी चायें ।

सोपो सणन-मणन हुयो, सासू मन लारल छपरिये म सुराणगी । दडा छट खुत्ती फिरयाडी म्है राडघट में आयगी । पण थोड़ी ताल म पति देव बरोबर आ विराज्या । बोल्या—'सासरा है । नूवा नातेला लागे सू आछो प्यार-प्रेम जाडणो ही जस रो कारण वणै । पण घणी लाज ही की कार री नी हवै । म्है भट समझगी—'अर या तो लपरै लखणा नाडो, मुरगी स्हारो फस जासी । सुख अर मोज भजा ! पैलखो काम आयणो मुणतो रो घरणो है खुत्ता, का अक्ला रेवण रो जावा जवावणा है । बतलाई, मुज'र अपूठो बठगी । बोली—'छपरिया म नीद कीन आव ? म्है ता कमरा में ही बिना परै बंदी नी सूनी । इयें घर म अठें क्या रया जासी ?'

बोल्या—'घर कीक ? घर लारल गाव म रेंग्या । अठें तो सिर घमावण नै दो टापरी जमीदार सू भाग र लियाडी है । म्हारै माथें मकान दख' ।' म्हन म्हारै अचूक निसाणें सू सतोप हुया । सुन्या—'भरद कित्ता चाछा हवै ? सगला सू लड भगडें ना, मना करे, पण लुगाई नकर कट्ट रें जाग ही नाड नीची कर लवै । बदे नी जूझ सकै । साबो कूडी सुण्या जाव, बुरकै ही नही । बिलडी चण्या रवै ।

बोल्या—'हम्मक नीकरी जावतो घने पीरें सू सीधी सायें लेजाम अर बठ आपा कम्पनी रो भवारटर लेय'र रें लेस्या । घर आळा म्हलीण अठें किंसा काम कर र ठारें ? उणा सगळा नै पाछा गाव तगड देस्यु ।'

म्हार सामबजी एक घर रा दो घर करधा, साथै सगळा रा मन ही चीर फाड राळधा । माईता नै भरभाय'र गाव बानी फाड दिया । म्हारो भाव फोर बदळ'र मैम राख लियो । बापू री सीख लेवा दवा पलाईज्यो । म्हारो भाग जाग्यो, राजस करण लागी । सागीडी बूझ बूझाकडी बणगी ।

घणी ही म्हारो कोरा सरोड ही नही, साग बचकूकर छटल है । उवै र कैवर्ण सू आळा पखार जापरी जसमभोम रें गाव सायल सरिये गया परो । रविय पडस री काठ-पोल में अंकर तो बहालै साम आळी जमीन

दोरी-भोरी उणा नै ही बेच नै चेरा साथे काम चलायो । कई साल पड़धा भरधा । मरता-मड़ता राहू सू जेवढो घसता रया । पण अंस भळे सुसरो म्हासने मागण आ बैठो । जद म्हारळें बाप नै ले साथ'र चारळो जुवाई गया उवा खने गाव अर और पइमा लेवणिये लोम मे उवा बग्मा री चेचेडी सागी जगा जमी रो पाछो घणी आप वण बठो । म्है ही भेली ही । जमी वाळा जोर जचायो जद माया मू जाया ठोक्या गालया रा मूकण, घर रा गिण्या न पारका । सारा म्हारे सू डरता घरका करता भाज वहीर हुपा ।

बबज बेगी वठे ही घोडा काकरा अर इट लाघग्या । म्हा, था म्हाने लाय'र चेजा पळा लियो । बडे भळे पाल्या जद बायेडे रे अलावा म्हारा बाप राजतेज ले चढघो । लोगा अचूमे सू कया—“धूक्योडोचाट लियो ।”

बाकी, बखान बोचाळे ही मूळकी री बात बोट'र बोली—“मूळी हम्मे घणा दळिया न दळ । म्हारे सू चाई छानो कानी । घापी लोद अर जादा गूग वावेरण सू ही थारो दिमाग खराब हुयो है ।” सागी नावो मुण'र उवा की सहूर जाई, जजमी ।

बोली—“बाकी मेरो बाप ही स्यानियो है । उवो ही ओजू संग माणसा आगे मूळकी नाव सू बतळावै । चाई हवै दात बडा है तो, म्है तो मेम माफक साजबाज, मूढा उघाडे, गुलै गुदा बाघे मंडम डोल डोल हू । थारे पगे पडू—बाकोसा नै कै परा'र म्हार बाप मू मूळकी नाव बतळावणा छोटाय दे । पछे देख म्हारो दिमाग किसोक हवै । रीस्ट बळू, लडाप राजी रैवू । लोगा मू लगन'र विगाड दी । मने थारी जुवाई जाणै, हाथा माथे धुकाव अर मेम मा'ब-मेम सा'ब कवतै रो जी सूकै । जद मूळकी नाव कैयाडो कया सदै ? सागी बाप रा ही मूढा ताड नाखू ।”

अंग्रेजी अनुष्ठान

घाल रँ एक खूण म बँठी डाकरो जापरँ बटँ री अंग्रेजी पढाइ रो असर चिनारँ कळवै—“की सून लकखण बानी, पाघरो टोघड है। भण्यो है पण गुण्यो नही। इत्तो मोटा लडघो हुग्यो, कुनडो भेलो खाव। विस्तुट जर धाय, साने बटावै। पालाजद कँवै—‘आ तो अंग्रेजी जात री कुत्ती है। ताट वेवल रँ कुत्त री सामण पड पोती लम्मी नाव री कुनटी है। रिस्वत रा दा हजार बाळया जद हाथ लागी है। हजार नफे रा देवण खातर मोरा भळे घणा काढ। हेली री इज्जत बधारण बाळी है। बग बडा डाक्टर अर जज घेरा घालै। दखण आव अर लेवण ललबावै। पण म्हान ह्य न बेष र किमी भोळी लेवणी है। म्हारे तो या बडी मानीत है। लामी आरबळ अर मीटी मत्ता लम्मी रँ ही प्रताप सू हामी। भण्यो गुण्या रा म्हारा कुत्ता कुत्ती इष्ट देव हवै।’ सगाई पताई रो क्वा ता सुण ही कोयनी कवै—‘म्हारे तो बलब ही गिरस्थ है। ब्याह रो बाई बाळा? अंग्रेजी स्क्वरती में नित नवा ब्याह है।’ जळाय-जळाय खावै, पट-बूट पर है अर बडिज्यो बग।” मोखे बँठी मायड आज री भणार्ई नै बिसरावै अर भवर नै स्याणो करण वेगी भरुजी नै मामो नाव।

भवर आपरा नाव हाफे ही फार लीना। वो जापनै विलियम बतावै अर ससू मोटी गिणावै। आवती जवानी, जावती अक्कल अर आज री ऊधा भणार्ई उव नै सामीडो आवो घणा राख्यो है। वो आपरी सूहागण भागण मा न ही राड कँ नाखै। बाप र बतळाया बटका भरै। बठरँ पैसाव करणा ता भळयो रँया, गडबडी न गोदी लिया, खडो ही खत्ता पेरघा खावै।

“सूट रो गाठियो अर नाव पसारो।” आठवीं दमवो ताणी ए बी सी डी रा केई आकडा मीख र बडा अलाहो अर उडग बगडा वण रह्या है। कुनडी भार्ये दोनडा मिनत्र राखे । हुवाव धुवाव नही ता नौकरा रा फून पाठ दय भूवा अर दादी ताणी भीठ हाखै। उवा र जामा, भाया अर काका नै ही कानी छोड। घर म माकळा जणा है, पण इमे मू टरता स रा जीव जाव। माऊ उवे न वनत्र मू राकणा चाया विलियम ललडा गुरराया— ‘देखा मम्मी मैं जा काई काम करना है उमम तेरा डिप्सीजन विलुप्त नही चाहना। माता पिता न अपने सुगानदक लिए पैसा बर दिया। हम भी उमक लिए स्वतंत्र ह मना करन नमी कौन-सी बात है?’

आज जाठ बज्या रात न विलियम वनत्र र सग साध्या माथ अग्रेवा डाम करती। घणा मिनत्र लुगाई मिनत्र खासी पोमी अर खुल्ला हुम बालमी। जक बेगी विलियम रा मन दिनुग सू दबक्या कूद। उव मात्ता नै आपरी सारी बाता बना दी है। क्यू क बिमारपणा कडता यका कुलछ पण माकळा देवता जावै नी।

बाप समझार मिनत्र। छोटी जनेऊ घर। पूजा पाठ करै अर घरमात्मा बाजै। मा हाथा पावै गाव, घोव माज अर करडी उछतारै राखै। घटे रा लाड-काड कर। एक ही है। एक आख रो के मीच अर काह उगाई। बागा र भवरै रो अणकिया कर कुण? पण अकूरडी भार्ये घडणा चाव नही। घरा माकळी मान मत्ता, पूत गिदी रो गदेड वण। गुवाड र पाडौमी अर हाली बाळदया रै कणै म हालै। मा एकलियो हार (सिंघ) बणावै चावै, पण पूत गादग रा खात्र काडता लापरवा मीज कर।

मिथ्या विलियम माठा पाच बज्या विना लाया ही नौकर भू स्कटर बार कडा लेव। उव नै जाज जमीरी फक्कन रा डवा आवै। कदेइ साल पैला वनत्र बगत्र रै वनत्र प्रोफेसर साथे बो अग्रेजी डास म एकर स गधोडो हा। नाम र लुगाया रा जापमी मुह मिल बब्बा, मल बाघ घालेडी मुवाळी अर खाटा गिदरा भार्ये माथ गुटना पडना विथ नै घोखी तरा चेत हा। हमै कळयुगी जवानी रै पलडे पगोथिये खानो सरकतो स्कूटर रै हेंडल न हाथ धानै—“गुड इवनिंग, मम्मी।

“जीवतो र बेटा ।”

फट्टण फट्टण फट फट करतो फटफटियो तुरत उडतो धनो अग्रजी डेरा र ओळें लुक जावें । विलियम नै डाम रो कोड लागरियो है । मा बधा बधाओ मिध करा जिमा सब्द कैय कर, ही जठे ही बैठ जाव । उण रो कैयाडी सीख सरगम ताई चाले नही ।

“यू आर नाट वार्किंग फास्ट विलियमSS ।” एक मैडी जवान लुगाई रो उवाज आई । विलियम मे थोडो चेतो वापरघो । पग भारू हारधा, धाजा सू लारी चाला । नौसोखीयो विनियम सरमावै घणो हा । धन, जोवन अर ठाकरी मिल्या पछे विलियम जावक बावळो हाग्यो ।

नस मे चूच, पसवाटे गुडग्यो । फुरणी बाजी, चेतो मुडग्या । आधूणी मम्यता आभा, सूपनैली लागी- मरी लम्मी भूखी मर रही है । मैं अब इस घर म नही रहूंगा । सजे सजाय मजे बनव के मिवाय कहा हैं । घर म मान क गहन और रुपये हैं, वे सारे मेरे हैं । खरबूगा, धाऊगा, मुझे मना करन वाला कौन है ? डैडी आल्डमैन, मार्केटिंग क्या जाने ? इसीलिए स्कूल छाडकर फ्रिडचयन वाले मे आया हू । पढ़ना है न लिखना, फकत मौज कर लेनी है । मम्मी मैनी बुडिया, जल्दी से जल्दी मरने वाली है । रास्ता साफ हो जायेगा । नौकरा का हटर मार मारकर सीधे कर दूंगा । मेरी प्यारी लम्मी प्यासी मर रही है ।’

मुभाखा हुयो, गडकडा आया, बनव म रात रा एँठा पडधा बासण रडभडाया । माग्या उडाई, मूजे चाटया, बाको नीचिग्या विनियम रो फाटघा । गासन रा चिबळयोडा पडधा टुक्का लेवण लट्टा जूटघा जद उवै रै गाला न माछरा चूटघा । फट! पडापड थप्पड खावना धनो उठ बैठघा हुयो । पलव रा आखा मिनस उठ उठ र आपर घरा जा रया हा । सल्लर मिगिया सा बढता उडता खल्ला खामेडा सा धुधी निजर आ रया हा । गडका आपस री मे करा घोरका, विलियम न सास आया जोर बा । बा सपन में रीस बलवो आंख मसळना सूका होटा सू बरडायो—“मेरी लम्मी! अम्मी ।”

विलियम मारै जीव री जडी, बुळ री लडी री ओयता सुमेर, जानने पणा स्याणो मानै । पण सफा सरळगठ, आडू अर ठोठ ? आदम्यां सू

आगणो भरयोडो रैवै, वे भाग्या रै हाजरी सू तार कुण जावै पण विलियम रो सुभाव सग आकरो बतावै । घर मे बडै जद लाग बाग, एक पग रै ताण ऊभ जावै । पाणी, दूध, चाय, दाळ भात, दही-भापड सारी वस्तुवा त्पार राखै, तो ही विलियम कोई चीज सरावै नही । कोई रो एक दा कवा लेवै अर पाछो मुड जावै । मा नै रोजीना डाट अर हाटल रै खाणै री बढाई छोट । कुतिया नै वन बैठा र छवाव अर भळे भौत भान मुलावता वारै जावै । आव जद लम्मी लम्मी करतो ही आवै । पण कुतडी आज नाउं-भौं ही घर मू कडणी । सुतवता री सैल म उतावळी हुवाडी लम्मी मामली मडक चढगो । च्यारा कानलै माल सू लदघोडा टुका रा हाण बाग्या, मडकडी गुमी वैरी हुगी । बीच म आगी अर चिमणीज'र मरगी । कचूमर कडगयो । विलियम रो नौकर लम्मी लम्मी वरनो लारै भाज'र धाया पण सिबही रो सनाण लाडयोडो मडक पर लिदरडो ला'या । हाम उटग्या, होलियो मूडजग्यो अर माईत मा मरग्या । खाल काढ लेसी, हाड तोड दसी, डरतै मरन घरा जाय र मा न कियो । मगला रा मूढा उतर गिया ।

मठाठ र मीठ म डबल रोटी खाइ । होटन सू तिरपत होय र घरा मूढो सिफळिया सा नेय'र बावडघा । रात भर रै धाकेलै सू पिगतो बडयो अर रिडयो-पिडघा सो मावै गुडग्यो । पढता ही घरू मिनखा नै उदास जोया अर विलियम पूछ'यो—'क्या हुआ ?'

। "कोई नहीं बाल्यो ।

भळे गरज र कैया—'बोलते क्यों नहीं?'

जद धूजतो सो बाप बोल्हो—'तेरी लम्मी भर गई है ।'

विलियम समझग्यो अर हाठो म ही गुणगुणायो—'मम्मी !

वन खडा तमाम मिनख घणा डरवा, पण बात भरमा नरमी मे ही दब गयी । विलियम मम्मी भरनै रै भरौस म राजी खुशी सा रैयो । लाग री घोडो जी जग्गो । अगाडी मोड'र पाछलै पौर उठयो ।

सिध्या रो पौर । मराविया रो जोर । हम्मे जाय र ढील जावक हळको हुयो है । कसाळा चड अर लम्मी नै बुलावै । पण लम्मी बापडी आवै कठ सू ? वा ता कालै ही टुक मू किचरीज'र सरगा सिधार गइ ।

विलियम लम्मी हाँलै नौकर नै धमकार पूछयो—“लम्मी कहा है ?”

नौकर—“उवा तो आपनै बताई नी—कालै ही माटर नीचै दव'र मरगी।”

बोल्यो—“मम्मी नहीं ?”

अर हागर ज्यू अरडायो—“हाय लम्मी एऽ।। मरी अम्मी ए.।।”

मा आसू पूछनी माकळा रुपिया घामै, बाप दूकता गाळा ठोके। पण विलियम रोवतो रूँव हो नहीं।

कवै—“फादर मेरी कुतिया मर गई, मैं भी जीवूंगा नहीं। मरना एक बार है।”

समक आधी रा पाढीमी राळो सुण'र भाज्या आया नै बूँयो—
“आ काई तिगडो है ?” विलियम नै कुतडी खातर रोवता दख र घणा हस्या अर बोल्या—“गडक मरघो, घर रो एँठवाडो (जूठन) गयो। कोई दूजी पाळ लेई। रोवणो भल्ले क्यारो है ? सग मोहल्लै री नीद बिहार दी। माईत ही भिनखा रा मर जावै है।”

बो'या—“माईत मर जाते तो इतना रोना नहीं आता। मम्मी मर जाती काई बात नहीं थी। पर लम्मी बड़ा धोखा दे गई है।”

भल्लै-मल्लै री चुधरै

लुगाई नगत हैडमास्टर जी डब्लस नही, तिरवल चौबल एम० ए०, पण मोती री मा नै पूछ्या बिना पमाब नो अतरै। म्हारो अँक सगा-साचो जोरु गुलाम, साख पात अर सग घर कामा मे टक्क मण पीसतो फिरै। तीजी म्हारै अँक जलमस्त तथा दिलदार बाई, उवा जीजाजी सू सागीडा हीहा करावै, घूपटा अुडावै। इया सगळ्या नै कदे बदे देखण रो काम पडै, जद म्हारो राम ही पप्पुडै पोत रो दादी नै जीकार सू बतळावण री जी म करै। पण जब काळै बरस, अँक मिनिस्टर रै धर रो घारो देखण रो म्हारो काम पडायो। उवै घर री अधपढी मूडै चढी, तकचढी बीबी आपरै धणी नै बेपरवाह तू ता करती थकी नाक चणा चबावै ही। देखी मिनिस्टर वापटा दूज रै सामणँ बीबी रा हुकम पोख हो अर म्हारी फाटेडी आम्मा सू आत्मा री लपटा न सवतो गुणँ गोखै हो। म्है मन मन मे ही अँक लाक कंबल रटतो हा के—“गाडी रो पाचरो जर बियडायस लुगार् रो चाधरो भायो हो चोखो।” मिनिस्टर जीमे कटै हा अर मनँ बतावण चावो बीबी सू आपने अलग तथा अपरोखो। पण म्हँ चोधो, चारा रो चाटयो पैल्यासू ही जाणँ पिछाण होक मिनिस्टर री थीमती—घर लिछमी री या, स्पाणी पुराणी सदा री वनळ है। दूबळे मरद री बीबी नै दख-मुण र म्हारो मन फाट्यो। लुगाया रै नेह सू सफा हाठ्यो। पप्पुड री दादी रा इमा भाग कठै हा के उवा थकारै सू बतळाई जावै।

आज री राजनीति मे मिनखपण (मानवता) रो चुणाव वोटा मू किया जाव। जको मडाणी जिसी भोळी जन सभ्कृति सारू भूधा पळाप।

नै अेक साडी री खरीद स, स रैवाला सदोव खातर खरीद राखै । घर री बात, माण अपमाण कुण देखै ? आपरें इलाकै मे तो भलजी, सिंघ री खाल ओट र नीसरें ।

हम्मै बाप अर बटै री भली मूढी छत्तीसी-सेवा लाक नै सामी दीखवा लागी । पैनढी सरळ सीधी अर भलाई अरी । दूजी दोरी, दगबाज, कुबधकारी । मलना अणपढ बूढो, पुखता पुरख जनता रो खुद मनो हिमा यती । भण्यो-मुग्धा भरलो जम्मवारी-अजाण, मूढ लाभी, लाकी नै चक्कै चूघावणिया, जकै रै काभै कामा बडा उपयाम लिखो जा सकै । इकात्तरें रै चुणाव म मागीडा गाघा अमून्या । काम करैर ता पदर वरसा मै का । ठारया कोनी, कारा लुगाई रै चेला न पाळया पास्या । जनता भलहै नै हा जितो जाण लियो । अपरमेड मे जावण वेगी घर घुसिय घणा ही तरळा हाफळा लिया, पण ताव जावक खाई नही । जद पाछी अठ ही ढोल मे पोल बजावणी पछाई । नूवा च्यार चुनिदा उम्मीदवारा रै माथ मच्चोडा बाघो मिला'र खडो हुघा अर पुराणो पापी वाज्यो । रैजियो तेजी, नारगियो डाढी, पनिया खाती, डालियो डाकोन अर सनियो वेवग, सग जणा मरवरा म जुटया । दाळ माठ रा टोकरा तथा टोलडा माटा गोवा च्छा दिया । खरच खाया अर पारटी रा नारा लगाया । लामा धोछा चाछा पैर र बाटा खातर टाबर लेवण हाछा सा रूप जीमा मे षढग्या । गावो गाव माटा नेतावा रै गुणा रा गीत गाया, अर पारटी रा काम बत्ताया । गरीबा न पाध वरसा वगी भळे गाडा लागग्या । पाछा इलाको पीदै बढग्यो । भलजी जीतग्यो, आग रो आखरी हवाको गुग्यो ।

बा लागी, बाप नै ठा लागी, रात कइ गई मानूम ही नी पडा । डाकरो वगो मो मुठ'र हा घा लियो । दूध सा बाछा रै साथ कुडतै अर सार्फ रा रग, अेक भक मिला लिया । तिनगै सारै गाव म खुसी रा बाळ खिरता पीठा । गोमा सूपना पाडया के—' भल्लू नै आज बघाई दी जप्पी अर इलाकै भर रा मौजीज आदमी खुवै रै गळ नोटा री माछा घालस । बाधणगै जीमण जनमै री वेछा मिनखा रा मिलणा मेछा है । बापी आभ्याग फळत खेत रा आणन जुमड आया । गढी गठढी हाथ वसू की

अर सैर री सुआरी रँ आटियँ जा जम्यो । “मेरो त्रेटो जीतग्या, बडाडारँ क टाल वाजँ ?” बाप री छाती छावड हुगी । टिंगस भुनारँ घर कानला मैलो नियो । आग बगन म हरचद दवारा लाग रया । आवना चावला हुवा अर हाथ मिलाइजा । “राम रामस्या ! राम रामस्या ! दिन घाडो है जीमा ।”

कोलोमीटर री कास लिया वगल पूच्यो अर जीपा री भीड न चीर र माय नै बढ्यो । बीजली री सळपळाट तथा छाटँ बाग रँ फूला री मै कार सू मलजी री मन बासा कूदना लाग्यो । पिछायन हो री, कुरस्या री कतार जळगै ताणी जोरी । रग विरगा फुवारा र फोटू मिनखा रँ मलै जोग फटना । काजू बिणकी रँ भेळ खुल्ला सीज्या घटिया चावल खोटिय रा पुडी पराठा, साग दाळ अर छोटियँ केळा री छनेछी पलटा मेजा माथँ सहरी मैमाना री दिखावटी मनवार कराव ही । खल भरी फूलेटी नामा मे सुगघ चढी अर मनजी रँ मूढे री सळा कढी । यकेडै भूख जुमाव म आवणै रँ चाव खोयोडै डाकरँ मूधारँ भट फळमे सू पग-पर म सरकाया । गबकैर, सामण मम (भल्ल री भू) छाटी आगी । घडीफट । भाल पूचिया र पिछाकड घीम लेयगी अर गाया री गहार मे सारनै बैठाण आई । डेण हक्को बक्को हुग्यो । बोली ‘सुणो ! आगण अबार पारदी री चीजा चालै, सार सू कोई कुत्ता बिरला कूद र नाखळ नी जा वडै । ग्यात राख जा, बायडा गाय टोघडा न ही चरा ना देई ।”

मलजी कथा “तिसो ह, पाणी तो पियू ?”

मम बानी “तिस भूख सू किता मिनख मरै ? घर भायनै मती आ बणे । मोटा माटा आफिमर अर नेता आ रघा है । तन देखर माजना जावला । पाणी रो ढाल भरघो पढ्यो है । कोई घपावू रो पीयो भलाइ । कुत्ता-बागना ही लिबँ चोसै, खुल्ले मूढे रो है ।

भूख भाजगी, नाद नाटगी । तापडाघिम सुण बोक्री, काना कीम बाप्ती रयी । रान भन्नावटै रो रूप ले लिया । वो कुत्ता काडै हा , पण बीर पट मे लडता बिलिया नै कण ही घेरया बतनाया नही । चटा वहू सग सारा , डोकरँ रो की ठा नी ? खेत बीज्यो सीच्यो, रास लाटण

ताणी , किसान लाय लूवा रा फाडा देग्या, खेती नै हरी नरी जाणी ।
 पण कारा खडका-भडका सुगर अक्क्या डक्क्यो , बलाण काइ नी आयो ।
 अडीक तो जा लेयर वडयो के “भल्ला मोटा माटा आफिसर माणसा
 कनै, मनै मिलावतो थको कौ सी—“ज म्हारा बापजा है, जका रै पुण्य
 पाण म्ह वग्सा सू जीततो थको माण माथाब सभेन विधान सभा रा
 मेम्बर बणू । पण भूख तिस रो ही नी पूछ्यो । जे आज इयै (भल) री मा
 हवै तो मनै जाणै ।” मसजो नै रात री रोडघट म भल्लै री मा, रै-रै र
 चेत आई । छेकड हिया पछाडी लेय र मचली माथै पडग्या । घावतो तो
 अक ठोकर क्याडी ताड बावतो ।

विचारारै व्हालै भुजाळो चिनक आयो । मम रा वडका तडका
 सुणीज्या । भुवा भल्लजी न रै रघी—“वूठियो तो कालै ही आ मरया ।
 म्है रात रोक दियो, नही तो मिनसा म मानखो विगाड देता । काई दख
 लेंवतो तो स्याम रा टक्का बट ज्यावता । इज्जत धूड मे मिल जाती ।
 भुवा तो म्है सोच राखी गुवाळा कयकर बार नै टिप्पा द आवती । पण
 मायनै जायान, कण ही पूछ्यो । थ मूठे चडा राग्या है, सुधिया ही
 गळगोना दय र लारल बारणै काढो नी ।

भल्लजी बात्यो—“ठा है, यो काम थू ही कर अर तुरता फुरत
 सगड । डागडी सू टटा भान जका भल्ले नी बागड । सूरजनराण नीकलै ज
 मू पली या काम करैर टटो मुका । लोग बघाई त्वेण भल्ले आवैला, जी,
 सारकै जावलो । बेगी तायर ओलाया । या सू काई छानो है । मनै बतावण
 री कद जरन पडै ? भूत'र ही पाछा नी भाकै जिसो ब गोबस्त कर
 नाख । बाभी रै डोल । बाप धाप नी है, पलातर रा पाप है ।’

डोकरै रा खापरा सा कानडा खटा हुग्या । रात भर जैर रा गुटका
 गिटत री जाट्या तणगी जाण्या— वटा'र वट्ट अक ही डान ? छाटिया ही
 लुग्या । अ सै म्हारै मू लाजा मर दीसै ? आ वटा बहुवा रै मुख, म्है
 घाणी विरिधा भूला सोया अर सागी मनस्यावा मारी । मुह मायलो काढ र
 दियो । हाथा पोरीस र पाळ्या । हुवाया घुवाया । गानी कथोळा तोड्या
 दुग जाण म्हारो जावन क्या ढळ्या ? रात दिन खोरमै मयाया । बाया
 सू वर पाळ्या अर इया न पडा लिखा र मुखी वणाण रा यो फतवा लिया ।

विपता में सीज'र राता आस्था काटी जद जाय र बेटा मल्या अर जावरू
वणी गाढी । भणाई नै सोनो चादी, धन पसु अर घर गुवाडी आड हाया
बच'र रोटी रा सासा मोल लिया । कनला गावा मार्य भागवानी रो
घाव हुती, जे नै नीचै नाख'र कगाली रो साख ओढी । इया रो मावटी
मरी जद मूह बूढो नी हो तीस मू पाछा ही तर्ण हो । मगळा भार्या पर-
सग्या दूज ब्याह वेगी जोर देर समझायो, पण अक नी मानी । लाग रो
मोटी मोटी बेटघा रै साथे हुवण वालै म्हारै मान्य नै आया गयो करवा ।
दोमडा बेटा र भा, आख मोच बठचो । काई ठा मौसी कैंडीक होसी ?
मल्लै रो मूढा लाल होय'र घर सू बढचो, भल्लै रो मेम भान र पाछी
पर म बढी । अठ पोरो भूखो मरतो ओठा गाव डूक्यो । पावलै रा चिनासा
मगडा रेल में चाब्या ।

जगती जुगली कर, याता वणाव—“डैण खोडिलो इकल खोरिया
अर अणखचूण है । करम ठोक भूजाकडो, बळोक्डो, अकलो नी राजी रै ।
बेटा मिनिस्टर घरा आधा-पीगै, कुत्ता खारै । आया गया री भीड लागी
रव । जोधपुर, वगलो, जैपर काठी, बेटा नेता, सुहणा पाता पानी,
बडू बै रा ठाठ लाग रघा है । पण यो तो ठासो-भूसा, ठियै सू ठरका'र
खारै जद ही रज पतीजै । बोदली जुवार, ठूडिया री कार टाकरा हाया
पो पीस'र घालियो बसाव ।”

द्विर्घ रो निस्तै है के—मैणतिमै जीण में ही सार है—‘गाडा-बळव
पगा है ठेसण वाली जगा लकड़चारी टाल चलावणी चाखी रैसी । आ
बहू-बेटा रै भरसै चिणा चाब'र कित्ता दिन काढस्या । करमहीण जालमी र
कपटी, अमीर वर्ण । फोकटिया नेता, कार सू नफरत करना भोटा न फाकी
गिटा'र पार का बोटा सू आपरा स्वारथ मारै । किता सवाकार कर ?
कूडी धोखेवाजी आज रा कागजी लाग घणी चलावै । काम सागी बाप रा
ही सार नहीं । हाथा काम करै अर मिनखापो पाळै जका साचा जीणा
जापो ।’

दूजै भीण ही चाधरी मल्लाराम रै मोणती वा पार गावा गाव भाव
पा लियो । गाडा अर टरक बूलळ्या आव जाव । ठाण्या सू दूकै सैरा नै

चाल लकड़ अर ठूढ़ ठरवै सू बिक । नफै पर नफो, लाखा लेखो, इयो
 टाल मल्लाराम नै लालकर'र आछ ठेकैदार रै रूप मे पाछो ओलखादो हा
 देखता देखता चौधरी रो वोपार ठेका देग्यो। मोक्छा भिनख इणा री टाल
 भायै हाल हो रया है । वडै ढग री कार करता चोखा गुजारा चलाव ।
 आज मल्लाराम री टाल किसान मजूरा री मोटी सस्था रा काज सारै ।
 पण भला सिंध री बेईमान नंतागिरी काग कूड रा कामण रच, साच सू
 तो, बाप नै ही ठारै नही ।

“बाप नै किसी टाल बाजै ? सुगावडी तो घणी विरिया भल्लै नै ही
 भूखा सुवाण दवै ।’ जनरा री चौकस चुपरै चालै ।

धरा पुराण

हॉकर काळजा काढे ही, लूरो लबडघबक ले राख्या । मिनखा नै खड-
खडो चढे हो, रीळ सू दात बाजा । कोई जळरी वाम ही वार वग हो ।
सहर री मडका भार्य छीड पडो । बो मैळा, रोजीनै तावड छिया अर
पाळें पून म मागी मडक माथ गोता खावतो फिरतो । मग्मी सरदी मे
छानी ताण्या, वरसा बीजळो सू मुख दुख माण्या बो पागल, लोमा री
हाट-दुकाना आग पगा म पडघो मिलतो हा । मूढ री मापी उडावतो
ध्याय-ध्याय बोलता, भूलो मरतो जद कट्टर धरमी लागे रै हाथी सू
नाख्योण भगडा मुजिया चाव खातो । पूनमजी पान बाळै री दुकान
वनली प्याऊ री खेळ सू धावा भर'र पाणी पीवतो । पण पुलिस रा
बादमी दखतो तो नीचा नै दूड घाल'र जोवता । एक दो साल सू सगळारै
सथो मैथा हुग्यो हो । मुमळमाना आग हाथ ही माड लेंवतो । केई चतर
मिया इपे नै देख र आपणे र लिलाडरी भोवा ऊची खेचता थका दीयामी
आण्या चौडी उधाड लेवता । अर दूमरा रै सामणै कवता वे—“उचारा
बावळा फकीर है ।”

जासूमी मरयादा सू गूने रो मैदरी मुरझायोडो हो । उवै रै हिडदे रा
जुलमी भाव च'रै माथ ढक्योडा रखता । बो पाळें मे भेलो हुवै हो, पण
मन म मोकळा मस्त हो । दस भगती खातर डिल सू जूझ हो । या, हर
ममाचार आपरै वतन पोचा रयो हो । जकी उवै रै हिडदे री बात नै काई
नी पिछाण सक्यो ।

बीकाणी वास, विसवासा रा बाहूळा, भरोसा रा भडार अर खातरी

रा अठ खुलना खाळा है। घरम भीरु देम, घरमात्मा लोग, अलहट नगर
 रा अलवेळा जाग, पागल नै जणो जणो पुढी अचार अर मीठा विचार
 वाटण न तागग्या। हिंदवाणी घरा नै हासो आवै, उवै रा पूत आपरै पगा
 माथ कुल्हाटी कमू बावै ? "अ लाग हजार बरसा मू अठैरैवै, पण इण
 घरती रा बफानार नो, अफगानीस्तान जिसै मुळका न आपरो देम कैव।
 बरमा भारत रो लूण पाणी खाया अर उव नै फोड पाटर आपरो जळम
 पाणो बणायो। मळे ही यो हि दगाणी भाक ता इया बगी आपरो दया
 भाव नो छोड। ऊपरया सूबरया न ऊचा ऊचा जादा बँठावै अर बिसलै
 घरम नै मारी छूट बक्स राखै ह। हिंदया नै नियोजन जवो मुसलमाना
 र परवार बिबाम रो आयोजन। आयाबरती आपरै मीळ सभाव सू अेक
 औरत बरतो। पण इया फागडदा फुड लोगा न दा चार बीबी सू ही नी
 रया है मरतो। कमू के अठै तो मविधान री घरम निरपन्नता खुली है, दया
 भाव रो दरजो उघाडो है। आप कमाया कामहा बिण नै दीर्ज दास वाली
 कैवत न घरती माता साचै साची है।

बागला देस म तोबा छाई, प्रधान म नी (माधी) री खुरमी मग्गै
 आयाटा न दया देवण बेगी धग्धराई। देम विदेमा हत्या री होळी रा
 ममाचार चाल्या, बेहया माहिया रै पापा नै जोय र जगत नै बतावण
 चाल्या। विमाण चढता बसन फौना न सावधान खण रा फरमायो अर
 सचिवा न सचेत करे र भो भगायो। नागरिका नै मनसो कैया बे - 'वै
 खुद खतरै री जिम्मेवारी न ममझै। म्है सग दमा न बागना दग म आइ
 आफन वाली बात जता र बेगी मुट जावूला। हमनो हवै तो जुड जाया,
 फौरन पौंच जासू मन धारै बीच पाया।'

अधिकरया रा हुकम हुया। मिल्टरी आकारा भिनखा रा रिका
 भागा। पुलस वाला रा गडका गाज्या अर दस नम्बरिया र माथै जुत
 वाज्या। धाण चौकी सू हमासदार चढया। उवा बिन्नेमी जासूम जाया अर
 भाथ गुगा वागळा हो पकडीज र रोया। आप आपरै मोहन्ला म यारी-
 न्यारी मडळया निगराणी बगी निक्ली। काट गट राड मायाळी दुकाना
 वन गोना खावणियो एक गलो पकडीज्या, जवो पाकीस्थानी खुफिया
 लाध्या। वैइ हिन्दू नाई उवैरी आगी हिमरा चढया अर पाच-मात दुकाना

सू बढ्या। बयो—“या तो बाबल्लो है। दो तीन बग्सा सू अठै पड्या फिरै है।” हवालदार तुरत परचा परखायो। बाबल्ल फकीर री कमर नीचे बस्याडा छोटो विदसी बायरलेस बडा दिखाया। बाबल्ले आपरो फाट-योडा हाफपट काटो बाधर पट हवालदार र हाथ सू बायरलेस सिमट री सडक पर नीचै नखा दियो। पण जामूसडा पुलिस री पकट सू बटनी सबया। सागीडो जरबाईज्यो अर नंग साची बाता ह्वारयो। इय बाबल्लिय बनायो के—“भैं पाब साल सू अठै जामूसी करू। दा साल नागोर म र बर आया हू।” पुलिस री इधकी रीस उमंग जमी अर गरज गफलन गमी। दूजोडो तस्कर नल्ले फमकर निसर गया। आग चोर अर लार सिफाया रा जोर नालमजामूसडा जूनार्डगढ री खाई मे सरधम ऊमरग्या। पुलिस री कटो पैरो लाग गयो, मिनसा रा मेळा छाग्यो। जेवटा ल्पाया अर मायनै बड र धारें काढ्या। नागरिक देखण खातर कीटीनाळ दाइ उल्लग्या अर मगरिय र एक रूप माय पळटया। दा सिफाया चोर र बडी घाली हर आपर थाण खानी लेय'र टुरया। केईमिनस पुलिस र लारें घाल्या। पण केई थोथो थूक उछाळता आर घरा हाल्या। घणखरा लोग ता उब री कूटा मारो देखणो घाबै हा, पण केई खबर नवीम छूसट, उब रै मूढै री बात सुण नै खातर लफा हा। छेरुडताणी थाण पर छीड नी रह सकी, पाछी भाजी नीड हुगी, सग लोग कुटनरी सू राजी हा।

बूटा री अंडी बाडी बाजी, धार्णदारजी आया, मासकारी गाळा काडी अर दो उल्लाथ खलवाया। जियो—“हरामजादा। तेरै पर मेरी पहल मे ही आल थी। शराब की दुकान पर दखा था, उसी दिन से तने पीछे मिपाइ लगा दिय थे। मगर दुकानदार के विश्वास दिलाने पर ही इतन दिन छाडे रखा। बल वह पागल फकीर पनडा गया, तब तेरा पीछा किया। भागन मे कौन छोडता था ?”

घार खडी लाग आपसरी मे खरचा छेनी—“या कवरजी र घरा राजीना रीटी खावण जावतो अर उवा री माटर म चढ र एक दो विरिया नाल्ल रै हवाई अड्डे ही जाय र आयो हो। पुलिस बापडी काई कर ? कारो दोम दवा। जापा ही तो इस्या विस्या भिनवा नै माय बढाय र राखा।” केया क्या—“कमाई रा अँ ही तो मारग है। तस्करो व्यापार

अठे इया सू ही चाले है" मूढे जितो बाता चाल पडी ।

राठोडी लेजे सू पल्लेदार घोती परया अेक सौखीन आदमी उवे घाण आयो अर घाणंदार रे खने बैठे र गुणगुणायो । यो मिनख चोर रे साथ मिल्याडा ओजू छुटावणो चावे हो । इये रे सिर मार्ये आटेदार केसरिया साफा अर डील पर पूरा काट हो, चोखो पुखता भाणम लसावे हो । इये ने देखे र पर्काडयोडे जासूम रोवण रा घणा भाव बणाया । पण पुलस घाणंदार रो भावुकता मे थोडा ही फरक नी पडयो । घट्टो उयळा दय कर आयोडे सिफारसी मिनख ने घाण सू चार किया । चार न पछे घिनकार पगे रे सी० आई० डी० डार म दिया ।

घर-पकड रो सा लगन चाली, खाज खपत सू नगर रा नैडा अळगा खूणो रया नी खासी । सोघा अर साधु नाथ जर नकटा, भोळा अर भगत आखा लोग लाम रो लपट भेळा आया । पकड ग चकामा चढया जद दुममी जासूसणा रा बाळग्या कडघा । बै अठे रो आपरा अधूरा काम पूरा करता यका भाज छुट्या । सग लुक छिप रे गैले साग्या । अेक जाते कान जासूस आपने वतन रो वाम, नाळ रे हवाई अडडे रो नकमा घणा वणो चायो । पण नकसो ऊनार वतावणे रा काम काळ न आपर कने चुलावणे रे बरोबर हो । सा उव साच्या—' काळ । काळ जेकर तो आसी ही अर छाडे नी, चोटा पकड रे साथ स जामी भी । मरणे सू पला मुलक रा या काम ता करणो ही चाय ' उवे सिफ्यः पडे जाय ने साधू र यत म नाळ रे नजीक अेक पावची रे घेरे नकली डेर रो घूणो घुवाया । गम पडी अर खबर भेजण खातर जुगन लडी । या साधू काले कोकड सू पड रे पाकीस्थान रे घाम जा बडला । खुता सू खरियत मागता खबर दणा मन्थर है । जातो करता छाती घर दिन रो दम्बोडी सारी मीमा स्थारा अर नाळ रे एराडराम ही हुम्यारी झोळी मू ट्रांसमीटर काट रे कवणी पट्टा । दुममी ज मूम, अडडे मू उत्तानर बठो निडर काम कर रया हा । उन दम बापड रो मस्तवमी इय अडड मू दा तीन त्रिमाण उडया । पाडा ऊचा घट रे चाल्या ही इत्त न ता उवा रा वायरलम अडड रे खन बट माड रूप जामूम रा बोल्याडा (पाकीस्थान जावता) समचार सुगायन लाग्या । उटता विमाणा म पाडां रे रोड्ट हावण साग्यो । जफमरा आपन रो

सनाह-मोचना करी अर दडाछट पायलेटा नै पाछा नाळ रै अड्डे विमाण घेर उतारण रा हीला मुळायो । पायलेटा घीराक सी वायाजी रा पालणा सा विमाण नीचै ल्यायर घाम्या । कमाटर सा'ब पैरैदार सिफाया रै हुवल-दारा न अड्ड रै इड्ड-गिड्ड दा-नोन मील खोज करणै रो खीफनाक करारा हुकम कियो । हुवलदार अड्डे री नाका वधी सू निकळ र जीपा सू दुसमणी अत्तो पत्तो जोवण नाग्या अर भाग जाग सू सीधा माधू खानी मुड्या । इया नै आवता देखैर ओकलो बालता माडा बोला रया । माळा न गळ म घाल, बाळा मे वभूत बिखेरया तूमडी चकी अर आपरा डड कमडल भोळी र नाळिया गाठ देंवतो चको मावटण लाग्यो ।

हुवलदार खनै जाय नै हाथ जाट्या अर मस्तर पाती दिखाल्लन री ओलियै सू अरज करी तथा अड्डे री नीमा सू दूर जावणा रा जादस माळया । औनिय फकीर चोपटो उठाया अर करामाती बाणी म उवामी खामत कवणा पळायो—

“अलख भजा, मो भगत है । भगन लोग साधु सत को तग नहीं किया करत बच्चा । हमारे क्या यहा क्या वहा ? हम सा रमत राम हैं । फक्कड हूँ । यहा नहीं आग सही । चले जायेंगे । सभी भूमि गापाल का ।” अफटी राडी रोवणा रोया, भोळा पकड्या अर दिखान सू काठो काठो हुयो । हुवलदार जासूसी मता खिडार खटका कियो, बाव जो रा हाथ बाध र जीप मे नाख लिया । अड्ड रै अफसरा बता सूती, मपीट उपाड्या, सिफाया सिट्टी भी कूट र घाण घाल दियो । नसो देय कर मगळी बाता हकराय नाखी ।

भेखधारी जासूस बताया के— “म्है घरमा सू भीखेया ठेकंदार रै घरा मावतो-ठठतो अर खावतो पीवतो जासूसी करतो रैयो हू । म्हारी उणा साथै साठ गाठ ही । म्है उवा नै कोटा रो व्योपार करावतो । अमल, माना बिदेसी ताडो अर घडो जिंसी चीजा बिना फून री छडी पाकीस्थान सू ठेकदार रै घरा आय पडो विकै है । मोणै मे साखा रा माल काकड सू पार करा ह्याया करतो । म्है पाकीस्थान रै मो० आई० डो० मे बनल रै पदमाथ हूँ । मोणो भी म्हारो मोखळा है । सरविस र साथै देस सेवा री हुनन पाळणै खातर ही अठै दर गुजर रया हू । रवा री ही हिंद हवै ?

कोई नी पिछाण पायो भारत म मुसलमान हुता ही हिन्दवा साथै खायो-
 पिया । बिना माग मेहरवानी पाई अर जद ही आज या कुटलविदया
 चोई आई है । इयै ओरियै रा सारा समचार म्हारै सू माखर पाक पोच्या
 है । मीण मास मू जावतो आवतो रयो हू । म्हारो कबीला बठै म्हारी
 तिणखा पर मौज करै । म्है अठै ठकैदार जिस्या तस्वरी करणिया नै सार्नै
 स वत्तो कमावतो रयो हू । 'कवत यकै नै बेहोसी आयगी । बूटारी ठोकरा
 अर डडार गद्योडा बडीडा म कापतो डील हीमलू हो रयो हा । नर्स म धुत
 कर परा र बेहया रै गणा म जयपुर री गाडी चढा दियो । पगो पग रैकाड
 रजिस्टड करवाय दियो ।

पछै पाछो पकड चालो । पूसस बाळा उवै ठेकैदार अर दूजा तस्वरी
 'बेपार करणिया रा खोजकड्या, लोट खोटर खाटा पर चालूया । हाला-
 यता मे दाट दिया, सगला रा माख सनूत नाट किया । ठेकेदार री
 जमानत नम्बै लाख री मागी, पचाम सू कम किण नै ही नी छोडयो ।
 जणो जणी चारा रै खख चढ्या अर आप-आपरै वेत्या री जमानत सू
 अंक रो अंक जणो बार कड्यो । लाडकोड सू छूट र घरां आया, घरती
 माता रै भलापणै अर आलापणै रा गुण गाया । नुगरा भारत री ऊपरी
 जै घोली जद सुणनिया लोगा उवा मतवाद री खोळी खाली । कयो—
 'साध नै आच कानी, ऊट चढ्यै नै कुत्तो भी खाव । आई अबलाई या ही
 तो आवै ।'

गावावू इलाज

बीकानेर म जैया मडाण मारवाड मऊ बैया ही बरतारै सू अजाण मालाणी रो इलाकी बाज । सोक कोरा घनवाळ, पसुपाल अर खोड रुखाळै, जिनडी रा मुख साधण बठै ओजू जाबर नी वापरघा है । ना, रेल अर ना ही नाटक चेटक तथा खेल-वेल है । सोकी खाली खपत करती थकी कुतरी जूण जीर्ण मर । सिक्का है न सफाखानो, 'याव है न डड जखानो । बरसे बिना वाही नी अर मादगी म दुवाई नी । मिखापै रो राम रुखाळा है । सामरा दाई रामरै डारै डोलै डबकै ।

रैवास ठाणी, ऊडो पाणी अर लाग भाळा भेड आळी लाणी है । मनस्या कर जको ही उठै जा कतर उतार ल्यावै । सागीडा सूघा है । ना, कर न दाई तैकागे, ज्या करं मे चकारो । अठै रा वासी आज र जुग सू पचासी साल सारै वर्ग । आयै गर्ग री पूजा करै, राज तेज सू डरै अर ठगा रा घर भरै । डाढी नै अँ राणो, वेद नै स्याणो तथा विरामण नै सरब मारयात राम रो रूप मानै । दूजो कीर्नै ही जार्ण न बूझै । सोचै न सूझै । या कैबत इया मार्थ पूरो दूकै के देखी अे सीधै री सोघ, सेणा एक न देणा होय ।' इया रो तो सावरो ही सामक है, भाळा रै भगवान अर आषा री माखी राम उडावै ।

छोटा गाव जर छोटा पाळा घर, पर की घर मे कोई नै सिर सिखा होम र ताब चडज्ज तथा बमार पडज्जै ता गरणियो मच उघाय । सग लाग भेळा होय र पूछ ताछ करण नै आव ।

अकर री बात गाव मे चौधरी रै डाबडै नै जोर रा ताब चढ्या ।

सनीपान बणभी अर बा बावळवडा करतो यको वलण न लाग्यो । वात, ताप री मुणता ही आखा गाव चीन नो हुग्यो । भाजा नासण करी अर दाना दाठीक मिनख रातू रात जाय'र दूर्जे गावडें मू भट स्याणो बुला ल्याया । स्याणें आय'र चट चौघरो रे वेटें री नवज टाही, जद जाय र वसती री कास की कम होई । दूध म जावण सा लाग्या, लोग जम्या अर सामो भाग्या । सगळा रें जी म थ्यावम आ गियो ।

पण स्याणा आयो जका ही स्याणा नही, जखाणा जाटू अर अकडू सस्ताद । नाड दख परा'र मूढा सुजा लिया । वाल्या न चाल्यो टूपीज'र करडा ठठ धणग्या । बणाही बडय सी देव, हाठा मे ही की नाव सा लेव अर धर आळा माथें भूज वळ । रोम म आठो टुरड हाय र फुफावें ।

काटक र कवै— म्हैं हमें के करू ? चारा हियो फूटेडा हा के ? मनै इत्तो मा'नो कांकर बलाया ? रोगी र तो घणा दिना मू सरद गरम भेल्लो हो रही है । इसो म्हैं किसा भगवान हू जका जरडकें'र दोना ने भेल्ली भान नावू । दब्योडो रागी क्या भाल्यो जाव ? पण मिनख री काम, जवाब देऊ ता दुरनाम । इय गोग रें हुई (सूई) री अलाज करणा पड ही । (समझ्याक नी सूई री) घणा सा हूई ल्यायो । आजकळें आ ही अलाज चालै ।'

गाव आळा भेल्ला भेल्ला हुया अर सग मुणता रिधा । ता ता व ग्रामो फोन री मूया ने जाणा अर ना हा काई गैस वस्ती या दूजी वस्ती कळ हाळी नै पिछाणा । बार तो आडणिया मेखलियो सीवण आळी मूया ही घरा लाचै ही । भाज्या अर आप आपरें घरा मू सोज र माकळी आछी माडी सूई ल्याया । गाव री लुगाया इत्त ने बाडया चढगी अर उपराडें कर सप सपाटिया करण नै लागमी ।

बूढी डोकरना डरी अर आपस री मे वाता मळ करी । बोनी— 'विरया । ओर विरतन चाल्यो है अ ? किमाक फँताल बापरया है । म्है तो राग ही भोकळा देल्या, स्याणा ही घणा ही आया । पण मूया स तो राग कँण ही आछो नी करयो । आज ताई तो कुनडियाळी उकाळी अर चिडी खेतियाळे काडें रा ही औखदहा । घासा घूटिगे जर फाडो फपटा ही करीजता । पीड पर चाचवा तथा साईं मूजन माथ सोगडी-टोइया गावना

क्यावना निरा, सूयाळो स्याणो तो आज ही सुण्यो इत न पछं दूजाडो दांते वूदळी बोनी—“मन तो हमें रामजी उठाय लेवें तो चोखा रवें । बोनी आग्या सू नूवा नूवा कौनव रासा ले-या नी जावें ।”

स्याण सूया जाई अर पाछी फरणाई । वाल्यो—“दीसै बोनी ? सग बागदा दीना । अटकळ हू ही बगोक, काई मिनख ही है ? राम निसर ग्यो धारो । रागी वरडावें, रोग वरडो वधता जावें अर ये काठा माठा आटा-दूटी सूया स्थार दिवाळा । आग कोइ हागरा धोडो ही है ? मिनख रा काम है नी ? मोटी अर गखरी हुई त्यावा । नकसाण नी पूच ज्यावें । बगो वाम पर घाला । का मन वजनाई दगळ हो ? मोटी अर हखरी हुई बिना वाम तारें जावें नही । नही है तो जायक नाट ज्यावें, जका म्हुं म्हारा गना लू । माई मिनख नै हाथ घालणो हसी-खेल धोडो ही है ?”

स्याण री लूठी दबडव सू घर बाळा मैग दहकीजग्या अर हाथा जाडी करण नै लगग्या । धोल्या—‘वार गाय रा जाया आधा चूसा हा, की कानी जाणा । म्हारी आग्या अधारो धारी चडूड च्यानणा है । माच पत्र्यै डावड री चित्या मे चूर होरघा । उपात्र नी मूकै । हाथा वामण छुटरघा है, पट म पोखाल चाल गया है । म्हारी भूरखता माथ धूळिया दवा अर सूई रा अलाज करणो हाथ म लेवो सा । म्हारै तो ५ राम वरानर हो । मालक हो सा । उवारस्यो तो उबरस्या । गुवाडी रा दीया बुझ । मानखा दरावो सा । डूबती नौका नै बेगी बराडै लगावा, पार चतारो ।”

दूजा मिनख भाज'र गया । गुदडा म डारा घालण आळी लामो माटी बंद सूया नळे त्याया अर सगळा स्याण न सूपी । स्याण आग्या चाडी अर सूया मामन आयोडी माय सू अेक ऊजळी दल'र काडी । लुगाया टाबरा स्यू घर खाली कराया अर बेमार रा कुदतियो फाड र अळगो बगाया । एक नूकियाळै मास मे लामो सगळा घमोड दी । अकूणी रै खने मू माड ताणी चोड दी । ताव म सूतो चौधरी रो बेटो चिमकयो, चिरळाया अर जार मू अरहायो । जद स्याणो बयो—‘वैस ।। वैस । हमें हाकेही सायरा आय जासी । सूई साजी जगा मागगी है ।” लोगा हाथ जोड लीना रोकना, रिपडा सू स्याण रा गूभा भर दीना ।

जेक कवत है— 'ढाणो म ढोलण ही भूवा । " दूध पीयें जर चूरमैं । जीम गाव म आइ हकीम अरठ फरावैं । छार रो हाथ पीडा सू सूज घर-घर रो लोक बूझैं तथा स्याणो गूज कव— "दखो, रोग हमें टावर र ढोल सू कटैं अर एक जगा आवैं हूड रैं को चर हू बारैं जाव । डेढ गे दिना म हफा (मफा) उठ जाही । रेंयो खैंया रधी रैं रुप हु वैं आही, टरण रो कोइ बात नहीं । मरण री पुळ टळ गई । अलाज आपरो अकरो असर उठावैं । रागी नै गाभा हू जरू दाबटे राखा, खोभा जावत रोग रा चालैना । "

पलाण पाछो माडयो घासियो घाल'र स्याणो पुगामो । पण चौधरी बाल्यो— ' बटे रैं सायरा नहीं आयो । रात दिन कूकैं बकरियो बोकैं जिया बिलारैं । हाथ हाथी रैं पग रैं लगभग होरिया है, काई दूजा हेदकी ल्यावो म्हारैं सू ना जायडै रा रोवणो सैंयो नी जाव । ' उवैं टम भाग सू कोई महरियो भिनख आय मिल्या । रोपणा सुण र उव रोपी नै खनलैं सहर रैं सफाखानैं वेगा ले जावण करडी मला दीनी । बळदा गाडी पर गून्डा निछाय र मुवाण्या जर महर खानी लेय र चाल्या । छारो हावतो जुवान हा, देखण हाळी ज्यान न चित्या लागगी । महर पोंण्या जर आव टळा । सफाखानैं म डाकघर अर कम्पाउन्डरा छोर न देख्यो । पण छारा आपरैं हाथ माथ दूजा हाथ नी लगावण दवैं ।

अळगैं सू ही गूघावैं, टीळी मारैं अर गाभा फाडैं ।

डाक्टर पूछ्यो— ' क्या हुआ ? यह हाथ कैसे पक रहा है ? इतना सोजन क्या आ गया है ?

छोरैं रा बाप बोल्यो— ' तप चढया अर बरडाबा लाग्यो । जद स्याणैं सूई दीनीमा । "

डाक्टर भट्टे पूछ्यो— "कीनसी सूई दी थी ? और कहा स खरीदी थी ।

चौधरी बाप कव— "लामी माटी खरी सूई ही मा । नवी नकोर गदारिया खन सू लियोडी ही । चाटना ही छोरा चिन्ळा उठया अर बेनी कर लिया । नहीं ता गूम छूम पड्यो ।

डाक्टर पूछ्या— ' पैनिसिलीन की थी क्या ?

बाप बत्ताय—'पैरयामोतन हाळी तरी हो ता । सोवेंदे होळी ही । मूंडा, रानी अर उपरान गोवण हाळी मोटी मूंड ही । मूंड तो भरभर बया अर सामा उभराड मूई मू हो मोया ता । मूई म कोई घाट ता हा । बापा ना पळई ही, म्यापे पुरी मोई म वजण दानी । बाप बत्ताय छागे बीच बिबाड ही बिनबिसावे अर निगा घात हाय ताका तया धूप 'विरा दबा राता है । डाक्टर बुनिया टावे, हाय सागता ही छारा रोध । नाट साहरो गाफरहा सफा -डर्ब ।

डाक्टर दग'र घर आळा माथ भूज बडके ।

बद—'अरे मूरया । यह मूई किनन गटा हो ?'

बाप बर—'स्याण दोनो सा । सखरी मूई लगाई । आप बस मनी करा बाई खाटो खोलो नी हा । बिसयान राखा सा, रधकी मूई ही । दम बामा म मू छटवी हो ।'

भागी भाल्या , डाक्टर रं जी सवा दुय मान्या । रागी रं मार्त्ता न गाड निवाळी अर ओजार मगाय र टावर र बुनिया म मू मूई पाछी, वाडा नाही राध रा नूनिया नीर हुवा । हाथ रं मलम लगाय र पाटी बाध दी । गाळी दय र वेड माथ मुवाण दिवा । बडे सनय प्यार सू थप पयाया अर तुरत आछा बर दवण रा धीरज बधामा । पछ घाण्णार समीनार न रिपाट करी अर आपरं असवनाळ बसाया । पचायन समिति रा प्रधान अर बी० डी० आ० नळे डाक्टर र चपरासी साथे आया । सग जाण सफालान घड्या । डाक्टर मूई री सारी बाप बत्तायता बया जड्या । रागी रं हाथ मू वाडेडा गुनमरा स्याय र दिवाळपा अर टाण्टर र घरम न पाळपा । बारनं गावा रं भित्तारी मूरखता साथे आयाश आला आदमी हस्मा-बस्या ।

घाण्णार चौधरी न बया—मूर् किमन नगायी थी ? नाम बत्ताओ । म उमका हयकटो लगावर बालान करुगा ।

चौधरी कयो—'स्याणा हामा । सखरी मूई लगायी । उध र हय-कटो काई घान री नगावो मा ? मायरा आयो नी जाया, उव री काई कसूर ? वा काई नगवान याता ही हो ? म्हारं ता वापडे गुण ही तरयो, गुण न आगण कया माना । डाक्टर काई करे? मुई ना काई? पलो चाडणी

दारी है नी ।”

थाणदार भल्ले पूछ्या — ‘वह तुम्हारे भाव का था क्या ? उस अनाडी वेश का नाम क्या था ?’

चौधरी कयो—“गाव रो ठा कानी सा ? गैल बगतो बटाऊ हा । म्हारें ता छारें रो अलाज मन सू करयो सा । वापडै आपरा काम छाडैर म्हारो पत्था करया । म्हा सू तो का कूडी वहीजै नी , सूई रो अलाज हर काइ थोडी ही कर सकै ?’

प्रधान बीच बिचाव करतो वाल्यो । “गाव रा आदमी डोफा हुब ? काई पूछो ? करसा रें काम नै अब्बों आप घणो वधावो मतीना, गरीब मारया जामी । म्हारें कणै सू ही माफी दिरावो थाणदार साब । म्है ग्राम सेवक न मेलैर हणै रो घडी मगरें ताई सारें इलाकें म डूडी पिटाय दसू । भल्ले कोइ इसो काम नी करसी-करासी ।

पुलिस थाणदार चौधरी नै कयो—“चौधरी जी आज तो मुक्त प्रधान जी की राय मान कर फकत आपको एक मौका दना पड रहा है , आइंदा ऐसा इलाज फिर कभी करवा लिया तो सदको जेल भिजवा दूंगा समझे ।”

चौधरी उबल्लो दियो—“क्याने सा ! इसी मती करया । सखरी सूई ही , आजकल तो सुणा, सूई रो ही अलाज चालै । स्याणा नै जल कुण कर ?’

